Vol.35, Issue 5 | Price Rs 35 | Annual Subscription Rs 420

@NewsRotary

/RotaryNewsIndia

रोटरी समाचार

November 2017

Rotary

पानी की शुद्धि

Rotary International Board of Directors 2017–18

Seated (from left): Treasurer Mikael Ahlberg, President-elect Barry Rassin, President Ian H S Riseley, Vice President Dean Rohrs, Executive Committee Chair Noel Trevaskis.
Standing (from left): Gérard Allonneau, John C Matthews, Peter Iblher, Brian A E Stoyel, James Ronald Ferrill, Robert C Knuepfer Jr., Basker Chockalingam, Paulo Augusto Zanardi, Eun-Soo Moon, Keiichi Ishiguro, Jorge Aufranc, Gregory F Yank, Corneliu Dinca, General Secretary John P Hewko, Tadami Saito.

विषयसूची

16 शुद्ध जल

स्कूल के बच्चों और जालना के लोग सुरक्षित पेयजल प्राप्त करते हैं, इसके लिए शुधु टेबलेट, को धन्यवाद।

24 नया खोजें... अपने क्रेज़ी आइडिया लेकर मेरे पास आयें

डॉ अग्रवाल ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स के चैयरमेन डॉ. अमर अग्रवाल जो नेत्र रोग सर्जरी में नवाचारों के ज़रिये जटिल आंख समस्याओं वाले रोगियों को राहत देता है।

68 कहानी चाऊ मुखौटे की

जीवंत, सजावटी मुखौटे के पीछे के लोगों के बारे में पढ़ें, जो पुरुलिया के चाउ नृत्य को एक संस्कृति हस्ताक्षर बना रहे हैं।

32 बेंगलुरु को हरा बनाना

रोटरी क्लब बंगलौर ऑर्चर्ड अपने पर्यावरणीय पहल के माध्यम से शहर को हरा बना रहे है।

34 भूले-बिसरों को इज़्ज़त देना

रोटरी क्लब दिल्ली साउथ के रोटरियनों और इनर व्हील के सदस्यों ने वृद्ध और निराधार लोगों के लिए राहत और सम्मान प्रदान किया।

51 एक बार फिर नाइजीरिया के लिए चिकित्सीय मिशन

मंडल 3020 ने नाइजीरिया में ओगून के बीमार रोगियों, विशेषकर बच्चों के लिए चिकित्सा सहायता प्रदान की।

60 रंगीन लिबास बनाम मद्रास

पता लगाएँ कि चेन्नई के कपड़े का नाम ब्लीडिंग मद्रास (पूर्व में चेन्नई को मद्रास कहा जाता था) कैसे पड़ा।

72 वाबी साबी

लेखक इस जापानी विचारधारा के माध्यम से समझाती हैं, तनाव मुक्थ जीवन के लिए कैसे अपनी खामियों को अपना कर शांति से जिया जा सकता है।

42 बूडापेस्ट की झल्की

बूडापेस्ट जैसे ऐतिहासिक शहर में सिर्फ एक दिन और दो रातें बिताना बहुत कम लगता है। इतना कुछ है वहाँ कि और ज़्यादा वक्त बिताने की लालसा तीव्र हो जाती है।

कवर पर : जलना के बच्चे अपनी प्यास बियरैक्टर लगाए गए हैंड पंप से पानी पीकर बुझाते है, जो रोटरी क्लब जलना मिडटाउन द्वारा उपहार में दिया गया हैं।

चित्र: रशीदा भगत

एक और उत्कृष्ट अंक

रोटेरियनों के लिए यह गर्व का विषय है कि भारत सरकार रोटरी (*पॉवर.. कुछ अच्छा करने के लिए* - अक्टूबर सम्पादकीय) की महत्ता को स्वीकार करती है। भारत के रोटेरियनों में कुछ अलग करने और वरिष्ठ रोटरी नेतृत्वकर्ताओं, जिन्होंने मिशन इन्द्रधनुष के लिए भारत सरकार के साथ हाथ मिलाने और खसरा एवं रूबेला जैसी रोके जा सकने योग्य बीमारियों पर काबू पाने का निश्चय किया है, की मदद करके नयी ऊँचाइयों को छूने की आग है। सरकारी अधिकारियों का यह विश्वास कि रोटेरियनों के पास शक्ति है और केवल रोटरी ही यह सब कर सकती है अपने आप में एक बहुत बड़ा पुरस्कार है। संपादक ने कुशलतापूर्वक संपन्न किया जब शक्ति का इस्तेमाल अच्छा कार्य के लिए किया जाता है, तो यह अन्य स्तर पर पहुँच जाती है।

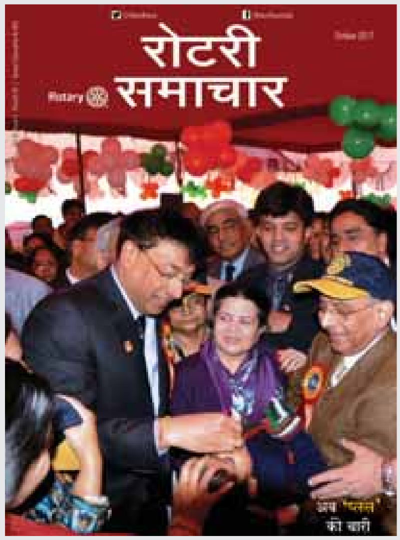

अक्टूबर अंक के लिए, इतना ज्ञानपूर्ण, विचार उत्तेजक, और इससे भी अधिक, जीवन के हर पहलुओं को कवर करने वाला एक आकर्षक अंक लाने के लिए मुझे *रोटरी समाचार* दल - जयश्री और वी मुत्तुकुमारन और अन्य, और खासतौर पर संपादक रशीदा भगत (जिन्होंने अंक में छह लेख लिखे है) की प्रशंसा करने के लिए शब्द नहीं मिल रहे है। सभी लेख पढ़ने योग्य है। *नीले पड़ते बच्चों के जीवन को मिलती सांसे* और *दान की शुरुआत वास्तव में घर से होती है* लेख विशेष रूप से उल्लेखनीय है। रोटेरियनों को सलाम... मिशन 'स्वयं से ऊपर सेवा' के साथ आगे बढ़े।

राज कुमार कपूर
रोटरी क्लब रूपनगर - मंडल 3080

मंडल 3000 प्रभाव डालता है

अक्टूबर अंक के अनेक पन्नों पर रोई मंडल 3000 को देखकर मैं ख़ुशी से भर गया। सबसे पहले अपने अच्छे मित्र पीपी आर श्रीनिवासन का पत्र, उसके बाद लेख *करूर एंजेल्स रोटरी का प्रचार करता है* और अंत में जयश्री द्वारा डीजी पी. गोपालकृष्णन का परिचय (*आपके गवर्नरों से मिलिए*), इस मंडल की उपस्थिति हर पन्ने पर महसूस हुई। *मंडल गतिविधियाँ* में भी, मंडल 3000 का प्रतिनिधित्व रोटरी क्लब डिंडीगुल ने किया। हमें अपने डीजी गोपालकृष्णन पर गर्व है।

नान नारायणन, मंडल 3000

बीज की गेंदे: इसे एक आन्दोलन बनाए

कार्तिक वी का लेख धरती को *हरीत करने के लिए बीज गेंद* बहुत ही शानदार है। शिमोगा के रोटरी क्लब ने एक गैर सरकारी संगठन उत्थिष्ठ भारत के साथ इस पहल को करने के लिए हाथ मिलाया है और लगभग 15,000 बीज गेंदों को शिमोगा के जंगलों के पास पहले ही बो दिया है।

चलिए सभी रोटरी क्लब बीज गेंदों की परियोजना का एक आन्दोलन चलाये और हमारे जंगलों को वनोन्मूलन से बचाने एवं भू-ताप को कम करने में सहयोग देने के लिए इसमें उसी जोश के साथ लगे रहे जैसे हमने पोलियो प्लस के मामले में किया था।

वीरन्ना ए हुग्गी
रोटरी क्लब शिमोगा - मंडल 3182

एक समयोचित सम्पादकीय

स्त्री के प्रति द्वेष भाव और पितृसत्ता से मुक्ति (सितंबर अंक) एक समयोचित अपील है और विचार करने योग्य है। महिलाओं के खिलाफ पुरुषों की अनैतिक टिप्पणियाँ उन महिलाओं के मजबूत बयान से मेल खाती है जो व्यक्तिगत स्वतंत्रता चाहती है, इस प्रकार बुनियादी वास्तविकता को दर्शाती है।

कराटे जैसे मार्शल आर्ट को लड़कियों को उनकी आत्म रक्षा के लिए सिखाना चाहिए। परन्तु महिलाओं के लिए पुरुषों के वर्चस्व से मुक्ति पाना अत्यंत कठिन कार्य होगा। फिर भी, हमें आशावान रहना चाहिए कि महिलाओं को आज़ादी और बराबरी मिले।

जी. वी. सयागावी
रोटरी क्लब दवानगेरे विद्यानगर - मंडल 3160

एक भावपूर्ण अलविदा

हर माह, आप हमारी प्रिय पत्रिका के माध्यम से, रोटरी जगत के अनेक प्रकार के वर्तमान मुद्दों को समायोजित करने में सफल होते है। सितंबर अंक में, सैम ओवरी, एक महान शख्सियत जो अब हमारे बीच नहीं रहे, की मुस्कराती हुई कवर फोटो ने पाठकों को द्रवित कर दिया।

एक अत्यंत प्रिय वरिष्ठ रोई नेतृत्वकर्ता, पीआरआईपी के आर रविन्द्रन का लेख *अलविदा सैम ओवरी,* हृदय-विदारक और विचारोत्तेजक है। पीआरआईपी राजेन्द्र के साबू की टिप्पणी कि मृत्यु में भी सैम रोटरी को शोभा बढ़ा गए, वास्तव में मर्मभेदी था।

कर्नल गोपीनाथन, रोटरी क्लब वाड़ाकंचेरी - मंडल 3201

लाइन तोड़ना

हालाँकि मैं मदुरई नेक्स्टजन रोटरी क्लब का मात्र एक

सामान्य सदस्य हूँ, फिर भी मैं अच्छी तरह से *रोटरी समाचार* पढ़ता हूँ क्योंकि यह रोटरी और उसकी गतिविधियों के अलावा भी विषयों की विस्तृत श्रृंखला को कवर करती है। मेरे सबसे पसंदीदा भाग में से एक है पुस्तक समीक्षा क्योंकि इसके पन्नों में समीक्षित अनेक किताबों को मैंने खरीदा है। *दी गुड इंडियन्स गाइड टू क्यू जम्पिंग* किताब की एच. एस. खुराना द्वारा की गई समीक्षा विचार करने योग्य है क्योंकि यह सामान्य तौर पर अधिकतर भारतीय व्यक्तियों द्वारा आदतन किया जाता है। मैं काफी समय पहले अमेरीका में लाइन तोड़ने का अपना अनुभव साझा करना चाहूँगा।

डिज्नी वर्ल्ड के पहली बार भ्रमण पर, मैंने अपने दल के सदस्यों को खो दिया और उन्हें बहुत दूर एक सर्पीली कतार में पाया। अवरोधक केवल रस्सी के बने हुए थे, जिन्हें अगले खण्ड तक पहुँचने के लिए आसानी से हटाया जा सकता था। कतार को सही से चलाने के लिए वहाँ पर कोई सुरक्षा कर्मी भी नहीं था। मेरे टूर गाइड ने हिंदी में चिल्लाया कि रस्सी के अवरोधक को पार करो और आगे बढ़ो। यद्यपि मैं शर्मिंदा था, फिर भी मैं अपने दल द्वारा पीछे छोड़ दिया जाना नहीं चाहता था और इसलिए मुझे कतार को तोड़ना पड़ा। लेकिन किसी ने मुझसे सवाल नहीं किया।

दूसरी घटना न्यू यॉर्क के जे. एफ. के. हवाई अड्डे की थी। चेक-इन करने के बाद, मुझे पता चला कि दरवाजा बंद होने में केवल 20 मिनट बचे है। लंबी कतार को देखने के बाद, मैं गार्ड के पास गया और अपना बोर्डिंग पास दिखाया, और मुझे सुरक्षित जांच क्षेत्र में जाने दिया गया ताकि मैं समय पर अपनी फ्लाइट के लिए पहुँच सकूं। दोनों ही मामलों में मुझे प्राथमिकता दिए जाने पर किसी भी प्रकार की कोई शिकायत या बड़बड़ाहट नहीं हुई। मुझे पूरा विश्वास है कि यदि मैं भारत में होता तो इस पर बहुत बड़ा हंगामा हो गया होता। शायद यही कारण है कि हम तिरुपति जैसी जगहों पर भी कतार प्रबंधन करने में उस्ताद है।

एसपी ए गणेश

रोटरी क्लब मदुरई नेक्स्टजेन - मंडल 3000

अपने विचार संपादक को भेजें:
rotarynews@rosaonline.org;
rushbhagat@gmail.com **पर ई-मेल करें।**

रोट्रैक्ट समाचार ऑनलाइन

रोटरी समाचार जनवरी 2018 से *रोट्रैक्ट समाचार* का ऑनलाइन संस्करण लाने जा रही है।

रोटरी क्लब जो अपने रोट्रैक्ट क्लबों की गतिविधियों को प्रकाशित करवाना चाहते हैं, कृपया अपने परियोजनाओं की रिपोर्ट के साथ सुस्पष्ट तस्वीर भेजें।

कृपया मूल आकार में हाई रेजलूशन की तस्वीरें .क्षसि या .िंळषष फॉर्मेट में भेजें। वर्ल्ड फाइल में कोई भी अंत स्थापित किया हुआ तस्वीर नहीं भेजें। रिबन काटने, दीप प्रज्वलित करने, तस्वीर खिंचवाते हुए, आदि की तस्वीर नहीं भेजें।

रोट्रैक्ट की परियोजनाएँ निम्नलिखित में से किसी भी फोकस क्षेत्रों - साक्षरता / व्यवसायिक कौशल विकास, स्वास्थ्य, बीमारी से बचाव, माता / शिशु के कल्याण और जल तथा स्वच्छता से हो सकती हैं।

रोट्रैक्ट क्लब का नाम, मंडल संख्या, परियोजना का नेतृत्व करने वाले व्यक्ति का संपर्क विवरण, परियोजना को निष्पादित करने का स्थान, परियोजना का मूल्य तथा इससे लाभान्वित होने वाले लोगों की संख्या का उल्लेख करें।

- संपादक

Governors Council

RI Dist 2981	DG	P S Ramesh Babu
RI Dist 2982	DG	Dharmesh R Patel
RI Dist 3000	DG	P Gopalakrishnan
RI Dist 3011	DG	Ravi Choudhary
RI Dist 3012	DG	Sattish Singhal
RI Dist 3020	DG	G V Rama Rao
RI Dist 3030	DG	Dr K Sunder Rajan
RI Dist 3040	DG	Dr Zamin Hussain
RI Dist 3053	DG	Rajkumar Bhutoria
RI Dist 3054	DG	Maullin Manubhai Patel
RI Dist 3060	DG	Ruchir Anirudh Jani
RI Dist 3070	DG	Parvinder Jit Singh
RI Dist 3080	DG	T K Ruby
RI Dist 3090	DG	Bagh Singh Pannu
RI Dist 3110	DG	Vinay Kumar Asthana
RI Dist 3120	DG	Ranjeet Singh
RI Dist 3131	DG	Abhay Gadgil
RI Dist 3132	DG	Vyankatesh Vithal Channa
RI Dist 3141	DG	Prafull J Sharma
RI Dist 3142	DG	B M Sivarraj
RI Dist 3150	DG	J Abraham
RI Dist 3160	DG	Madhu Prasad Kuruvadi
RI Dist 3170	DG	Anand G Kulkarni
RI Dist 3181	DG	M M Chengappa
RI Dist 3182	DG	G N Prakash
RI Dist 3190	DG	Asha Prasanna Kumar
RI Dist 3201	DG	Vinod Krishnan Kutty
RI Dist 3202	DG	Sivashankaran P M
RI Dist 3211	DG	Suresh Mathew
RI Dist 3212	DG	Chinnadurai Abdullah
RI Dist 3231	DG	Jawarilal Jain K
RI Dist 3232	DG	R Srinivasan
RI Dist 3240	DG	Sunil Saraf
RI Dist 3250	DG	Vivek Kumar
RI Dist 3261	DG	Harjit Singh Hura
RI Dist 3262	DG	Ajay Agarwal
RI Dist 3291	DG	Brojo Gopal Kundu

Board of Permanent Trustees & Executive Committee

PRIP	Rajendra K Saboo	RI Dist 3080
PRIP	Kalyan Banerjee	RI Dist 3060
PRID	Sudarshan Agarwal	RI Dist 3011
PRID	Panduranga Setty	RI Dist 3190
PRID	Sushil Gupta	RI Dist 3011
PRID	Ashok Mahajan	RI Dist 3141
PRID	Yash Pal Das	RI Dist 3080
PRID	Shekhar Mehta	RI Dist 3291
PRID	P T Prabhakhar	RI Dist 3232
PRID	Dr Manoj D Desai	RI Dist 3060
RID	C Basker	RI Dist 3000

Executive Committee Members (2017–18)

DG B M Sivarraj — RI Dist 3142
Chair – Governors Council

DG R Srinivasan — RI Dist 3232
Secretary – Governors Council

DG Abhay Gadgil — RI Dist 3131
Secretary – Executive Committee

DG Vivek Kumar — RI Dist 3250
Treasurer – Executive Committee

DG P Gopalakrishnan — RI Dist 3000
Member – Advisory Committee

ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

Editor
Rasheeda Bhagat

Senior Assistant Editor
Jaishree Padmanabhan

Send all correspondence and subscriptions to

ROTARY NEWS TRUST
3rd Floor, Dugar Towers, 34 Marshalls Road
Egmore, Chennai 600 008, India.
Phone : 044 42145666
e-mail : rotarynews@rosaonline.org
Website : www.rotarynewsonline.org

Printed by Mukesh Arneja at Thomson Press (India) Ltd, Plot A-9, Industrial Complex, Maraimalai Nagar 603209, India and published by Mukesh Arneja on behalf of Rotary News Trust from Dugar Towers, 3rd Flr, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008. Editor: Rasheeda Bhagat.

The views expressed by contributors are not necessarily those of the Editor or Trustees of Rotary News Trust (RNT) or Rotary International (RI). No liability can be accepted for any loss arising from editorial or advertisement content. Contributions – original content – is welcome but the Editor reserves the right to edit for clarity or length. Content can be reproduced, but with permission from RNT.

संपादक
का संदेश

एक विशेष, अनुकरणीय और विस्तारणीय प्रॉजेक्ट

कहते हैं कि ज़िन्दगी की कुछ बेहद खूबसूरत चीज़ें छोटे पुलिंदों में आती हैं। लेकिन छोटी बातें सिर्फ खूबसूरती से ताल्लुक नहीं रखतीं, उनका महत्व कहीं ज़्यादा है। उनमें अपनी ही छवि या प्रतिरूप से कई गुना ज़्यादा खिलने या बढ़ने की संभावना होती है। रोटरी इंटरनैशनल का किसी भी परियोजना को लंबे अरसे तक असरकारी रखने का मंत्र यह रहा है कि ऐसे छोटे और सादे अनुकरणीय विषयों को चुना जाए जो आगे विस्तार की। इसलिए जब रोटरी क्लब जालना मिडटाउन ने *रोटरी समाचार* को अपने एक प्रॉजेक्ट पर एक छोटा सा लेख कुछ सादी सी तस्वीरों के साथ भेजा जिसमें क्लब ने एक रुपए की कीमत पर एक लाख शुद्ध गोलियाँ (टैबलेट) तीन हज़ार परिवारों को मुफ्त बाँटी थीं, तो कौतूहल जागना स्वाभाविक ही था। उत्पादक द्वारा ज़बर्दस्त छूट दिये जाने पर ये गोलियाँ महाराष्ट्र के जालना जिले और उसके पड़ोस के गाँवों में बाँटी गई थीं। 15 से 20 लीटर के बर्तन में डाले जाने पर यह ज़रा सी गोली आधे घंटे से कम समय में उस पानी को शुद्ध कर देती है। वैसे यह बहुत छोटा सा प्रॉजेक्ट लगता है। देखा जाए तो एक लाख गोलियों के लिए क्लब ने रु एक लाख ही तो खर्च किये थे! लेकिन मैंने सुना है कि जालना भारत में बीजों की राजधानी कहलाया जाता है। तो ज़रा सोचिये कि भारत की पेय जल की प्रगाढ़ समस्या के निवारण के लिए इस विचार का एक बीज क्या ज़बर्दस्त काम करने का माद्दा रखता है, तब जब देश में करोड़ों लोगों को साफ पानी पीना नसीब नहीं होता। 65 सदस्यों के इस क्लब में जहाँ सभी की उम्र 40 से कम है, युवा प्रेसिडेंट अनूप कावरा ने अगले दो वर्षों तक निर्माता से रोटेरियनों को एक रुपए की कीमत पर एक गोली मुहैया कराने की प्रतिबद्धता ले ली है। यह एक बड़ी उपलब्धि है। उत्पादक द्वारा भारतीय सेना को भी इसी गोली की आपूर्ति की जाती है और चेन्नई तथा गुजरात में बाढ़ के दौरान भी यही बाँटी गई थी।

जब उनकी पत्रिका की संपादिका ने जालना की यात्रा करके इस प्रॉजेक्ट की रिपोर्टिंग करने की इच्छा ज़ाहिर की तो क्लब के सदस्य आश्चर्यचकित होने के साथ-साथ आनंदित भी थे। मैंने यह यात्रा इसलिए भी की कि युवाओं के इस क्लब का एक जल शुद्धिकरण (वॉटर प्योरिफ़िकेशन) का एक और प्रभावशाली प्रॉजेक्ट आनेवाला था - प्रॉजेक्ट तरल। इसके तहत हाल ही में नैशनल इन्नोवेशन अवॉर्ड 2017 से सम्मानित बायोरिएक्टर को किसी भी हैंड पंप पर फिट कर दिया जाता है। यह वैक्यूम, थर्मो-डाइनैमिक्स, दबाव और तापमान की सहायता से सूक्ष्म जीवों को मारकर पानी को शुद्ध करता है। यह एक फिट करके भूल जाओ वाला समाधान है। उपकरण और श्रम शुल्क के साथ इसकी कीमत रु 12,000 से रु 15,000 के बीच आती है और इतनी लागत में हैंड पंप से साफ और पेय जल निकलता है।

एक प्राइमरी स्कूल में तरल के उद्घाटन समारोह में वरिष्ठ रोटेरियन और जालना के तीन और क्लब के सदस्यों की मौजूदगी देखकर बहुत अच्छा लगा। राजनीति, अस्वस्थ प्रतियोगिता या प्रतिद्वंद्विता का नामोनिशान नहीं था। असर यह था कि ज़िला परिषद के स्कूल की हैडमिस्ट्रेस किरण औथी मुस्कुराते हुए कह रही थीं कि रोटेरियनों ने मानो उनके स्कूल को गोद ही ले लिया था। हालांकि वह दो कमरों की इमारत का, बिना किसी बाहरी दीवार का एक छोटा सा स्कूल था जहाँ बच्चे फर्श पर बैठते थे लेकिन था बिल्कुल साफ सुथरा, और इसका श्रेय जालना के रोटेरियनों को जाता है। स्कूल में सिंटेक्स की एक पानी की टंकी है और उसके पाठ्यक्रम का 80 प्रतिशत हिस्सा ई-लर्निंग के माध्यम में है। रोटेरियनों ने सुविधाहीन बच्चों की स्वास्थ्य संबंधी ज़रूरतों की भी ज़िम्मेदारी ले ली है।

यह जानने के लिए कि इस मॉनसून में स्कूलों में शुद्ध टैबलेट की बदौलत पानी से फैलनेवाली डायरिया, पीलिया, टायफॉएड जैसी बीमारियों की रोक होने से बच्चों की अनुपस्थिति की दर कैसे कम हुई, कवर स्टोरी पढ़ें। हमारे बच्चों की स्वास्थ्य और शिक्षा संबंधी ज़रूरतों की ज़िम्मेदारी लेकर भारत के रोटरी क्लब देश के विकास और प्रगति में अमूल्य योगदान कर रहे हैं। आखिर आप सभी रोटेरियनों ने भारत से पोलियो को नेस्तनाबूद करने के लिए भी तो अथक प्रयास किये थे, किये थे न?

रशीदा भगत

हमारी सेवा प्रयासों की नींव

प्रिय साथी रोटेरियनों,

कई मायनों में, रोटरी संस्थान की हमारे क्लबों में एक अदृश्य उपस्थिति है। साप्ताहिक स्तर पर, हमारे क्लबों एवं हमारे मंडलों में हमारे द्वारा किये जाने वाले अधिकतर काम हम बिना संस्थान की सक्रीय सहभागिता के करते है। लेकिन हमारा संस्थान हमारे क्लबों में अदृश्य है ठीक उसी प्रकार जैसे एक ईमारत की नीव अदृश्य होती है जब आप उसके अंदर होते है: केवल इसलिए कि आप उसे नहीं देखते इसका मतलब यह नहीं कि वह आपको सहारा नहीं दे रहा है।

वह संस्थान जिसने रोटरी को पोलियो से मुकाबला करने के काबिल बनाया, कई मायनों में, वहीं नीव है जिस पर हमारी रोटरी सेवा टिकी हुई है। 100 वर्षों से, जब यह 26.50 डॉलर के पहले दान के साथ अस्तित्व में आया तब से, संस्थान ने हमारी सेवा को समर्थन एवं मजबूती प्रदान की है, हमारी आकांक्षाओं को सक्षम बनाया है, और हमें वह संस्थान बनने दिया जो हम है। संस्थान के कारण, रोटेरियन जानते है कि यदि हमारे पास महत्वाकांक्षा हो और हम कार्य करें, तो बहुत कम चीज़ें हमारी पहुँच से परे होंगी।

यह एक अतुलनीय असरदार मॉडल है जो हमारे पास यहाँ रोटरी में है, एक ऐसा जिसकी बराबरी कोई अन्य संगठन नहीं कर सकता। हम पूर्णतः स्थानीय एवं पूर्णतः वैश्विक है: 35,000 से अधिक क्लबों में, लगभग दुनिया के हर देश में, हमारे पास स्थानीय कौशल, संबंध, और ज्ञान है। हमारे पास पारदर्शिता, प्रभावकारिता, और अच्छी व्यावसायिक कार्यप्रणाली की एक लायक प्रतिष्ठा है, और क्योंकि हम अत्यधिक कुशल पेशेवर होने के साथ-साथ स्वयंसेवक भी है, हम उस स्तर की कार्यक्षमता को हासिल करते है जिसे बहुत ही कम अन्य संगठन हासिल करते है।

सरल शब्दों में कहे तो, रोटरी संस्थान को दिया गया एक डॉलर अधिकतर दान-पुण्य में दिए गए एक डॉलर से अधिक लाभकारी होता है। यदि आप संसार में अच्छा करने के लिए एक डॉलर खर्च करना चाहते है, तो आप संस्थान के साथ उसे खर्च करने से बेहतर नहीं कर सकते। मैं यह केवल अभिमान के साथ नहीं कह रहा हूँ; यह वास्तव में सच है और स्वतंत्र संगठनों द्वारा दी गई श्रेणियों से स्पष्ट है।

संस्थान के शताब्दी वर्ष में, रोटेरियनों ने 300 मिलियन डॉलर इकठ्ठा करने के हमारे लक्ष्य को पार किया। यदि आप उस लक्ष्य का हिस्सा होते, तो आप किसी अद्भुत चीज़ का हिस्सा होते। दुनिया में किसी जगह, किसी स्थान पर जहाँ आप शायद कभी नहीं गए, लोग जिनसे आप शायद कभी नहीं मिलेंगे आपके कारण बेहतर जीवन जियेंगे। आख़िरकार, यह हमारी संस्थान है जो हमें हमारे विश्वास को पूरा करने देता है: कि हम एक बदलाव ला सकते है, कि ऐसा करने के लिए हम बाध्य है, और कि साथ काम करके, उतनी अच्छाई से एवं कुशलतापूर्वक जितना हम कर सकते है, ही हम वास्तविक एवं दीर्घकालिक बदलाव को जन्म दे सकते है।

इयन एच.एस. राय्सली
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल, 2017-18

रो इं निदेशक
का संदेश

रोटरी की तिकड़ी

प्रिय रोटेरियनों,

मैं आपके साथ तीन रोटेरियनों के बारे में बाते साझा करता हूँ जिन्होंने मुझे रोटेरियन बनने के लिए प्रेरित कियाख

पहले रोटरी के संस्थापक पॉल हैरिस हैख मैं उनके इन शब्दों से प्रेरित हुआ था: रोटरी हमारे लिए चाहे जो महत्व रखती हो, दुनिया इसे इसके द्वारा हासिल किये गए परिणामों से जानेगी ख रोटरी उनकी परिकल्पना से शुरू हुई और उन्होंने 112 वर्ष पूर्व एक अनौपचारिक बैठक स्थल के रूप में दुनिया का पहला सेवा संगठन, शिकागो का रोटरी क्लब, बनाया जहाँ विविध पृष्ठभूमि के पेशेवर लोग स्वतंत्र रूप से अपने विचार साझा कर सके और अर्थपूर्ण एवं आजीवन दोस्ती बना सकेख पॉल हैरिस के शब्दों को सच करते हुए रोटेरियन सफलता प्राप्त करने वाले हैख

दूसरे रोटेरियन रोटरी फाउंडेशन के पिता आर्च सी. क्लम्फ है ख दुनिया में अच्छा करने के उद्देश्य से उन्होंने 26.5 डॉलर का योगदान देकर अक्षय निधि की स्थापना की और रोटेरियनों के मध्य दान देने का विचार शुरू कियाख आज टीआरएफ दुनिया के सबसे बड़े परोपकारी ट्रस्टों में से एक हैख देना रोटेरियनों की आदत बन गया है... भारत टीआरएफ को दान देने वाला दूसरा सबसे बड़ा दानदाता हैख रोटरी काम करती है इसलिए दान काम करते हैख हमें गर्व है कि 91 प्रतिशत दान दुनिया भर में संवहनीय मानव सेवाओं की सहायता के लिए जाता हैख हमने पोलियो के सभी मामलों में से 99.9 प्रतिशत मामलें मिटा दिए हैख प्रत्येक छोटा दान काम आता हैख 60 सेंट के छोटे से दान से भी एक बच्चे को पोलियो से बचाया जा सकता हैख हमारे साझेदार आपके दान को और भी आगे ले जाते हैख पोलियो उन्मूलन के लिए रोटरी के प्रत्येक 1 डॉलर के लिए, बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन 2 डॉलर देता हैख आपका योगदान भविष्य के शांति निर्माताओं को प्रशिक्षित करता है, स्वच्छ जल में सहायक होता है, और स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को मजबूत बनाता हैख चलिए हम टीआरएफ को और अधिक दें और इसका एक हिस्सा बनेंख यह बहुत बड़ा मौका है यह दिखाने का कि *रोटरी: परिवर्तन ला रही है*

तीसरे रोटेरियन हर्बर्ट जे. टेलर हैख उन्होंने हमें जीने के नैतिक तरीके बताए और चार-मार्ग टेस्ट से अवगत करायाख उन्होंने चार-मार्ग टेस्ट को अपने स्वयं के व्यापार में लागू करके, और उसे घाटा देने वाले से फायदा देने वाला बनाकर दुनिया के समक्ष इसकी शक्ति को साबित कियाख चार-मार्ग टेस्ट - क्या यह सच है? क्या यह सभी परेशानियों के लिए उपयुक्त है? क्या यह ख्याति और अच्छी मित्रता बनाता है? और क्या यह सभी परेशानियों में लाभकारी होगा? - जीवन के हर क्षेत्र में नैतिक मानकों को कायम रखने के लिए वास्तविक *तारक मंत्र* हैख यह रोटरी का अन्तर्निहित प्रबंधक पद, समय की जरुरत है, जिससे प्रत्येक रोटेरियन को सुसज्जित रहना होता हैख रोटरी के सेवा और साहचर्य के आदर्श चार-मार्ग टेस्ट पर आधारित है। यह जान-पहचान को सच्ची दोस्ती में बदल देता है और पोलियोप्लस जैसी परियोजनाओं की विशाल सफलता का यही कारण है।

हालाँकि हम अपनी पिछली सफलताओं पर आश्रित नहीं रह सकते। हमें और अच्छा करने का प्रयास करना होगा। लगभग 800 मिलियन लोग रु. 125 प्रतिदिन से भी कम में जीवन यापन करते है। ऐसी कई परियोजनाएं है जिन्हें हम कम सुविधा प्राप्त लोगों के जीवन में सुख और सकारात्मक बदलाव लाने के लिए कर सकते है। रोटेरियन जोशीले लोग है; गरीबी कम करने हेतु संवहनीय समाधान देने के लिए उनके पास ऊर्जा और अभिनव विचार है। पिछले वर्ष रोटरी फाउंडेशन ने स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को विकसित करने और गरीबी कम करने के लिए 9.2 मिलियन डॉलर खर्च किए। एक व्यक्ति को स्वच्छ पानी प्रदान करने के लिए 24 डॉलर लगते है। रोटरी के कारण, 23 मिलियन लोगों के पास अब स्वच्छ पानी है और 21 मिलियन लोगो की अब स्वच्छता एवं सफाई तक पहुँच है। रोटरी संस्थान को धन्यवाद। रोटरी आशा करती है कि 2030 तक हर एक को साफ पानी, शौचालय और स्वच्छता मिल सकें।

चलिए रोटरी संस्थान में और अधिक योगदान दें और दुनिया को दिखा दें कि *रोटरी: परिवर्तन ला रही है।*

C. Bh

सी भास्कर

निदेशक, रोटरी इंटरनेशनल

फाउंडेशन न्यासी

अध्यक्ष का संदेश

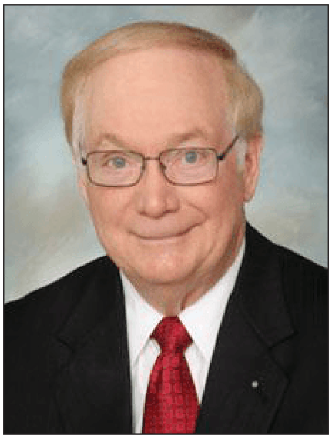

देने के लिए धन्यवाद

कुछ महीने पहले, मैंने एक सवाल उठाया, वैसे भी, ट्रस्टी करते क्या है? मैंने यह दर्शाया कि हमारी अहम् भूमिकाओं में एक है सुनना। इस महीने, रोटरी संस्थान के माह में, मैं प्रसन्नतापूर्वक सूचित करता हूँ कि आप बिना कहे बहुत सी जरूरी बातें कहते है - और आपको सुना जाता है।

स्वर्गीय रोई अध्यक्ष-निर्वाचित सैम एफ. ओवरी ने कहा था कि उन्होंने रोटेरियनों में ''परिवर्तन लाने के लिए एक अतुलनीय जोश देखा'' और वह उस जोश एवं गर्व को उपयोग में लाना चाहते थे ताकि प्रत्येक परियोजना ''शांति एवं समृद्धि का इंजन बन जाए।''

आपके पत्रों, रिपोर्टों, एवं अद्भुत कहानियों के माध्यम से, हम जानते है कि आप सैम की ऐसी दुनिया की परिकल्पना को साझा करते है जिसमें रोटेरियन दुनिया भर में, हमारे समुदायों में, और अपने आप में संवहनीय बदलाव को लाने के लिए एकत्रित हो और कार्यवाही करें। हमने पिछले वर्ष शुरू की गयी वैश्विक एवं मंडल अनुदानों की संख्या में वृद्धि देखी और रोटरी शांति सदस्यता आवेदन एक अन्य रिकॉर्ड उच्च स्तर पर पहुंचे। समग्र दान के कुल में भी हमनें बढ़त देखी, जो ''कार्यवाही करने वालों'' के रूप में हमारे द्वारा किये जाने वाले कार्यों के लिए आपके जूनून को प्रकट करता है। रोटरी के क्लबों और मंडल अध्यक्षों को हमारे सभी प्रयासों में निरंतरता प्रदान करने के लिए विशेष धन्यवाद।

एसोसिएशन ऑफ़ फण्डरेसिंग प्रोफेशनल्स के उसके अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में हमें दुनिया के उत्कृष्ट संस्थान के रूप में सम्मानित किया जाना दावे के साथ यह बताता है कि आप जिस काम में मदद कर रहे है वह संभव होता है। -ए एफ पी की निर्णायक समिति ने उल्लेख किया है कि पोलियो के उन्मूलन के लिए रोटरी का व्यापक अभियान संस्थान के चुनाव में अहम् कारक रहा।

हितकारियों, बिक्वेस्ट सोसाइटी सदस्यों, और सभी स्तर के बड़े दानकर्ताओं, आपको धन्यवाद! आप भविष्य के लिए वित्तीय स्थिरता का निर्माण कर रहे है। संस्थान में आपका विश्वास एवं इसके निरंतर उद्विकासी कार्यक्रमों के कारण हमारा दान कोष लगातार बढ़ता रहता है। ''हम हमारे टीआरएफ दान कोष निर्माण: 2025 तक 2025 पहल'' की प्रक्रिया में है, जिसके अंतर्गत वर्ष 2025 तक उपहारों एवं प्रतिबद्धताओं के रूप में 2.025 बिलियन डॉलर इकठ्ठा किया जाना है।

एक रोटेरियन के रूप में दूसरे रोटेरियन को, मेरे दिल से आपके दिल को, आपके अथक काम एवं वर्ष दर वर्ष हासिल की गयी उपलब्धियों के लिए कृपया मेरे व्यक्तिगत धन्यवाद को स्वीकार कीजिये। रोटरी में अहम् नेतृत्वकर्ता के रूप में सेवा देने के वास्तविक फायदों में से एक है कि आप आपके जितने ही जोशीले एवं प्रतिबद्ध रोटेरियन मित्रों से निरंतर सीख पाते है।

चलिए रोटरी संस्थान माह का मिलकर उत्सव मनाएं!

धन्यवाद।

Paul A. Netzel

पॉल ए. नेटज़ेल
फाउंडेशन न्यासी अध्यक्ष

फाउंडेशन के बारे में
अपने विचार मुझे भेजें।
Paul.Netzel@rotary.org.
हम सुन रहे हैं।

Häcker
kitchen. germanMade.

DELHI	MUMBAI	BENGALURU	KOCHI	COIMBATORE	CHENNAI	HYDERABAD	AHMEDABAD	LUDHIANA	JAIPUR	INDORE	THRISSUR	MANGALURU
9313134488	9322987229	9740999350	9895058285	9500210555	9442081111	9700058285	9879538977	9815048222	9414058718	9425803599	7025991000	7899119955

E-mail: info@hacker-kitchens.com
Website: www.haecker-india.com / www.haecker-kuechen.com

Rotary

Rotary International Rotary Foundation Award Winners

The 2016–17 recipients of The Rotary Foundation Distinguished Service Award and Citation for Meritorious Service have been announced. The Distinguished Service Award is the Foundation's highest recognition of active service.

Rotarians become eligible for the award four years after receiving the Citation for Meritorious Service, which recognises individuals who have provided significant service to the Foundation for more than a year.

Distinguished Service Award

3060 Ashis Roy

3170 Pranesh Jahagirdar

3262 Bhabani Prasad Chowdhury

3291 Anirudha Roy Chowdhury

Citation for Meritorious Service

2981 G Gunasekar

3000 L Subbiah

3020 Jagadeeswararao Maddu

3030 Kishor Ratanlal Kedia

3040 Ashok Kumar Tanted

3051 Lalit Sharma

3052 Anil Agarwal

3070 Gurjeet Singh Sekhon

3110 Shyam Ji Sharma

3131 Rakesh Bhargava

3141 Subhash Rajaram Kulkarni

3141 Nirav Niranjan Shah

3142 Ashes Ganguly

3150 Ch Chilukuri Sarat Babu

3170 Venkatesh H Deshpande

3240 Ashok Kumar

3262 Saumya Ranjan Mishra

3262 Asha Mishra

District Wise TRF Contributions as on September 2017

(in US Dollars)

District Number	APF	PolioPlus*	Other Restricted	Endowment Fund	Total Contributions
India					
2981	14,157	808	0	0	14,965
2982	13,603	70	709	0	14,383
3000	5,848	3,707	32,688	0	42,243
3011	39,125	178	39,598	0	78,901
3012	35,774	1,302	0	2,016	39,092
3020	11,127	934	19,950	15,594	47,605
3030	203	22,724	1,050	0	23,977
3040	261	0	8,388	0	8,649
3053	1,158	0	5,250	0	6,408
3054	70,016	102	73,000	0	143,117
3060	17,455	78	206	11,000	28,740
3070	14,085	148	6,300	(500)	20,033
3080	6,821	2,825	10,500	0	20,146
3090	508	0	0	0	508
3110	19,528	1,849	10,819	0	32,196
3120	13,514	508	0	0	14,022
3131	52,536	(4,431)	64,725	48,094	160,924
3132	22,932	660	0	0	23,592
3141	202,274	4,397	96,612	3,000	306,283
3142	123,366	0	0	(1,000)	122,366
3150	12,055	16	10,717	0	22,788
3160	30,802	0	0	0	30,802
3170	15,191	5,441	3,555	0	24,187
3181	14,077	250	0	78	14,405
3182	8,039	0	20,811	0	28,849
3190	777	300	5,578	16	6,671
3201	26,008	10	66,546	0	92,564
3202	3,594	340	0	0	3,934
3211	14,764	0	0	(10,000)	4,764
3212	136,211	102	0	0	136,313
3231	7,906	0	61,250	16,000	85,156
3232	32,937	5,000	23,365	0	61,302
3240	11,443	0	0	555	11,998
3250	16,427	0	0	0	16,427
3261	21,621	100	0	0	21,721
3262	333	0	0	0	333
3291	21,145	(27)	20,418	0	41,537
India Total	**1,040,844**	**47,392**	**582,036**	**84,852**	**1,755,123**
3220 Sri Lanka	15,022	10,067	0	1,217	26,307
3271 Pakistan	2,000	23,006	0	0	25,006
3272 Pakistan	229	(910)	0	1,000	319
3281 Bangladesh	70,447	235	1,000	8,025	79,707
3282 Bangladesh	20,361	1,150	0	0	21,511
3292 Nepal	16,481	100	84,706	0	101,287
South Asia Total	**1,165,385**	**81,040**	**667,742**	**95,094**	**2,009,260**
World Total	**21,498,019**	**5,191,645**	**3,217,292**	**4,167,605**	**34,074,561**

** Excludes Bill and Melinda Gates Foundation.*

Source: RI South Asia Office

EB5 India Advisory Pvt. Ltd.

W: www.eb5expert.in

E: india@eb5expert.in

Ahmedabad | Bengaluru | Delhi | Kolkata | Mumbai | Nasik | Rajkot

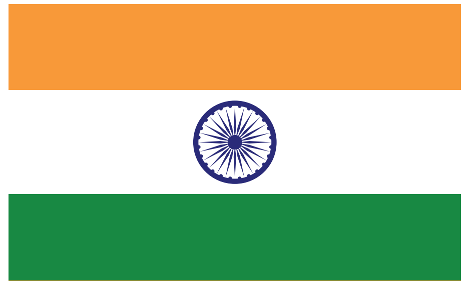

EB5 - Your Gateway To American Passport

Who should APPLY?

- ✓ Parents of children who are interested in robotics and such other unique fields.
- ✓ Businessmen who are having business dealings with America, and therefore, want to set-up their operations in USA.
- ✓ Families willing to settle down in USA.
- ✓ For those who intend to obtain local benefits like scholarships, etc.
- ✓ Students in the field of medicine because it would be mandatory to be a green card holder.

What are the STEPS?

1. Invest US$ 550,000 (INR 3.69 crore) in a project in USA.
2. Receive provisional green card after 2 years of investment.
3. Whole family (wife, and children under 21) gets green card, although investment is to be done only by main applicant.
4. Adjustment of status.
5. Remove conditions to get Permanent Green Card and then US Citizenship.
6. Your investment gets refunded, if sufficient due diligence is done.

What are our SERVICES?

- ❑ Documenting your Sources of Funds (SoF).
- ❑ To conduct Due Diligence on various EB5 Projects.
- ❑ Safeguarding your Capital.
- ❑ Tax Structuring in India before, during, and after EB5 application.
- ❑ Assisting with best Forex exchange rates.
- ❑ FATCA compliances.
- ❑ RBI compliances for remittances.
- ❑ Monitoring your Investment throughout the holding period.
- ❑ Ensuring Liquidity & strategizing Exit.

Deadline: 8th December, 2017

Rotary News - Survey Analysis Results

We at *Rotary News* are pleased to bring you the results of an online survey done through the website *www.surveymonkey.com*. Under this, about 10,000 random emails were sent to Rotarians; 1,011 have responded till now and we are gratified to know that almost 82 per cent of our readers are happy with the quality of *Rotary News*.

While 69.3 per cent are happy with the choice of topics, 71.46 per cent think that the quality of the magazine has improved in the last few years and 53.68 per cent are happy with the quality of non-Rotary content, with 40.66 per cent finding it Ok!

Thanks to all those who responded, as well as to our Graphic Designer Krishnapratheesh for initiating this survey and meticulously following it up.

Editor

Q1

How do you rate quality of Rotary News content?

Answered: 1,011 Skipped: 10

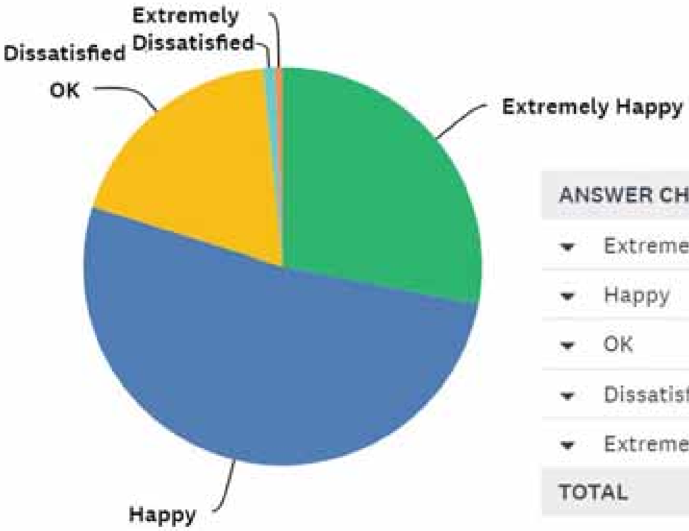

ANSWER CHOICES	RESPONSES	
Extremely Happy	27.99%	283
Happy	51.83%	524
OK	18.60%	188
Dissatisfied	0.99%	10
Extremely Dissatisfied	0.59%	6
TOTAL		1,011

Q2

How do you like choice of topics?

Answered: 1,012 Skipped: 9

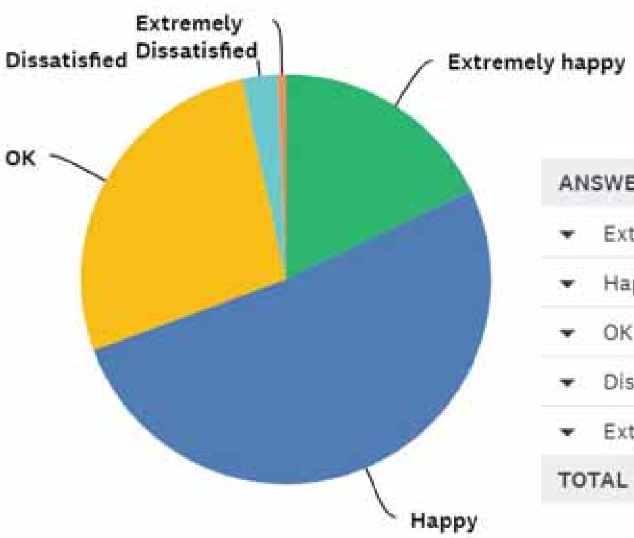

ANSWER CHOICES	RESPONSES	
Extremely happy	17.89%	181
Happy	51.48%	521
OK	27.17%	275
Dissatisfied	2.87%	29
Extremely Dissatisfied	0.59%	6
TOTAL		1,012

Q3

Do you think quality of Rotary News has improved in the last three years?

Answered: 1,009 Skipped: 12

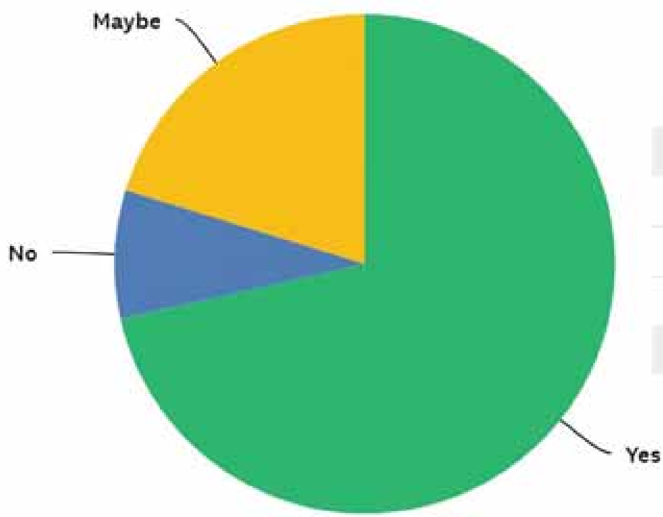

ANSWER CHOICES	RESPONSES	
Yes	71.46%	721
No	8.33%	84
Maybe	20.22%	204
TOTAL		1,009

Q4

Your views on the non-Rotary content we carry.

Answered: 1,006 Skipped: 15

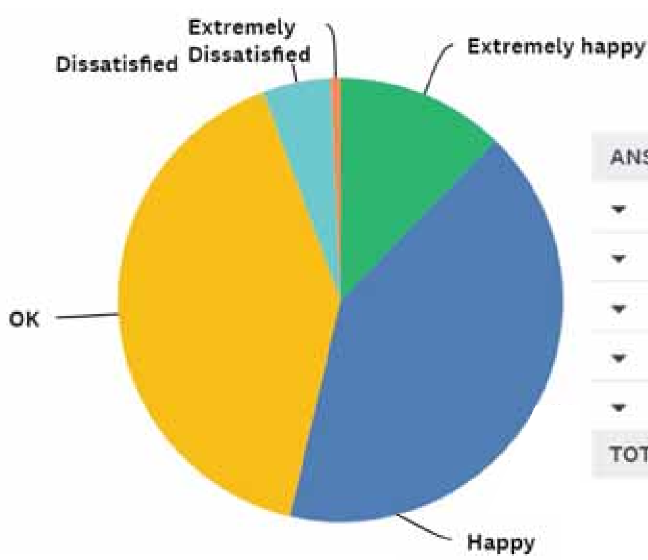

ANSWER CHOICES	RESPONSES	
Extremely happy	12.23%	123
Happy	41.45%	417
OK	40.66%	409
Dissatisfied	4.97%	50
Extremely Dissatisfied	0.70%	7
TOTAL		1,006

शुद्ध जल

रशीदा भगत

रंजनी वैद्य महाराष्ट्र के उन्नत बीज के उत्पादन के लिए मशहूर जालना कस्बे से 10 किमी दूर अवस्थित गुडेवाड़ी ग्राम की जिला परिषद प्राथमिक स्कूल में खिचड़ी बनाने का काम करती है। दूरी कम हो सकती है, लेकिन यात्रा का यह हिस्सा बहुत ही कमजोर था, क्योंकि पूरी सड़क गड्ढों से भरी थी। यहाँ करीब 150 बच्चे पढ़ते हैं। ये बच्चे कृषि और औद्योगिक मजदूरों के हैं। रंजनी का स्पष्ट बोलने का अंदाज और सवालों के जवाब के समय उसका आत्मविश्वास मुझे बार-बार इस बात के लिए प्रेरित कर रहा था कि मैं उसको यह सलाह दूँ कि आगामी पंचायत चुनावों में उसे चुनाव लड़ना चाहिए। जैसा भारत के ग्रामीण क्षेत्र के स्कूलों में होता है - होशियार और ऊर्जावान छात्र जो मुस्कुराकर बातें करते हुए दूर चले जाते हैं, वे बच्चे आसानी ने अपने सपनों की बात करते हैं। उनकी दुनिया छोटी हो सकती है, लेकिन, विश्व के बारे में उनका नजरिया छोटा नहीं है। पाँचवी कक्षा की छात्रा पल्लवी गज्जर भारतीय पुलिस सेवा में जाना चाहती है। आदित्य गणेश, जिसके पिता एक स्थानीय अनाज बाजार में काम करते हैं, वह भी पुलिस अधिकारी बनकर खाकी वर्दी पहनना चाहता है। जिंदादिल नेहा जाधव डॉक्टर बनना चाहती है।

ये सब बच्चे एक छोटी जादुई गोली का लाभ ले रहे हैं। यह गोली बड़ी सहजता से आपके नल के पानी को 'शुद्ध जल' में बदल सकती है, और इसका नाम ''शुद्धु'' है। करीब एक महिने पूर्व ही रोटरी क्लब जालना मिडटाउन

रोटरी क्लब जालना मिडटाउन के अध्यक्ष अनूप करवा (पंप पर हाथ रखे हुए) निर्वाचित अध्यक्ष दिनेश छाजेड़ (उनके दाँए) सहायक गवर्नर किशोर पंजाबी (चरम दाँए) एक स्कूल में परियोजना तरल का उद्घाटन करते हुए।

कृष्ण नगर ज़िला परिषद स्कूल कि प्रधानाध्यापक, किरन आॅती, छात्रों को शुद्ध टेबलेट का उपयोग करने के तरीके के बारे में बताती हुई।

(रोटरी मंडल 3132) के सदस्यों ने प्रत्येक बालक को 30 टेबलेटों की एक बोतल बांटी है। नेहा और उसकी बहिन इसी स्कूल में पढ़ती है, उन्हें 60 टेबलेट मिली है, और शुद्ध पानी पीने की सुनिश्चिता के लिए उन्हें आपूर्ति जारी है।

इस परियोजना के मूल सूत्रधार रोटरी क्लब जालना मिडटाउन के अध्यक्ष अनूप करवा बताते हैं ''यह टेबलेट डिस्प्रीन की तरह है, इसे आपको 15 से 20 लीटर क्षमता वाले बर्तन में डालना है। पानी से अन्य अशुद्ध चीजें जैसे मिट्टी आदि फिल्टर करके 25-30 मिनट में आप शुद्ध पानी पा लेते हैं।''

यह इस तरह है कि रोटेरियनों ने इस स्कूल को गोद ले लिया है और विभाजित कर लिया है। ई–लर्निंग, एक पानी की टंकी, मुफ्त स्वास्थ्य सेवा और अब शुद्ध पेय जल के लिए।

मानसून के अंतिम दौर में मैं जालना में हूँ, यह कस्बा औरंगाबाद एयरपोर्ट से मुश्किल से करीब 60 किमी दूर है और, जब हम वहाँ से जालना तक यात्रा कर रहे थे, तब हरा-भरा देहाती क्षेत्र और इसमें बोई जाने वाली गेहूँ, मक्का, ज्वार और विशेष रूप से कपास की फसल का दृश्य एक नयनाभिराम और मनोहारी पृष्ठभूमि बना रहा था, वहीं समतल और सपाट स्टेट हाइवे इस बात का सूचक था कि लम्बी दूरी का भारत सड़कों के सुधार में काफी आगे बढ़ गया है।

करवा बताते हैं कि भलेही देरी से ही सही, जालना क्षेत्र में मानसून की अच्छी बरसात हुई है, और जल स्तर भी काफी ऊपर आया है, लेकिन इस क्षेत्र की एक स्थायी समस्या है कि इसके गाँवों को शुद्ध जल नहीं मिलता है, और ग्रामीण बोरवेल या हैंडपम्प का जैसा पानी मिलता है, उसे ही काम में लेते हैं। गत तीन वर्ष से दक्षिणी पठार के इस हिस्से को भीषण सूखे का सामना करना पड़ा है, और 'पानी' यहाँ एक 'दुर्लभ वस्तु' बन गया है और इसलिए जिस किसी भी स्रोत से मिलता है, उसे उसी रूप में पी लिया जाता है, जिसके कारण, जल-जनित बीमारियाँ जैसे मियादी बुखार (टायफाइड) दस्तरोग (डायरिया), हैजा (कॉलेरा) पीलिया (जॉन्डिस) आदि रोग हो जाते है, और विशेषकर बच्चे इससे ज्यादा पीड़ित होते हैं।

करवा ने आगे बताया कि ''कुछ वर्ष पहले यहाँ पानी की इतनी विकट समस्या थी, कि यहाँ राजनेता इसके बारे में बात करने आते थे। अंत में उत्तेजित और परेशान ग्रामीणों को इन नेताओं को कहना पड़ा कि यदि आप अपने साथ पीने और उपयोग के लिए पानी ला सकते हो तो ही आना वरना हमारे पास आने की जरूरत नहीं हैं, क्योंकि वे राजनीतिक सभा करने के लिए अपने साथ 2000 समर्थकों को और साथ लेकर आते थे, जो वहाँ बचा खुचा पानी था उसे भी पी जाते थे।''

पानी का एक स्रोत स्थापित हुआ, लेकिन वह भी जिले के एक हिस्से में। उन्होंने आगे बताया ''आज भी इस क्षेत्र का एक बड़ा हिस्सा भूजल और टैंकरों पर निर्भर करता है। मेरा मानना है कि यह भी एक विडम्बना है क्योंकि, जालना भारत की कृषि राजधानी है। सभी बीज कम्पनियाँ यहाँ मौजूद हैं। ब्रिटिश जालना से कपास का व्यापार किया करते थे, इसलिए इसका

ऐतिहासिक महत्व है और यहाँ तक कि विशाल बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ जैसे 'मोन्सान्टो''' यहाँ मौजूद हैं।

करवा कृषि की पृष्ठभूमि से जुड़े हैं। उनके संयुक्त परिवार की 150 एकड़ भूमि है, जिसमें विभिन्न प्रकार की फसलें उगाई जाती हैं, और विशेषकर कपास, सब्जियों और मक्का आदि के लिए विविध तरह के बीजों का उत्पादन किया जाता है। करवा स्वयं कृषि वैज्ञानिक हैं, और उन्होंने जर्मन कॉलेज से पौधों की आण्विक जीव विज्ञान में डॉक्टरेट कर रखी है।

उनका कहना हैं, ''वास्तव में मैने ब्रिटेन से आण्विकी आनुशांषिकी में दो और एक दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से जैविक सुरक्षा पर स्नातकोत्तर डिग्रियाँ ले रखी हैं। कृषि पर शोध तीन करवा भाईयों के संयुक्त व्यापार के अच्छे खासे हिस्से को शामिल किए हुए हैं।'' मुझे उनके महलनुमा मकान में अतिथि के रूप में रखा गया, जिससे इतना बेहतरीन डिजाइन किया गया है जो तीन स्वतंत्र मकानों को एक दूसरे में बिना किसी सीमा और जोड़ के विलीन कर देता है।

परियोजना ''शुद्ध'' का आकार लेना

ऊर्जा और उत्साह दोनों से लबरेज करवा करीब 18 महिने पूर्व रोटरी क्लब जालना को चार्टर देने के समय जब रोटरी में शामिल हुए, तभी उन्होंने यह निर्णय कर लिया कि वे ग्रामीणों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने की दिशा में कार्य करेंगे, विशेषकर बच्चों के लिए, जो अधिकांशतः मानसून के समय जल-जनित रोकथाम योग्य बीमारियों के शिकार हो जाते हैं, और अक्सर अपनी कक्षाओं से अनुपस्थित रहते हैं।

यह क्लब ही युवा नहीं है, बल्कि इसके सभी 65 सदस्य भी 40 वर्ष से कम आयु के हैं, और दूसरे रोटरी नेताओं की तरह 35 वर्षीय करवा, जिनके छोटे बच्चे है, को भी घर पर इस मुश्किल सवालों का जवाब देना पड़ता है कि उन्हें क्यों इतना समय रोटरी में देना पड़ता है? उन्होंने रोटरी पूर्व रोटरी इन्टरनेशनल अध्यक्ष राजेन्द्र साबू की *रोटरी न्यूज़* में छपे लेख का अक्षरशः हवाला देते हुए मुस्कुराकर कहा ''यहाँ तक कि इतने बड़े नेता को भी इस तरह के सवालों का सामना करना पड़ता है।''

करवा जब अध्यक्ष (निर्वाचित) थे, तब उन्होंने 'शुद्ध परियोजना' पर कार्य आरंभ कर दिया था, जिसके अन्तर्गत 15-20 लीटर पानी को शुद्ध करने के लिए छोटी गोलियाँ काम में ली जाती थी। शुद्ध (एक टेबलेट का नाम है, जिसे फार्मा मेजर द्वारा बनाया गया है), जो कि एक बहुत ही साधारण कम लागत वाली टेबलेट है, जो आसानी से आम

जनता तक पहुँच जाये। उनका कहना है "यह एक प्रभावी, सुगम और आर्थिक रूप से जल शुद्धि करवा पद्धति है और यह टेबलेट पानी के सभी रोगाणुओं को बाहर निकालकर उसे बिना किसी गंध या रंग के शुद्ध बनाती है।" उन्होंने कहा "क्लब ने एक फार्मा कम्पनी से समझौता-पत्र हस्ताक्षर किये हैं, जिसने एक लाख टेबलेट रियायती दर पर रु 1 प्रति टेबलेट उपलब्ध कराई हैं।" उन्होंने बताया कि यह संभव है कि क्योंकि धन कम्पनी के वेलफेयर अनुभाग और सरकारी सहायता से उपलब्ध हो जाता है।

ये टेबलेट या तो किसी ट्यूब में या बोतल में 30 के पैक में आती है, और क्लब अब तक 3300 परिवारों में इनका वितरण कर चुका है। लाभार्थियों में ज्यादा स्कूली बच्चे और उनके परिवार तथा वे औद्योगिक श्रमिक है, जिनकी कम्पनियों ने क्लब के बकाया प्रोजेक्ट और एक अन्य कार्य में मदद के लिए बेत् फाण्ड की सहायता प्रदान की है।

आइये रंजनी कुमारी और गुड़ेवाड़ी प्राइमरी स्कूल में वापस चलते हैं जहाँ बच्चों ने 'शुद्धु' टेबलेट प्राप्त कर ली हैं और मैं इसके प्रभाव का अध्ययन करने के लिए वहाँ हूँ। रंजनी के परिवार ने 30 टेबलेटों वाली 3 बोतलें प्राप्त की है, क्योंकि यहाँ उसके दो बेटे और एक भतीजी अध्ययनरत हैं। वह शीघ्र ही निशुल्क टेबलेट की सुविधा से बाहर हो जायेगी क्योंकि रोटरी सदैव निशुल्क टेबलेट उपलब्ध नहीं करा सकता। इसलिए यदि ये बाजार में उपलब्ध है तो उसे एक माह की सप्लाई के लिए रु. 30 खर्च करने होंगे।

ये टेबलेट सुरक्षित और प्रभावी हैं और इन्हें आसाम, गुजरात और चेन्नई में बाढ़ के दौरान सप्लाई किया गया वहीं ये भारतीय सेना के लिए भी सियाचिन जैसे मुश्किल इलाकों में भी भेजी जाती हैं।

रंजनी वैद्य, जो गुंडेवाडी स्कूल के छात्रों के लिए खिचड़ी बनाती हैं, अपने बेटे के साथ।

महिने दर महिने... मैनें उस महिला से पूछा जो खिचड़ी बनाने के कुछ घण्टों के काम से प्रतिमाह रु 1000 कमाती है।

उसका आत्मविश्वास से भरा उत्तर था "मैं क्यों नहीं खरीदूंगी?" उसने बताया कि बरसात के दिनों में जब नल का पानी मिट्टी से भरा और अधिक अशुद्ध आता है, तब बच्चे अधिकांशतः वायरल और दंत रोग से संक्रमण से पीड़ित हो जाते हैं और इसकी कीमत हमें रु 500 डॉक्टर के पास जाने की चुकानी पड़ती है। इसमें डॉक्टर की फीस और दवाइयों के रु 300 तथा रु 200 हमें जर्जर रोड़ से जालना जाने के लिए ऑटोरिक्शा पर खर्च करने पड़ते हैं" वह बताती है, कि इस मौसम में ना तो कोई बच्चा बीमार हुआ और ना ही किसी बच्चे ने एक दिन स्कूल से छुट्टी ली।"

भारतीय परिप्रेक्ष्य में जब समूचे भारत में स्कूल जाने वाले बच्चों को दोपहर में एक उपयुक्त भोजन मिलता है तब एक स्वस्थ बच्चे के स्कूल जाने का मतलब केवल एक महिला का एक कार्य कम होना है, बल्कि भोजन के मासिक बजट से भी कुछ कमी होना है और इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण यह है कि वह या उसके जैसे अन्य माता-पिता, जिनमें से अधिकांश दैनिक मजदूरी करने वाले हैं, वे भी अपनी दैनिक मजदूरी नहीं खोते।

रंजनी बताती है कि इससे भी आगे जब भी वह घर के पानी को शुद्ध करने के लिए 'शुद्धु' टेबलेट उपयोग में लाती है, तब "सात दिन बाद भी पानी स्वच्छ बना रहता है और मैं उसमें कोई जीव जंतु नहीं देखती, जो साधारण नल के पानी में होता है। इस टेबलेट से तो पानी बिल्कुल साफ रहता है।" वह मुस्कुराकर बोली।

कक्षा 4 के अध्यापक शामल सपन रंजनी की बात की पुष्टि करती हैं। वह स्वयं अपने घर में RO जल शोधक रखती है। "लेकिन यहाँ लगभग सभी विद्यार्थी मजदूरों के बच्चे हैं और बरसात के मौसम में साधारणतः इनकी अनुपस्थिति बढ़ जाती है। लेकिन इस मौसम में मैं देख रहा हूँ कि मुश्किल से कोई बालक अनुपस्थित रहा है और मैं यह सूचना देते हुए प्रसन्नता महसूस कर रहा हूँ कि कोई भी बच्चा दस्त रोग से नहीं हुआ। और वे रोजाना स्कूल में उपस्थित हो रहे हैं।" वह बताती है कि जब रोटेरियन यह टेबलेट वितरित कर देते हैं तो शिक्षक नियमित रिपोर्ट लेते हैं कि उनकी माँ गोलियों का उपयोग कर रही हैं, या नहीं? तो उत्तर 'हाँ' में आता है।

क्लब के अध्यक्ष (निर्वाचित) दिनेश छाजेड़ बताते हैं कि अब कई औद्योगिक श्रमिकों को 'शुद्धु' टेबलेट दी गई है, तो कुछ उद्योग इकाईयाँ क्लब से सम्पर्क कर रही हैं कि क्या ये टेबलेट नियमित रूप से उपलब्ध कराई जा सकती हैं? सामान्य तौर

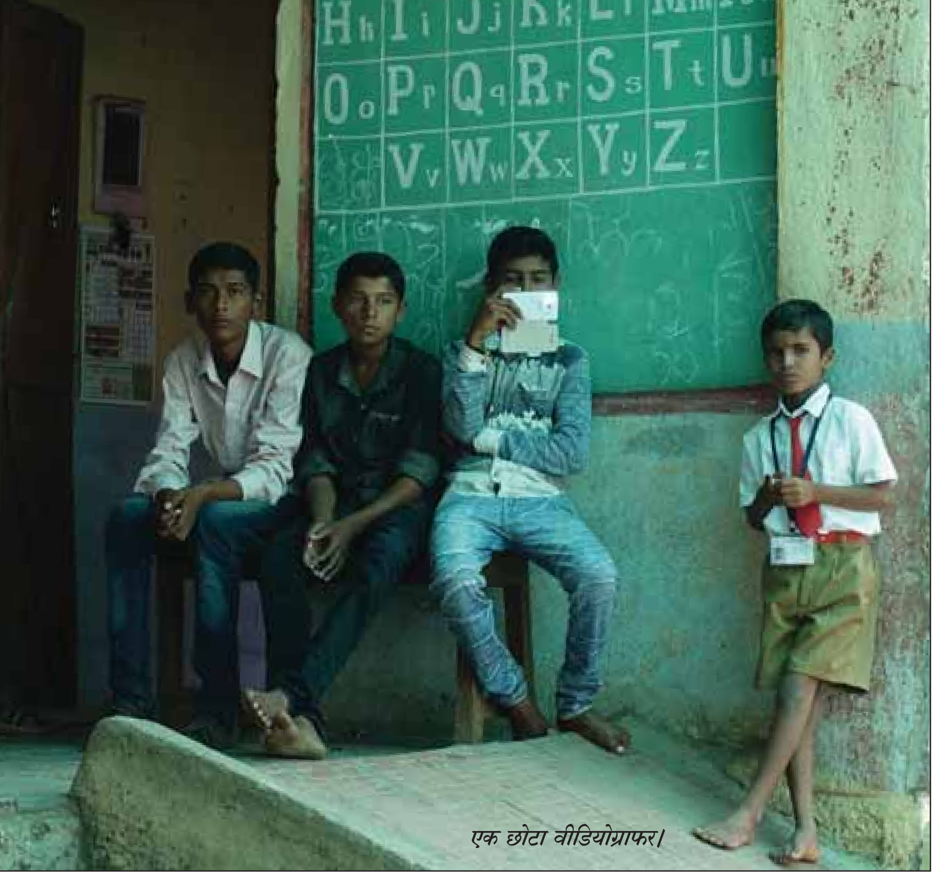

एक छोटा वीडियोग्राफर।

पर इन औद्योगिक इकाइयों में मजदूरों के लिए पानी की टंकियाँ लगा रखी है, और वे कुछ टेबलेटों का उपयोग वाटर टैंकों के पानी को शुद्ध करने के लिए करना चाहते हैं।'' ''और हमने कहा यह किया जा सकता है।''

शुद्ध परियोजना की निरंतरता व स्थिरता के बारे में करवा कहते है। कि इस कार्यक्रम को आगे बढ़ाने में कोई समस्या नहीं हैं क्योंकि फार्मा कम्पनियों ने उन्हें अगले 2 वर्ष तक रियायती दर एक रूपया प्रति टेबलेट उपलघ कराने का आश्वासन दे रखा है। ''औद्योगिक इकाइयों के अलावा हमारे क्लब के सदस्य खुद इन टेबलेटों को अपने घरेलू नौकरों और अन्य स्टाफ को देने के लिए कहते हैं।'' उन्होंने आगे बताया कि ये टेबलेट सुरक्षित और प्रभावी हैं तथा विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) व रेड क्रॉस ने इन्हें प्रमाणित किया है और इन्हें आसाम, गुजरात और चेन्नई में बाढ़ के दौरान सप्लाई किया गया वहीं ये भारतीय सेना के लिए भी सियाचिन जैसे मुश्किल इलाकों में भी भेजी जाती हैं।

परियोजना 'तरल'

करवा और उनकी टीम एक और जल शुद्धिकरण परियोजना पर कार्य कर रहे हैं, उसका नाम है ''तरल'' जिसके जालना से 7 किमी दूर जामवाड़ी ग्राम में कृष्णा नगर जिला परिषद प्राइमरी स्कूल में उद्घाटन कार्यक्रम में मैं शामिल हुई। इस जादुई उपकरण या 'बायो रियेक्टर' ने हाल ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से 'राष्ट्रीय नवाचार पुरस्कार' प्राप्त किया है। इसका नवोत्पादन मुंबई की स्टार्ट-अप कम्पनी ने किया है।

यह बायो-रियेक्टर (चित्र देखें) किसी भी हैंडपम्प में फिट किया जा सकता है और कीटाणुओं को मारकर पानी शुद्ध करने के लिए निर्वात-शून्य (वेक्यूम) ऊष्मा गतिकि (थर्मो डाइनैमिक्स), दबाव व तापमान का उपयोग करता है।

तरल के प्रोजेक्ट चैयरमेन पंकज पाटनी बताते हैं, ''यह उपकरण हैंडपम्प के अन्दर फिट हो जाता है तथा इसे फिट करो और लम्बे समय तक भूल जाओ क्योंकि इसमें किसी तरह की मरम्मत की आवश्यकता नहीं होती।'' उन्होंने आगे बताया कि ''इसमें तीन फिल्टर लगे हैं और यह कम लागत का, किफायती, शक्तिशाली समाधान है जिसे पानी में अधिकांश कीटाणुओं, बैक्टीरिया और फंगस को मारने के लिए बिजली की भी जरूरत नहीं हैं और यह टायफाइड, मलेरिया और पीलिया जैसी बीमारियों को रोकता है।''

करवा बताते है। कि इस उपकरण को हैंडपम्प में अन्दर फिट करना होता है इसलिए मजदूरी सहित इस पर रु 12,000-रु 15,000 का खर्चा आता है।

यह गुमनाम स्कूल एक दो कमरों के भवन में संचालित है, जिसके चार दीवारी भी नहीं है और यह साधारण से घरों से घिरा हुआ है। जिनमें से कुछ के आगे के चौक में भैंसे या बकरियां बंधी हुई हैं। घरों के चारों और अकेला टेऻक्टर और कुछ स्कूटर खड़े किये हुए हैं। बच्चों के स्कूल बैग उनके सामने आंगन पर सुचारू रूप से क्रम बद्ध तरीके से रखे हुए थे। बरामदे के बाहर उनके जूते-चप्पल बड़े करीने से पंक्तिबद्ध रखे हुए थे। वहाँ दो शौचालय है, एक छात्रों के लिए तथा दूसरा छात्राओं के लिए, लेकिन उनमें भी पानी उपलब्ध

गुंडेवाडी जिला परिषद स्कूल में बच्चें।

नहीं हैं। बच्चों को शौचालय उपयोग करना हो तो बाल्टी से पानी अपने साथ लेकर जाना पड़ता है। छाजेड़ ने बताया कि इस स्कूल के चार दीवारी नहीं है, ''इसलिए हमने इस स्कूल को हैंडपम्प में तरल उपकरण फिट करने के लिए चुना है, क्योंकि यह पम्प करीब 1000 ग्रामीणों की आवश्यकता की आपूर्ति करता है। उनके परिवार के लोग यहाँ से पानी लेकर लेकर जाते हैं।''

रोटरी की शब्दावली के अनुसार यह स्कूल ''हैप्पी स्कूल'' से बहुत दूर है, क्योंकि कक्षायें बहुत साधारण हैं, विद्यार्थी आंगन में बैठे है क्योंकि टेबल कुर्सी नहीं हैं, लेकिन जालना के 4 रोटरी क्लबों के हस्तक्षेप के लिए आभार, जिन्होंने खुशी का अपना हिस्सा ठीक रखा। मुझे यह बात बहुत पसन्द आई कि इस हैंडपम्प का नये उपकरण के साथ उद्घाटन करने के संक्षिप्त से कार्यक्रम में भी बाकी तीन अन्य क्लबों के रोटरी क्लब जालना, सेन्ट्रल और रैनबों के अधिकांश सदस्य और विशेषकर वरिष्ठ सदस्य वहाँ इस शुभ कार्य के उद्घाटन पर खुशी मनाने के लिए उपस्थित रहे।

इस स्कूल में करीब 110 छात्र-छात्रायें हैं, और ऐसा लगता है कि इसकी प्राचार्या किरण ऑथी वहाँ एकत्रित विभिन्न रोटरी क्लबों के अनेक रोटेरियनों को जानती है। जब मैं आश्चर्य व्यक्त करती हूँ कि तब वह मुस्कुराती है और बताती है कि ''आप यह जो सिन्टेक्स वाटर टैंक देख रही हैं, वह रोटरी क्लब जालना द्वारा उपलब्ध कराया गया है, और हमारी 80 प्रतिशत कक्षाओं में ई-लर्निंग शुरू हो चुका है। इन सभी रोटरी क्लबों का हार्दिक आभार। एक बालक जब किताब से कोई बात समझ या सीख नहीं पाता, तो मैं उसे स्क्रीन पर बताती हूँ। इन चारों रोटरी क्लबों ने हमें बहुत मदद की हैं।''

यह इस तरह है कि रोटेरियनों ने इस स्कूल को गोद ले लिया है और खुद की स्कूल विभाजित कर लिया है। वे रोटरी क्लब जालना सेन्ट्रल को गरीब बच्चों के इलाज के लिए चिकित्सकों की व्यवस्था करने का श्रेय देती हैं। ''वास्तव में तो उन्होंने हमें एक स्वास्थ्य शिविर आयोजित करने की पेशकश की थी, लेकिन आप हमारा परिसर देख सकते हैं, यह बहुत छोटा व संकड़ा है और सारे मरीज भी दैनिक मजदूरी वाले श्रमिक हैं, जो चिकित्सा जाँच के लिए एक भी दिन की मजदूरी छोड़ नहीं सकते, भलेही यह जाँच निशुल्क हो।''

करवा ने ''फिट करो और भूल जाओ'' परियोजना के लिए

को लेकर उनका जुनून ऐसा है कि वे पहले से रोटरी की बिरादरी में विश्व स्तर पर लोगों से जुड़ चुके हैं।

"मैं पहले से जर्मनी, अमेरिका, स्पेन के क्लबों से बात कर चुका हूँ, लेकिन तुरन्त सकारात्मक उत्तर प्राप्त करना कोई आसान कार्य नहीं हैं। वे समय लेते है, और स्वाभाविक रूप से अपने निदेशक मण्डल से चर्चा करना चाहते हैं। धन जुटाने की सदैव एक प्रक्रिया होती है। मैं *रोटरी समाचार* में इस लेख के माध्यम से भी सहभागियों की तलाश में हूँ। (जिस समय यह पत्रिका छपने के लिए प्रेस में गई, उस समय करवा अमेरिका में थे, तब उन्होंने मुझे एक जोश भरी मेल भेजी कि उन्होंने "एक 100 वर्ष पुराने अमेरिकी क्लब से मुलाकात की और उन्होंने 'तरल' और शुद्ध दोनों परियोजनाओं के लिए ग्लोबल ग्रांट करने में रूचि दिखाई हैं।")

परियोजना तरल का एक बायोरिएक्टर एक हैंड पम्प मे लगा हुआ।

महत्वाकांक्षी योजना बनाई है, क्योंकि इस परियोजना के माध्यम से अधिक लोगों तक पहुँचने की संभावना है। वे कहते हैं, "यह दोहरे समाधान जैसी योजना है, और हम एक ग्लोबल ग्रान्ट लेने के प्रयास में हैं, ताकि हम जालना के इर्द-गिर्द करीब 400 स्थानीय निकायों की स्कूलों के हैंडपम्पों में बायो रिएक्टर उपकरण फिट कर सकें और करीब 100-200 किसी भी परिक्षेत्र तक पहुँच बना सकें।" इन अधिकांश स्कूलों में हैंडपम्प है, जिनका ग्रामीण भी उपयोग करते हैं।

वे इस बात से भी अति उत्साह में है, कि जिला कलेक्टर शिवा जोन्दाली ने उन्हें उचित सहयोग दिया है। भारतीय प्रशासनिक सेवा अधिकारी (IAS) जोन्दाली अब उनके क्लब के मानद् सदस्य (ऑनरेरी मेम्बर) बन गये हैं। "हमने उनसे आग्रह किया था कि हमें सभी नगर पालिका स्कूलों की सूचनायें उपलब्ध करा दी जाये ताकि हम इन स्कूलों के हैंडपम्पों में तरल बायो रिएक्टर फिट कर सकें। हमें इन 400 स्कूलों की सूचनायें एक्सल शीट में पाँच दिन में प्राप्त हो गई।" इस जल शुद्धि परियोजना

कृष्ण नगर जिला परिषद प्राथमिक स्कूल, जामवाडी के छात्र।

स्थानीय स्तर पर उनहें एक कम्पनी ने सी.एस.आर. फण्ड में से रु 50,000 देने का वायदा किया है। उनका कहाना है कि ''जालना में कोई बड़ा उद्योग तो नहीं हैं, लेकिन यदि हम 10 उद्योगों से रु 50,000 लेते हैं तो हमें रु 5 लाख मिलते हैं जो समाज के एक काफी बड़े हिस्से में काम करने में सहायक होंगे।''

यह युवा क्लब अध्यक्ष तरल परियोजना के दायरे को और विस्तृत कर इस उपकरण में कुछ संशोधन कराना चाहते हैं ताकि इसे जलकूपों (बोरवेलों) में भी फिट किया जा सकें। ''एक बार यदि ऐसा हो जाये तो फिर इसका लाभ व्यक्तिगत घरों तक भी पहुँच सकता है।''

औद्योगिक श्रमिक, शुद्ध टेबलेट के लाभार्थी।

जालना मिडटाउन क्लब एक स्थानीय सामुदायिक सेवा केन्द्र की सहायता के लिए

भी धन एकत्र कर रहा है। एक महिला के नेतृत्व में संचालित श्री दत्ता आश्रम नामक इस केन्द्र में प्रतिवर्ष करीब 1.50 लाख लोगों को निशुल्क खाना दिया जाता है। ''और इसमें तीन भोजन शामिल है और यह बिना किसी धर्म, जाति और समुदाय के भेदभाव के किया जाता है। यहाँ एक ध्यान केन्द्र हैं, गरीब बच्चों की शिक्षा के लिए कक्षायें भी लगाई जाती है और इसका सारा दान गुमनाम दानदाताओं की तरफ से आता है।''

क्लब उनके बिजली के बिल को कम करने के लिए एक सौर विद्युतकरण प्रणाली देना चाहता है उनका विद्युत बिल करीब रु 2.5 लाख महिना आता है क्योंकि उनकी रसोई के लिए एक विशाल कोल्ड स्टारेज क्षेत्र है। इस परियोजना की लागत करीब रु 27 लाख है, और करवा कुछ सी.एस.आर. फण्ड के जरिये इस लागत के करीब एक तिहाई हिस्से का वायदा हासिल कर चुके हैं। शेष लागत के लिए उन्होंने एक उच्च रोटेरियन से सम्पर्क किया है, जिनकी बैंगलोर स्थित सौर उपकरण निर्माण कम्पनी 40 किलोवाट विद्युत उत्पादक के लिए पैनल फिट करेगी। करवा ने बताया ''मैं उनके पास एक ग्लोबल ग्रांट लेने गया लेकिन उनके क्लब ने कहा कि वे आपके देश में एक परियोजना करना चाहते हैं। वे इतने सदस्य थे कि उन्होंने कम्पनी के लाभ के रु 2 लाख छोड़ दिये।''

जालना में रोटरी सक्रिय है, जिसे इस तरह देखा जा सकता है कि 350 जिला परिषद स्कूलों में ई-लर्निंग किट उपलब्ध कराये गए हैं, जिसमें मुख्य रोटरी जालना सेन्ट्रल द्वारा दिया गया है। कम लागत के हाथ धोने वाले स्टेशन कई स्कूलों में स्थापित किये गये हैं, वहीं बच्चों में हृदय रोग शल्य चिकित्सा भी की गई है।

इस परियोजना में सहयोग के लिए *anupkarwa@gmail.com* पर संपर्क करें।

चित्र : रशीदा भगत

एस कृष्णाप्रतीश द्वारा रूपरेखा

डॉ अमर अग्रवाल, अध्यक्ष डॉ अग्रवाल ग्रूप ऑफ आइ हास्पिटलस, एक मरिज़ की जांच करते हुए। सीएमओ डॉ सौन्दरी भी चित्र में शमिल हैं।

नया खोजें... अपने क्रेजी आइडिया लेकर मेरे पास आएं

रशीदा भगत

अपनी आँखें दस सैकण्ड के लिए बन्द करें और आपको पता चल जायेगा कि दृष्टि कितना महत्वपूर्ण उपहार है'' यह कहना है जाने माने नेत्ररोग सर्जन डॉ. अमर अग्रवाल का, जो नेत्र रोग सर्जरी में नवाचारों या अन्य विषयों को लेकर नियमित रूप से मीडिया की सुर्खियों में बने रहते हैं।

एक क्षण के लिए उनके ये शब्द मुझे 10-15 वर्ष अतीत में ले गए जब उनके पिता चैन्नई में डॉ. अग्रवाल ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स के चैयरमेन डॉ. जे. अग्रवाल ने एक बातचीत में मुझे कहा ''दो मिनट के लिए अपनी आँखें बन्द कीजिये, आप ऐसा नहीं कर पायेंगे, इसलिए अंधे लोगों की स्थिति की कल्पना कीजिए।''

नैत्र चिकित्सा में अपने 50 वर्ष के कैरियर में उनका जीवन भर का जुनून, भारत में निवारण योग्य अंधता को जड़ से समाप्त करना था।

युवा अग्रवाल अब डॉ. अग्रवाल ग्रुप के प्रमुख हैं। यह ग्रुप 75 नेत्र रोग चिकित्सकों का संचालन कर रहा है, 17 अस्पताल अफ्रीका में है, और अब दुबई में एक नया अस्पताल खुल रहा है। उनका कहना है, ''एक अस्पताल अहमदाबाद में शुरू हो रहा है, मेरा स्वप्न 2020 तक 150 अस्पताल और 600 नेत्र सर्जन तक विस्तार करने का है, अभी हमारे पास 350 सर्जन हैं।''

पर, महत्वपूर्ण पहलू यह है कि इस तरह के विस्तार का अधिकांश कार्य उनके पुत्रों डॉ. अनीश और डॉ. आदिल द्वारा किया गया है, जो प्रशिक्षित नेत्ररोग विशेषज्ञ तो है हीं, उन्होंने हार्वर्ड और स्टैनफोर्ड से एम.बी.ए. भी किया है। डॉ. अशर और डॉ. अश्विन चैन्नई के मुख्य अस्पताल में सर्जरी करते हैं, जहाँ डॉ. अमर अग्रवाल बैठते हैं। उनके चारों बेटे आँखों के डॉक्टर हैं। मैं यहाँ डॉ. अमर अग्रवाल के शोध और नवीनताओं के जुनून पर चर्चा के लिए आई हूँ। कई वर्षों से इस अस्पताल ने आँखों के अनेक जटिल और पेचीदा केसों को ठीक किया है, जिनके लिए अन्य चिकित्सकों ने जवाब दे दिया था। एक पत्रकार के रूप में स्वास्थ्य के सम्बन्ध में लम्बे समय से लिखते हुए मैनें ऐसी कई पत्रकार-वाताओं को कवर किया है, जहाँ उन्होंने नेत्र रोग चिकित्सा के कई बिगड़े हुए जटिल केसों को ठीक करने की घोषणायें की हैं। वे नैत्र विज्ञान पर किताबें लिखने और मेडिकल जर्नल में लेख लिखते हुए कभी नहीं थकते।

मैं उनसे पूछती हूँ कि वे में वैज्ञानिक रूझान और नैत्र सर्जरी में नवीनतम तकनीक को भूख कहाँ से लाते हैं? पूर्व में चैन्नई के प्रधान केन्द्र की मुख्य चिकित्सा अधिकारी (सीएमओ) डॉ. एस. सौन्दरी ने मुझे कहा था वे कितनी किताबें लिखते हैं, मैं वह संख्या ही भूल गई। ''मैं कहूँगी कि वे नैत्र विज्ञान में ही जीते हैं, और साँस लेते हैं। आप रात को 10 बजे संदेश प्राप्त कर सकते है, और दुबारा रात के 1 या 2 बजे। मुझे पता नहीं वे कब सोते हैं!''

अपनी आँखों में चमक के साथ डॉ. अमर अग्रवाल ने जवाब दिया, ''मैं जो कुछ भी कर पाया या मैने हासिल किया वह किसी दैवीय विधान का हिस्सा है जो ईश्वर के यहाँ से आया है।'' किसी

मानव में यह शक्ति नहीं हैं। आपके विचार और कल्पना मानवीय होते हैं, लेकिन उन पर काम करने के लिए आपको दैवीय शक्ति और सहायता की जरूरत होती है।

एक क्षण रूककर उन्होंने कहा, ''लेकिन एक बात मैं जानता हूँ कि मुझे नैत्र चिकित्सा के लिए यह जुनून मेरे मम्मी-पापा दोनों से मिला हैं (उनकी माताजी भी चेन्नई की प्रसिद्ध नेत्र रोग विशेषज्ञ थी) क्या आप कल्पना कर सकते है कि वे 60 वर्ष पहले राजस्थान से मद्रास आये थे, और उनकी जब

वे नैत्र विज्ञान में जीते हैं, और सांस लेते हैं। आप उनका संदेश रात को 10 बजे भी प्राप्त कर सकते हैं, और दुबारा रात को 1–2 बजे भी। मुझे पता नहीं वे कब सोते हैं!

डॉ एस सौन्दरी
मुख्य चिकित्सा अधिकारी

में केवल 60 रूपये थे, बिना जुनून, समर्पण और कड़ी मेहनत के इस तरह के संस्थान का निर्माण नहीं किया जा सकता।''

घातक ग्लूकोमा

यहाँ अनेक नई परिकल्पनायें और सर्जिकल नवाचार हो चुके हैं। इस बार जब मैं डॉ. अग्रवाल से मिली, तो वे इस बात को लेकर बेहद उत्साहित थे कि उन्होंने बन्द एंगल ग्लूकोमा के इलाज के लिए एक आसान और अनुकरणीय शल्य चिकित्सा

डॉ एस सौन्दरी एक मरीज़ कि जांच करती हुई।

तकनीक इजाद कर ली है। उनका कहना था, ''पश्चिम के विपरीत भारत में हम स्वास्थ्य की उपेक्षा करते हैं, और शिक्षित लोग भी आँखों की समस्या जब बिगड़ जाती है, तब हमारे पास आते हैं।''

ग्लूकोमा को मूक हत्यारा बताते हुए उन्होंने कहा कि इसको नजर अंदाज करने पर यह आँखों की रोशनी को स्थायी रूप से खत्म कर सकता है। उन्होंने बताया कि ग्लूकोमा दो तरह का होता है, खुला व बन्द एंगल ग्लूकोमा (यह उच्च आंतरिकी

ग्ल्यूड IOL सर्जरी

डॉ अमर अग्रवाल, एक बच्चे के साथ जिसका नाम उन्होंने कैलाश रखा, जो शिव से जुड़ा है। यह बच्चा एक भयानक उभार के साथ पैदा हुआ था, जिसके चलते वह अपनी आंख को बंद नहीं कर पाता था।

इस तकनीक में IOL को एक कैपसूलर बैग में रखा जाता है, लेकिन यदि यह किसी चोट के समय चोट ग्रस्त है, या फूट गया अथवा किसी सर्जरी के दौरान टूट गया है तो लैंस को श्वेत-पटल (sclera) या आँख के सफेद हिस्से पर टांके से चिपकाया जाता है। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर एस. सौन्दरी ने बताया कि ''लेकिन आप यह नहीं जानते कि यह टाँका कितने दिन टिकेगा, और एक समय बाद यह टाँका ढ़ीला भी हो सकता है, और यह जोड़ लगाते समय इधर उधर हिल या झुक कर आपकी दृष्टि को प्रभावित कर सकता है,'' उन्होंने बताया कि ग्ल्यूड IOL में सर्जन श्वेत पटल पर एक पल्ला बनाते हैं, ग्लू से लैंस को वहाँ चिपकाते हैं या अन्दर फिट करते हैं। एक बार चिपक जाने के बाद लैंस आँख के सामने घूमता है। अलग से नहीं घूमता और ना ही हिलता है, ताकि देखने की क़ालिटी प्रभावित ना हो। और यह इलाज की प्रक्रिया एक दो महिने के बालक पर भी की है, जिसके लैंस नहीं थे और कई वृद्ध इंसानों पर भी। पहला केस हमने एक 10 वर्षीय बालक का किया जो पटाखे से जख्मी होकर हमारे पास आया। हम आज भी इस केस को संभाल रहे हैं।'' उन्होंने आगे बताया कि बुजुर्गों में यह प्रक्रिया आमतौर पर *सोडाबट्टी* (सोडा के पानी जैसा मोटा) चश्मे को हटाने का काम करती है, ''वे अब बिना चश्मे के देख सकते है और बहुत खुश है।'' डॉ. अग्रवाल तीन वर्ष के बालक के एक बहुत ही दुर्लभ केस को, जिसे मुंबई के एक नैत्र रोग चिकित्सक ने उनके पास भेजा था, को याद करते हुए बताते हैं कि वह बालक दोनों आँखों में बिना पुतली (iris) के पैदा हुआ था। उसकी आँखों में ज्यादा मात्रा में रोशनी जा रही थी ... ठीक उसी तरह जैसे आपकी आँखों में फ्लड लाइट जा रही हो। हमें उसको कम करना था।''

इस मरीज को मोतियाबिन्द भी था, उसे भी हटाया गया क्योंकि लैंस भी बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो चुके थे। ''हमने कृत्रिम आँख की पुतली के साथ IOL लगाये और ग्लू से चिपकाया। IOL सर्जरी से पूर्व वह दुबक कर बैठा था, बाहर की तेज रोशनी को सहन नहीं कर पा रहा था। अगले दिन वह बरामदे में टहल रहा था।''

दबाव) IOP के कारण होता है, जो आप्टिक तंत्रिका तंत्र को नष्ट कर देता है।) ''हम एंगल ग्लूकोमा का इलाज एक निकासी द्वारा बनाकर करते हैं, क्योंकि आँखों में बहुत ज्यादा तरल पदार्थ (फ्लूड) आता हैय जैसे जाले में कोई समस्या हो या तो खूब ज्यादा पानी या फिर निकास द्वार में कोई रूकावट।''

''लेकिन बंद एंगल ग्लूकोमा में केवल निकासी समस्या नहीं होती, निकासी के प्रवेश का एरिया प्रभावित रहता है। खुले एंगल में निकासी दोषपूर्ण है और मैं इसको खोलकर ठीक कर देता हूँ, लेकिन बंद कोण में वहाँ तक भी पहुँच पाने में अक्षम हूँ जहाँ पानी की निकासी की जाती है। यह समस्या है।''

उन्होंने एक सरल समाधान खोजा है, ''अब हम एक सकल द्वार का उपयोग करते हैं, four throw pupilloplasty technique'' जो मूल रूप से आँख की पुतली की मरम्मत करती है। यह बहुत साधारण आइडिया है - मैं आँख की पुतली बनाता हूँ जो आँख की झिल्ली है, मैं जब इसे बनाता हूँ तो एंगल स्वतः ही खुल जाता है, और तरल पदार्थ आसानी से निकल जाता है। इस तकनीक के दो रोमांचक पहलू हैं। यह इतना आसान है कि दुनिया का कोई भी नैत्र रोग विशेषज्ञ इसे कर सकता है। इसमें किसी बड़े सर्जिकल कौशल की जरूरत नहीं है और दूसरा इसका सरलता से अनुकरण हो सकता है। उन्होंने आगे बताया कि ''इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण यह है कि मैं शरीर-रचना को सामान्य बना रहा हूँ, वैसी ही जैसे हम पैदा हुए, और निकासी के लिए मार्ग भी नहीं बना रहा हूँ।''

डॉ. अग्रवाल बताते है कि वे यह तकनीक उनके अस्पताल में गत तीन वर्षों से उन मरीजों के इलाज के लिए काम में ली जा रही है, जिनकी आँख के पर्दे में कोई दोष है, या किसी चोट से पीड़ित हो चुके है और या किसी सजातीय विवाह से उत्पन्न होने पर कोई समस्या हो। ''जैसे एक भतीजी ने अपने चाचा से विवाह कर लिया हो अथवा इससे मिली जुली खतरनाक प्रथाओं। इस तरह के दोषों में आनुवंशिकी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

सुगमता से अनुकरणीय

उन्होंने कहा, ''जब हम इस तरह के केसों का तीन वर्ष से इलाज कर रहे थे तो अचानक मेरे ध्यान में आया कि हम ग्लूकोमा के लिए ऐसा क्यों नहीं कर सकते?'' उन्होंने इसकी शुरूआत की, जिसके अच्छे परिणाम मिले, जो गत कुछ महिनों में उच्च स्तरीय मेडिकल पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। इससे वे थोड़े रोमांचित भी हैं कि यह साधारण प्रक्रिया हजारों नैत्र शल्य चिकित्सकों द्वारा सम्पादित की जा सकती है। उनका कहना है, ''क्योंकि ग्लूकोमा अंधता की बड़ी समस्या है। इसमें देखने की क्षमता स्थायी रूप से चली जाती है। हम ग्लूकोमा को हटाकर और IOL डाल कर उसका इलाज कर सकते हैं, लेकिन 'ग्लूकोमा' में जो खो दिया, वह खो दिया और जब दबाव (IOP) ज्यादा बढ़ जाता है तो वह आँखों के तंत्रिका तत्र को नष्ट कर देता है, जिसका नतीजा दृष्टि नालीनुमा हो जाती है।''

डॉ. अग्रवाल कहते हैं, ''लोग इसे नजर अंदाज करते है, वह क्षमायोग्य नहीं है। उन्होंने एक 40 वर्षीय महिला का उदाहरण देते हुए बताया जो आँखों में गंभीर दर्द और लालिमा लिए आई। ''यह एक सीधा-सीधा लापरवाही का केस था। ये लोग यह नहीं जानते कि जवानी में आँखें किसी भी स्थिति को बर्दाश्त कर सकती हैं, लेकिन जब आपकी उम्र बढ़ जाती है, तब ऐसा नहीं हो सकता। वह मेरे पास तीन वर्ष पहले आई और उसके बाद गायब हो गई, और अब वापिस आई है। अब मुझे ऑपरेशन करना पड़ेगा, और कोई चारा नहीं है। हालांकि उसे निश्चित रूप से तुरन्त राहत मिल जायेगी, लेकिन जब इस तरह के शिक्षित लोग इतने लापरवाह हो सकते हैं, तो हम कमजोर वर्गों के लोगों को कैसे दोष दे सकते हैं।''

मैने धीरे से कहा कि शायद वह व्यस्त रही होगी, इस पर उन नेत्र रोग विशेषज्ञ ने जोर से कहा ''कोई इतना व्यस्त नहीं होता, यह पूर्ण रूप से असावधानी है, और वह शिक्षित और समृद्ध है। यह लापरवाही है, जो हास्यास्पद और अक्षम्य हैं।''

मैं रात को 11 बजे से 1-2 बजे के मध्य सोता हूँ, क्योंकि मेरा वह समय नये विचारों पर चिंतन करने और शोध पत्र व किताबें लिखने का है। दिन में मैं ऑपरेशन, मरीजों की जाँच और बाकी दैनिक कामों में व्यस्त रहता हूँ।

इस PDEK तकनीक का फायदा यह है कि इस हिस्से को किसी युवा कॉर्निया से लिया जा सकता है और ''यह एक 60 वर्ष के आदमी को गजब दृष्टि दे सकता है।''

अन्य नवाचार

डॉ. अग्रवाल नवीन प्रयोगों के लिए जाने जाते हैं। ''और जब हम बात कर रहे थे तब वे एक जैसे मरीज का ऑपरेशन कर रहे थे जिसके कॉर्निया की साइज 6 mm थी - हमारी साइज 11-12 mm होती है - और इसे माइक्रो कॉर्निया भी कहते हैं, जहाँ आँख की पुतली (iris) और आँख के पीछे का पर्दा (retina) विकसित नहीं होता। बहुत सारे चिकित्सकों ने इस मरीज को इलाज के लिए मना कर दिया था। उन्होंने दूसरी एक आँख का ऑपरेशन भी किया जहाँ भी कॉर्निया की साइज 6 mm थी, और वह मरीज इतना खुश था कि उसकी आँखों को रोशनी मिल गई और वह दूसरी आँख का भी ऑपरेशन करना चाहता था।'' डॉ सौन्दरी ने कहा।

डॉ. अग्रवाल इस बात से सहमत थे कि अधिकांश मरीज जिन्हें दूसरे चिकित्सक इलाज के लिए मना कर देते हैं, वे मुख्य अस्पताल में आते हैं, यह एक रेफरेल सेंटर है, जहाँ मरीज अंतिम उम्मीद से आते हैं। लेकिन डॉ. अग्रवाल यह भी कहते हैं कि मेरे सारे आइडिया मेरे नहीं हैं। वे तो केवल उन्हें प्रोत्साहन देता हूँ। उन्होंने वर्ष 2009 को स्मरण करते हुए बताया कि एक दुखी मातापिता अपने चार वर्षीय बेटे को लेकर आये। चिकित्सक उसकी आँख देकर सन्न रह गये क्योंकि आँख का हिस्सा बाहर निकला हुआ था जिससे वह अपनी आँख भी बन्द नहीं कर पा रहा था। कॉर्निया की सतह बहुत खुरदरी थी और वह भीषण दर्द से कराह रहा था। वह सो नहीं पाया और पूरी रात चिल्लाता रहा। इसके पहले वर्ष ही डॉ. अग्रवाल ने मोतियाबिन्द सर्जरी के लिए एक नई खोज की थी, जिसे ग्ल्यूड IOL कहा जाता है। (देखें बॉक्स)

डॉ. अग्रवाल बताते हैं कि सामान्यतः ऐसे केस में नेत्र प्रत्यारोपण नहीं किया जा सकता था क्योंकि आँख का बड़ा हिस्सा उभरा हुआ रहता है, यह विकृति कुपोषण या विटामिन-ए की कमी से आती है। बच्चे के माता-पिता कुली थे और तमिलनाडु में वेल्लोर से थे। जब उन्होंने वास्तविक आँखों की तस्वीर दिखाई तो वे इतनी विकृत थी कि आपको दूसरी तरह देखना पड़ा। वे जब बच्चे की मदद के

कॉर्निया का उचित प्रत्यारोपण

डॉ. एस. सौन्दरी ने यहाँ कॉर्निया प्रत्यारोपण पर हुई नवीन-खोजों के बारे में विस्तार से बताया। पहले के समय में कॉर्निया की जटिलता का इलाज सम्पूर्ण कॉर्निया का प्रत्यारोपण से किया जाता था। जब कोई नेत्र दानदाता उपलब्ध रहता तो ''चिकित्सक पूरे कॉर्निया को ही बदल देते थे, भले ही समस्या आँख के अग्र भाग में हो या पीछे की तरफ।'' इस प्रक्रिया में अन्दर की परत में 32 टांके लगते हैं - कॉर्निया में 15 परत होती हैं - मोतियाबिन्द की इस भारी सर्जरी के चलते किसी भी तरह का नुकसान हो सकता है। ''इसलिए हमने सोचा कि जब अग्र भाग ही शामिल है, तो कॉर्निया के पीछे के हिस्से को क्यों बदला जायें, और इसी तरह पीछे के साथ आगे के भाग को।''

इसका परिणाम केराटोप्लास्टी (कॉर्निया प्रत्यारोपण) थी, जिसे अग्र या पृष्ठ भाग में किया जा सकता है। इसका मतलब एक अमूल्य नेत्र दाता का कॉर्निया दो मरीजों के लिए और एक जोड़ी आँख चार मरीजों के लिए उपयोग में लाई जा सकती है। ठीक उसी तरह जैसे समस्त रक्त परिवर्तित करना या उसके कुछ घटक चढ़ाना।

जहाँ पृष्ठ भाग की परत अथवा अन्तःस्तर (Endothelial) क्षतिग्रस्त है, जो 5-10 माइक्रोन बहुत ठीक है, वहाँ लोगों ने झिल्ली के अन्तःस्तर की केराटोप्लास्टी (Descemet's Membrane Endothelial) शुरू कर दी है। लेकिन यह टिश्यू बहुत बारीक होता है, और जब इसे हटाते हैं तो यह फट जाता है, जिसे संभालना बहुत मुश्किल होता है। इसलिए हम अब PDEK (Pre-Descemet's) तकनीक काम में लेते हैं, जिसमे समीपस्थ एक दूसरी परत ली जाती है, जो मोटी होती है, और फटती भी नहीं हैं। जिसमें कुशलता से ग्राफ्टिंग करके आँखों में मोड़कर स्थापित किया जाता है। फर्क केवल इतना है, जैसे फाइवस्टार चॉकलेट का बाहर और अन्दर का कवर।

बारे में विचार कर रहे थे, तब वरिष्ठ विशेषज्ञ डॉ सूज़ान जैकब ने सुझाव दिया कि आप ग्ल्यूड IOL प्रक्रिया से काम क्यों नहीं कर रहे, जिसकी आपने पिछले साल खोज की है। एक नये विचार ने जन्म लिया और उसे सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया गया।

यह आसान कार्य नहीं था। चार सदस्यीय शल्य चिकित्सकों की टीम ने 4 घण्टे तक ऑपरेशन किया और ग्ल्यूड लैंस तकनीक में सुधार कर उस बालक की दृष्टि बहाल की। एक दानदाता की आँख से श्वेत पटल (sclera) और कॉर्निया को तराशा गया और इसे जैविक ग्राफ्ट के रूप में काम में लेकर कृत्रिम रूप से झिल्ली बनाकर श्वेत पटल पर चिपकाया गया। आँख के अग्र भाग को सही स्थान पर रखने के लिए रक्त-उलाद से तैयार टिश्यू-ग्लू का उपयोग किया गया, तब आँख बन्द हुई।

इससे न केवल बच्चे का चेहरा नाटकीय रूप से सही हो गया बल्कि उसकी माँ ने कहा कि ''चार महिने में वह पहली बार रात में सोया है, वरना पूरे समय दर्द से कराहता रहता था।''

अंत में, कुछ भी असंभव नहीं है लेकिन आपको लोगों को प्रेरित करते और चुनौती देते रहना है।

28 वर्ष बाद मिली दृष्टि

तमिल के प्रसिद्ध संगीत निदेशक शिवाजी गणेशन की आँखें उनके एक प्रशंसक द्वारा भेजे गए डाक बम से क्षतिग्रस्त हो गई थी, दांयी आँख की रोशनी चली गई और बाँयी आँख भी आंशिक रूप से खत्म हो गई थी, वर्ष 2014 में उनकी भी ग्ल्यूड IOL सर्जरी की गई, और वे 28 वर्ष बाद देखने लायक बन पाये।

डॉ. अग्रवाल ने कहा, ''यह हमारा पारिवारिक व्यवसाय नहीं है, यह एक पेशेवर संस्था है, जहाँ मैं नये विचारों को अधिक से अधिक बढ़ावा देता हूँ। कोई भी व्यक्ति जो स्मार्ट है, और सीखना चाहता है, उसका यहाँ सदा स्वागत है।'' वे अग्रवाल समूह को वर्ष 2020 तक 150 अस्पतालों वाला विश्वस्तरीय समूह बनाना चाहते हैं। उनका कहना है कि ''बाधायें एक अच्छा मैन पावर है। यह सामान्य बात है कि लोग हमारे पास हमारे ब्रांड के कारण आते हैं और मेरे साथ काम करके ग्ल्यूड IOL, PDEK जैसी तकनीक सीखते हैं। मेरा मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति के भीतर प्रतिभा है। यदि आप उन्हें अवसर प्रदान करेंगे तो वे आगे बढ़ेंगे। मैं अपने डॉक्टरों से कहता हूँ कि ''आउट ऑफ बॉक्स'' सोचो।

मेरे पास अपने क्रेजी विचारों के साथ आओ और हमें उनकी कोशिश करनी चाहिए। क्योंकि अंत में कोई भी चीज मुश्किल नहीं है, लेकिन आपको, उन्हें प्रेरित करते और चुनौती देते रहना है।

उनके प्रयासों को धन्यवाद, कि मोजाम्बिक में किसी भी हाल में प्रत्यारोपण की इजाजत नहीं थी, वहाँ कॉर्निया प्रत्यारोपण की अनुमति दे दी गई। उन्होंने मुस्कुराते हुए बताया कि ''हमने मोजाम्बिक में उनकी सरकार को यह दिखाकर नैत्र प्रत्यारोपण का कानून बदलवा दिया कि लोगों की मदद किस तरह हो सकती है। अब मोजाम्बिक में PDEK भी होती है।''

उन्हें बुजुर्ग रोगियों को स्नेह और धैर्य के साथ सँभालते देख मुझे उनके पिता, डॉ जे अग्रवाल की याद आती है जिनकी मुस्कान रोगी के डर और दर्द को आधा ख़तम कर देती थी।

चत्र : रशीदा भगत

एन कृष्णामूर्ति द्वारा रूपरेखा

Enjoy the pleasure of our Luxury Italian shoes that blend tradition, inner comfort innovation, while supporting **Rotary International.**
See the collection and discover every detail on **www.grandinishoes.it**

Walk well. Support Rotary

Shop at www.grandinishoes.it

बेंगलुरु को हरा बनाना

जयश्री

गार्डन सिटी के नाम से पुकारे जाने वाला बेंगलुरु तेजी से उसकी हरियाली की छतरी खोता जा रहा है; ''राजधानी एक हरा-भरा स्वर्ग हुआ करती थी, आसपास के दक्षिणी मैदानों की गर्मी से राहत खोजते हुए परिवारों का पसंदीदा आश्रयस्थल,'' रोटरी क्लब बैंगलोर ऑर्चर्ड, मंडल 3190, के अध्यक्ष अलीमुल्ला खान दुःख प्रकट करते है। सड़कों को चौड़ा करने और शहर के विस्तार को सुगम बनाने के लिए कई हज़ार पेड़ों को काट दिया गया।

शहर की खोई हुई हरियाली को फिर से हासिल करने के प्रयास में, रोटेरियनों ने दो स्थानों पर सामाजिक वानिकी की, पौधारोपण किया और बीज की गेंदों को बोया। वह कहते है, शहर में जगह की कमी के कारण, हमने शहर के बाहरी इलाकों को चुना। इसके अलावा, आसपास के क्षेत्र को हरा-भरा रखने से पारिस्थितिकी संतुलन भी बना रहेगा।

स्थानीय स्कूलों, निगमों और पंचायतों ने भी क्लब के साथ साझेदारी की है। वन विभाग ने पौधे और बीज की गेंदे उपलब्ध करवाई। बीज की गेंदों को बनाने में स्कूली बच्चे भी शामिल थे।

पहले चरण में, कोलार के अरबिकोथनूर गाँव की एक छोटी पहाड़ी गुदनापुरा में 20 एकड़ से अधिक के क्षेत्र में लगभग 500 स्वयंसेवकों ने एक हफ्ते तक 10,000 पौधे रौंपे और 30,000 बीज की गेंदों को बिखराया।

एक अन्य स्थान कोलार गोल्ड फ़ील्ड्स (केजीएफ) पर, 100 एकड़ से अधिक के क्षेत्र में 2 दिनों तक 1,500 स्वयंसेवकों ने 45,000 पौधे रौंपे और 3,00,000 बीज की गेंदों को बोया। यह इलाका उस क्षेत्र का हिस्सा है जिसे 'साइनाइड डंप्स' के नाम से जाना जाता है और जो केजीएफ का प्रतीक है। केजीएफ की सोने की खदानों ने कई मिलियन टन अवशेष उत्पन्न किया जिसे 'साइनाइड डंप्स' कहा जाता है और जो सोने को उसके अयस्क से अलग करने के लिए उपयोग किये जाने वाले साइनाइड के गारा कचरे के जमाव से बनता है। कई दशकों के दौरान, जहरीले रसायन के महीन जमाव ने सख्त होकर साइनाइड डंप्स का रूप ले लिया है जिसने केजीएफ क्षेत्र को घेरा हुआ है और एक बड़ा पर्यटन आकर्षण है। फिर भी, पर्यावरण के लिए वे एक बड़ा खतरा है। ढेर से उठने वाली बारीक धूल के कारण कई लोग साँस की बीमारी से पीड़ित है। आर्सेनिक तत्व वनस्पति एवं जानवरों को भी प्रभावित कर रहे है।

रोटरी क्लब बैंगलोर ऑर्चर्ड के सदसस्य।

शुक्र है कि इस वर्ष अच्छी बारिश हुई और हम सभी उस क्षेत्र पर हरियाली पनपती देख खुश है जिस पर हमने अभी काम किया था।

अलीमुलल्ला खान

रोटरी क्लब बैंगलोर आर्चर्ड के अध्यक्ष

जब क्लब के सदस्य नील माइकल जोसफ और रविशंकर डी. ने पौधारोपण के लिए केजीएफ को अगले स्थल के रूप में चुनने का सुझाव दिया, तो खान ने तुरंत इसे स्वीकार कर लिया। उन्होंने कहा, ''हमने लगभग एक महीने तक जेसीबी से इलाके की सफाई की और पौधारोपण के लिए धरती को तैयार करने के लिए उसे वानस्पतिक खाद से भरा।'' बीज की गेंदों को बोने के अलावा, स्थानीय वनस्पतियों जैसे पोंगामिया, नीम, वनकुमारी और कमार को भी रौंपा गया।

क्लब ने वर्ष भर में एक लाख पौधों और पाँच लाख बीज की गेंदों को बोने के एक हरित अभियान की योजना बनाई है। खान ने कहा, ''शुक्र है कि इस वर्ष अच्छी बारिश हुई और हम सभी उस क्षेत्र पर हरियाली पनपती देख खुश है जिस पर हमने अभी काम किया था।'' वह पौधारोपण मुहीम के अगले दौर की तैयारी कर रहे है - इस बार केजीएफ क्षेत्र में 10,000 पौधे और ज्यादा बीज की गेंदों को बोने की योजना है।■

शांति का प्रसार

जयश्री

आइये, दिल से दोस्ती की शुरुआत करें और अपने सम्बन्धों को बेहतर बनाते हुए शांति का प्रसार करें। सिर्फ एक मुस्कुराहट से होती है शांति की शुरुआत जिसे किसी भाषा की ज़रुरत नहीं होती और जिस से एक बड़ा परिवर्तन देखने को मिल सकता है, पूर्व रोटरी इंटरनैशनल प्रेसिडेंट गैरी हुआंग ने रोटरी पीस फ़ेलोशिप कांफ्रेंस (रोटरी शांति फ़ेलोशिप सम्मलेन) में ये कहा जिसमें नौ मंडल - 2981, 2982, 3000, 3020, 3202, 3211, 3212, 3231 3232 ने भाग लिया।

चीनी दार्शनिक कंफ्यूशियस का उद्धरण देते हुए उन्होंने कहा की दुनिया बदलने की शुरुआत परिवार से होती है। उन्होंने उपस्थित दर्शकों से अपना कीमती समय परिवार के साथ व्यतीत करने का आग्रह किया।

जयश्री

(बाएं से) पीडीजी आईएसएके नाज़र, डीजी गण व्यंकटेश चन्ना, पी गोपालकृष्णन, पीआरआईपी गैरी हुआंग, डीजी गण आर. श्रीनिवासन और पीएम शिवशंकरन, सद्गुरु जग्गी वासुदेव (दाए से तीसरे) के साथ रैली फार रिवरस अभियान में भाग लेते हुए।

हमें शांति का प्रसार करना चाहिये । धन्यवाद, खेद है, शुभकामनाएं जैसे संदेशों से सकारात्मक ऊर्ज़ा प्रवाहित होती है।

डॉ. हुज़

सीईओ, वार्कहार्ड फाउंडेशन

शान्ति राजदूत पुरस्कार

उन्होंने रोटरी अंतर्राष्ट्रीय निदेशक सी. भास्कर के साथ रोटरी पीस अम्बैसडर पुरस्कार ,वोकहार्ड फाउंडेशन के सी.ई.ओ. और द पीस मिशन के चेयरमैन डॉ. हुज़ को प्रदान किया। आर.सी. मुम्बई, बे व्यू के सदस्य हुज़ ने कहा "हमें शांति का प्रसार करना चाहिये । धन्यवाद, खेद है, शुभकामनाएं जैसे संदेशों से सकारात्मक ऊर्ज़ा प्रवाहित होती है।"

शान्ति तुम्हारे भीतर है

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण था ईशा फाउंडेशन के सद्गुरु जग्गी वासुदेव का भाषण जो न केवल गाम्भीर्य लिए था बल्कि हास्य और व्यंग्य से भी भरपूर था। उन्होंने कहा, "शांति भीतर से आनी चाहिए। अगर हमारा अपना ही मन शांत नहीं है तो इस दुनिया को शांतिपूर्ण कैसे बनाएंगे। " लोग विश्व शांति की बात करते हैं पर उसके प्रति कोई प्रतिबद्धता नहीं है। "तुम अपनी स्थिति के लिए खुद ज़िम्मेदार हो। अगर ये बात समझ में आ जाये तो फिर तुम चैन से रह सकते हो। दु:ख और सुख दोनों तम्हारे अंदर ही घटित होता है।"

नदियों के लिए रैली

वासुदेव ने रोटेरियंस से नदियों की चिंताजनक स्थिति के बारे में भी जागरूकता फैलाने की अपील की। उन्होंने बताया, "2030 तक हमारे पास जीने के लिए सिर्फ 50 प्रतिशत पानी बचेगा। अगर अभी से कोई कदम नहीं उठाये गए तो हम आने वाली पीढ़ी को अभाव और संघर्ष की विरासत ही दे कर जाएंगे।" हमारी नदियों को पुनर्जीवित करने के लिए एक बहुत ही आसान, लेकिन प्रभावशाली उपाय है कि सिर्फ नदी के किनारों के साथ साथ सघन वृक्षारोपण किया जाए, और उन्होने 16 राज्यों में चलाये जा रहे विशाल अभियान 'रैली फार रिवरस' में जुड़ने और सक्रिय भाग लेने के लिए कहा, जो 3 अक्टूबर को दिल्ली में संपन्न हो रहा है।

रोटेरियन जे वेणुगोपाल ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की और वहां पूर्व रो ई निदेशक पी टी प्रभाकर, डीजी आर श्रीनिवासन और पूर्व डीजी आईएसएके नाज़र भी सम्मिलित हुए।■

भूले-बिसरों को इज्जत देना

रशीदा भगत

दिल्ली साउथ के रोटरी क्लब ने 'दी अर्थ सेव्यर्स फाउंडेशन' के साथ साझेदारी की है जो एक गुरुकुल चलाता है जिसमें लगभग 400 वरिष्ठ नागरिकों और वंचित, छोड़ी हुई, एवं बेघर महिलाओं, जिनमें से कुछ बलात्कार एवं यौन उत्पीड़न की शिकार है, की देखभाल की जाती है। फरीदाबाद के निकट गुडगाँव-फरीदाबाद मार्ग पर बंधवारी गाँव में स्थित इस संस्थान का एक बचाव केंद्र भी है जो मानसिक रूप से अक्षम लोगों का ध्यान रखता है। गुरुकुल के भीतर, बेसहारा महिलाओं का ध्यान रखने वाले जिया नारी निकेतन ने अनेक पर्यावरणीय पहलों की शुरुआत की है।

महिलाओं को आश्रय एवं भोजन बिल्कुल मुफ्त दिया जाता है, और एक मासिक वेतन के साथ उन्हें कुछ रोजगार के अवसर भी मिलते है।

क्लब के सचिव प्रदीप बहरी कहते है कि यह संस्थान एक अंतर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त गैर-सरकारी संगठन है जिसकी स्थापना वर्ष 2008 में जाने-माने सामाजिक कार्यकर्ता और पर्यावरणविद रवि कालरा ने की थी। छोड़े हुए वृद्ध लोगों की देखभाल करने के लिए एक वृद्धाश्रम के रूप में शुरू हुआ यह संस्थान पर्यावरण की रक्षा के लिए भी हर प्रयास कर रहा है। ''रोटरी के मूल्यों की तरह ही इसकी मूल विषय-वस्तु - मानवता की सेवा और पर्यावरण की सुरक्षा - को जानकर, हमारे क्लब ने उनके प्रयासों में मदद करने का फैसला लिया, क्योंकि हमने इसके निस्वार्थ और समर्पित कर्मचारियों को सामुदायिक कल्याण के लिए दिन-रात काम करते हुए पाया।''

बेसहारा महिलाओं एवं निःशक्त लोगों के अलावा, वर्तमान में 350 से अधिक छोड़े हुए वरिष्ठ नागरिक गुरुकुल में स्थायी रूप से निवास कर रहे है। सभी सहवासियों को बुनियादी सुविधाओं जिनमें शयनकक्ष आवास, स्वच्छतापूर्वक तैयार भोजन, चिकित्सीय सुविधाएं और दिन-प्रतिदिन की आवश्यकताएं शामिल है को पूर्णतः निःशुल्क प्रदान किया जा रहा है।

दिल्ली साउथ के इनर व्हील सदस्य गुरुकुल के निवासीयों को भोजन प्रदान करते हुए।

क्लब के पूर्व अध्यक्ष सोम दुआ कहते है, भारत में सड़कों पर बड़ी मात्रा में मानसिक रूप से नि:शक्त लोगों को देखना एक सामान्य, हालाँकि दुखदाई दृश्य होता है। ''अक्सर, उन्हें बदबूदार कचरे से खाना खाते हुए, वर्षों से बिना नहाये हुए, सर पर बिना किसी छत के और शरीर पर फटे हुए या बिना कपड़ों के उन्हें नंगे पाँव घूमते हुए देखा जाता है।'' इस दुर्दशा से द्रवित होकर संस्थान ने ऐसे लोगों के लिए एक बचाव केंद्र की स्थापना की है।

इन सुविधाओं में सहवासियों के जीवन को अधिक आरामदेह बनाने के लिए संस्थान के साथ हाथ मिलाने पर, क्लब ने सबसे पहले सहवासियों को सिले हुए कपड़े बांटे क्योंकि ''तब इसकी सबसे अधिक आवश्यकता थी। बाद में, सहवासियों के आवास को देखने पर एवं गर्मियों में सहवासियों को जलाती हुई टीन की छतों से राहत दिलाने के संस्थान के अनुरोध पर, हमारे क्लब द्वारा तापावरोधन सामग्री का रोल एवं आवरण प्रदान किये गए,'' दुआ आगे कहते है। फिर निवासियों के लिए ठण्ड बर्दाश्त करने योग्य बनाने के लिए कम्बल बांटे गए। फिर विशेष अवसरों पर विशेष भोजन आया जिसमें निवासियों को सामान्य भोजन के अतिरिक्त विशेष व्यंजन मिले। उनके क्लब के व्यक्तिगत सदस्यों एवं इनर व्हील दिल्ली साउथ के सदस्यों ने गुरुकल को बेहतर तरह से चलाने के लिए संस्थान को दान दिया, वह आगे कहते है।

अर्थ सव्यरवस फाउंडेशन के संस्थापक रवि कलरा को इनर व्हील सदस्यों ने सम्मानित किया।

हमारे समाज के इन भूले-बिसरे प्राणियों को तन ढकने के लिए अच्छे कपड़े देकर और उनका पोषण करने के लिए भोजन देकर क्लब इनके जीवन के अंतिम दिनों में इन्हें थोड़ी इज्जत देने का प्रयास कर रहा है। हम आश्वस्त है कि हम परिवर्तन लायेंगे।

सोम दुआ
पूर्व अध्यक्ष, रोटरी कल्ब दिल्ली साउथ

बहरी कहते है कि संस्थान के उनके दौरों में से एक दौरे के दौरान, ''हमने देखा कि महिला आवास से लगा हुआ शौचालय भवन पूरी तरह से गिर चुका था क्योंकि उसका निर्माण जल्दबाजी में मौजूदा कच्ची नींव पर किया गया था। हमने 8 शौचालय वाले शौचालय भवन के रूप में इसका फिर से निर्माण करने का निश्चय किया। प्रसिद्व वास्तुकार रोटेरियन सत बावा द्वारा मुफ्त में नक्शा तैयार किया जा रहा है। यह राशि क्लब के सदस्यों और मंडल 3011 के मंडल अनुदान के मध्यम से आएगी।''

दुआ कहते है, ''हमारे समाज के इन भूले-बिसरे प्राणियों को तन ढकने के लिए अच्छे कपड़े देकर और उनका पोषण करने के लिए भोजन देकर क्लब इनके जीवन के अंतिम दिनों में इन्हें थोड़ी इज्जत देने का प्रयास कर रहा है। हम आश्वस्त है कि हम परिवर्तन लायेंगे।''

बहरी कहते है, संक्षेप में, रोटरी क्लब दिल्ली साउथ के रोटेरियनों के लिए यह एक बहुत ही संतोषप्रद प्रयास रहा है। ''प्लेट पकड़े हुए झुर्री भरे हाथ, मानसिक रूप से विकलांग लोगों की आँखों के शून्य भाव और उन त्यागे हुए एवं अपाहिज लोगों की वो आभारी आँखें जिन्होंने उनका बचा हुआ शय्याग्रस्त एवं अपाहिज जीवन को थोड़ा इज्जत से जीने के लिए आख़िरकार एक घर ढूंढ लिया है, इस जगह के कर्मचारियों को निरंतर काम करने के लिए प्रेरित करते है। यही वह कारण था जिसने हमें और हमारे इनर व्हील को इस नेक काम में साझेदार बनने के लिए आकर्षित किया।''■

छात्रावास में महिलाएं।

मदद के लिए हमेशा तैयार - रोटेरियन

रशीदा भगत

रोटेरियन कभी भी यह कहने से नहीं थकते कि कैसे इस बिरादरी से संबंधित होना उन्हें ना केवल भाई-चारे का बल्कि सुरक्षा का भी एहसास कराता है। किसी सुदूर स्थान पर हवाईअड्डे पर फंसे रोटेरियनों के बच्चों की मदद तुरंत ही एक रोटरी मंडल गवर्नर या एक क्लब के अध्यक्ष द्वारा की गयी जो उस शहर में एक अन्य नेतृत्वकर्ता से मिलने जा रहे थे।

इस दशहरा पर भी, रोटरी ने, एक बार फिर, अच्छाई करने की एवं कठिनाई में फंसे किसी व्यक्ति की मदद करने की उसकी शक्ति को अनावृत किया। कुछ दिन पहले फेसबुक पर मैंने विद्योत्तमा शर्मा का एक पोस्ट देखा जो मुंबई में एक कंटेंट क्रिएशन कंपनी चलाती है एवं मंडल 3141 के डीजी प्रफुल शर्मा की पत्नी है। उसकी शुरुआत इस प्रकार थी: ''रोटरी, आपके पास असीम शक्ति है एवं एक कमाल का तंत्र है। मैं इस गैर सरकारी संगठन की बहुत बड़ी प्रशंसक हूँ। धन्यवाद।''

उन्होंने आगे लिखा कि एक शाम जब वे समारोह में शामिल होने के लिए बाहर थे, उन्होंने ध्यान दिया ''प्रफुल पल-पल में वहाँ से एक कोने में जाकर आवेश में फ़ोन कर रहे थे।'' हालाँकि उन्होंने मंडल 3240 के डीजी सुनील सराफ का नाम काफी बार सुना था, फिर भी वह उन्हें परेशान नहीं करना चाहती थी। लेकिन बार-बार फ़ोन लगाने के 90 मिनट बाद, शर्मा ने बताया कि इस सब का संबंध गुवाहाटी में हुई एक समस्या से है।

शर्मा को रोटरी क्लब मुंबई नोवा के अध्यक्ष पुनीत बतरा का फ़ोन आया था, जिन्होंने बताया कि उनके क्लब के एक सदस्य ने उन्हें असम की राजधानी में कुछ तत्काल चिकित्सीय सहायता के लिए फ़ोन लगाया है। उनके कर्मचारी की बहन ने कुछ दिन पहले एक बच्चे को जन्म दिया है और नवजात को गंभीर पीलिया हो गया है और उसे तत्काल रक्त-आधान की जरूरत है। लेकिन उस नवजात लड़के का रक्त समूह ओ-नेगेटिव है, और स्थानीय रक्त बैंक में वह उपलब्ध नहीं है। क्या शर्मा गुवाहाटी में कुछ रोटेरियनों को ढूँढ सकते है जो एक ओ-नेगेटिव रक्त समूह के दानकर्ता को तुरंत अस्पताल लाने की तत्काल मदद कर सके? बच्चे का जीवन खतरे में था।

शर्मा तुरंत ही रोई मंडल 3240 के गवर्नर सुनील सराफ के संपर्क में आए, जिन्होंने रोटरी क्लब गुवाहाटी ईस्ट के अध्यक्ष रोहित सरावगी से संपर्क किया। ''वह रविवार की शाम थी, और दशहरा उत्सव था। हम घर पर थे और डीजी सराफ ने मुझे किसी ओ-नेगेटिव रक्त समूह की मांग वाले व्यक्ति का फ़ोन आने की आशा रखने को कहा।'' उन्हें फ़ोन आया, और वह फुर्ती से अस्पताल पहुंचे, अपनी पत्नी नुपुर को लेकर जिसका रक्त समूह भी ओ नेगेटिव था।

सरावगी ने *रोटरी समाचार* को बताया, ''अस्पताल पहुँचने पर, हमें डॉक्टरों ने बताया कि बच्चे की हालत में सुधार आ गया है और अभी वह खतरे से बाहर है। उन्होंने कहा, अगर आप एक दिन पहले आए होते तो मैंने तुरंत ही आपका खून ले लिया होता। लेकिन उन्होंने हमें उपलब्ध रहने के लिए कहा, और कुछ ऐसे टेस्ट करने के लिए दूसरे अस्पताल भेजा जिसकी सुविधा उस अस्पताल में नहीं थी जहाँ बच्चा, जो एक निम्न मध्यम-वर्गीय परिवार से था, का इलाज चल रहा था।''

जब तक वे घर पहुँचे 11 बज चुके थे। मगर भले ही खून की आवश्यकता नहीं थी (''फेसबुक पर यह कहानी रक्त दान किया गया लिखकर पोस्ट की गयी है, इससे पहले कि मैं बता पाती कि उसकी आवश्यकता नहीं पड़ी'') फिर भी वह अस्पताल एवं शिशु-चिकित्सक के संपर्क में रहे, ''बच्चे की प्रोग्रेस रिपोर्ट ली और उन रिपोर्टों की जांच मेरी बहन से करवाई जो एक पैथोलोजिस्ट है। और उसने प्रमाणित किया कि छोटा बच्चा अच्छी तरह स्वस्थ हो रहा है और उसे रक्त-आधान की जरूरत नहीं पड़ेगी।''

उन्होंने तब तक जांच करना ज़ारी रखा जब तक बच्चे को आईसीयू से सामान्य वार्ड में स्थानांतरित नहीं किया गया।

भले ही आखिर में रक्त आधान की आवश्यकता ना पड़ी हो, जो बात दिल को छूती है वह यह तथ्य है कि मुंबई में डीजी शर्मा को लगाए गए पहले फ़ोन के 90 मिनट के अंदर, गुवाहाटी में एक रोटेरियन मदद करने के लिए अस्पताल पहुँच गया।■

रोटरी, आपके पास असीम शक्ति है एवं एक कमाल का तंत्र है। मैं इस गैर सरकारी संगठन की बहुत बड़ी प्रशंसक हूँ। धन्यवाद।

विद्योत्तमा शर्मा, मंडल 3141 के डीजी प्रफुल शर्मा की पत्नी

जीने का दूसरा मौका

जयश्री

सितंबर में पटना में जन्मजात दिल के विकारों से पीड़ित बच्चों के लिए आयोजित विशाल जांच शिविर के बाद (*नीले पड़ते बच्चों के जीवन को मिलती साँसे* - अक्टूबर 2017) मंडल 3250 ने मरीज बच्चों को सर्जरी के लिए दिल्ली के फोर्टिस एस्कॉर्ट्स अस्पताल भेजना शुरू कर दिया है। शिविर में तब, डीजी विवेक कुमार ने आश्वासन दिया था कि सभी बच्चे जिन्हें तुरंत सर्जरी की आवश्यकता है उनका एक वर्ष के अंदर दिल्ली के अस्पताल में उपचार किया जाएगा।

दिल्ली के फोर्टिस अस्पताल के बाल हृदय रोग विशेषज्ञों ने 300 से अधिक बच्चों की जांच की और 187 बच्चों को तत्काल सर्जरी के लिए चुना गया।

रेहन निज़ाम अपने दिवाली उपहार के साथ।

यह जीवन रक्षक प्रयास रोटरी के गिफ्ट ऑफ़ लाइफ (GoL) कार्यक्रम द्वारा प्रायोजित है। बच्चों के उपचार का पूरा खर्च GoL ट्रस्ट द्वारा उठाया जाएगा। तीन बच्चे - रेहान निज़ाम, नीतिश कुमार और गोलू - को फोर्टिस अस्पताल में भर्ती किया गया। 13 अक्टूबर को रेहान की सुधारात्मक सर्जरी की गयी, जबकि नीतिश और गोलू की सर्जरी एक हफ्ते बाद की जाएगी। शुरुआत में इन बच्चों को रोटरी क्लब मिथिला धरबंगा द्वारा प्रारंभिक शिविर में पहचाना गया था। क्लब सदस्यों ने पैसा इकठ्ठा किया और उसे इन बच्चों के माता-पिता को दिल्ली में आकस्मिक व्ययों को पूरा करने के लिए दिया।

दिवाली तक, रेहान एक स्वस्थ दिल के साथ एक नई जिंदगी शुरू करने के लिए तैयार था। क्लब के फेसबुक पेज पर अस्पताल के गलियारे में उसका सतर्कतापूर्वक चलने का एक पोस्ट था, जिससे मंडल ने ढेर सारा आशीर्वाद और प्रशंसा बटोरी। उसका एक अन्य पोस्ट, जिसमें वह शर्मीली मुस्कान दिखाता हुआ एक लाल गिफ्ट पैक पकड़े हुए था, में कमेंट्स थे जैसे ''तुम्हारी जिंदगी की नई ताल के साथ इस दिवाली का मजा लो और भगवान आपका भला करे रेहान बेटा।'' दिवाली का उत्सव मनाने के लिए अस्पताल प्रबंधन ने बच्चों को उपहार देकर खुश किया।

त्रेङ्क के राज्य समन्वयक और रोटरी क्लब गिरिडीह के सदस्य एस. पी. बगारिया कहते है, नवम्बर के पहले सप्ताह तक दो अन्य बच्चों को फोर्टिस भेजा जाएगा। डीजी विवेक कुमार कहते है, ''दिसंबर के अंत तक अस्पताल ने 50 बच्चों का उपचार करने का आश्वासन दिया है। बच्चों का एवं उनकी देखभाल करने वालों का दिल्ली तक का यात्रा-खर्च मंडल उठाएगा।''■

पोलियो से बचाव के लिए एक रैली

टीम रोटरी न्यूज़

विश्व पोलियो दिवस मनाने के लिए तथा भारत को निरंतर पोलियो मुक्त बनाएं रखने की आवश्यकता पर जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से, मुलुंड और मुंबई भण्डुप के रोटरी क्लबों द्वारा संयुक्त रूप से मुंबई में एक प्रभावशाली मोटर साइकिल रैली का आयोजन किया गया। रंग और चमक दोनों तथा निश्चित रूप से युवाओं की ऊर्जा से रैली दमक रही थी, जहां दोनों क्लबों के 200-करीब रोट्रेक्टर्स उपस्थित थे।

मुलुंड पश्चिम में फायर ब्रिगेड स्टेशन से रैली शुरू हुई और मुलुंड ईस्ट के वेज कॉलेज में समाप्त होने से पहले क्षेत्र के चारों ओर चक्कर लगाया। ''भारतीय रोटरियनों ने भारत को पोलियो मुक्त बनाने के लिए इतनी मेहनत की है, और इस तथ्य के संबंध में जागरूकता उत्पन्न करना जारी रखना होगा कि दुनिया, विशेष रूप से हमारे पडोसी पाकिस्तान और अफगानिस्तान अभी तक पोलियो मुक्त नहीं हैं और अगर हम सतर्क नहीं रहते हैं तो पोलियो भारत में वापस लौट सकता है,'' रोटरी क्लब मुलुंड के एक सदस्य पीआरआईडी अशोक महाजन ने कहा।

आरआई मंडल 3141 डीजी प्रफुल्ल शर्मा और दोनों क्लबों के लगभग 40 से 50 रोटरियनों और इनर व्हील के सदस्यों ने कार में सवार होकर रैली में भाग लिया।■

टीआरएफ मैचिंग अनुदान के माध्यम से भारत को टीबी मुक्त होने में मदद करना

टीम रोटरी न्यूज़

वर्ष 2025 तक भारत को टीबी मुक्त बनाने के अपने लक्ष्य की दिशा में, रोटरी इंडिया नेशनल टीबी कंट्रोल कमेटी ने तपेदिक और फेफडे के रोगों के यूनियन के साथ भारत सरकार से हाथ मिलाया है।

रोटरी फाउंडेशन की ओर से प्रदत्त वैश्विक अनुदान की मदद से, रोटरी क्लब मद्रास साउथ वेस्ट, और आरआई मंडल 3232 के रोटरी क्लब मद्रास सेंट्रल ने आरआई मंडल 6880 अलबामा, यूएस, के रोटरी क्लब फेयरहोप के साथ साझेदारी में एक मोबाइल वैन उपलब्ध कराया है, जो टीबी - एक ऐसी बीमारी जिसकी वजह से भारत में हर तीन मिनट में एक व्यक्ति की मौत हो जाती है - के रोगियों की जाँच करने के लिए आवश्यक उपकरणों से सुसज्जित है।

भूतपूर्व अध्यक्ष डा. हसमुद्दीन पापा, रोटरी इंडिया नेशनल टीबी कंट्रोल कमेटी के सदस्य, ने मोबाइल स्क्रीनिंग वैन का इस्तेमाल करते हुए स्वास्थ्य शिविर की औपचारिक उद्घाटन करने के लिए चेन्नई में एक बैठक का आयोजन किया। इस कार्यक्रम के दौरान 150 से अधिक पुलिसकर्मियों की जांच की गई और पीआरआईडीएस अशोक महाजन और पीटी प्रभाकर ने इस कार्यक्रम की सराहना की।■

स्वस्थ देने की शक्ति

जयश्री

रोटरी क्लब जबलपुर, मंडल 3261, द्वारा आयोजित ठ-क-ढ स्वास्थ्य शिविर ने एक दिन में लगभग 10,000 लोगों के जीवन को प्रभावित किया। मध्य प्रदेश के जबलपुर से 35 किमी दूर स्थित एक नगर कटंगी में आयोजित शिविर में पड़ोस के तीन छोटे गाँवों के ग्रामीण उमड़ पड़े। क्लब के अध्यक्ष मोहित चटर्जी कहते है, ''इन सभी गाँवों में उपयुक्त चिकित्सीय सुविधा की कमी है और सबसे नजदीकी अस्पताल जबलपुर में है जहाँ बस से जाने के लिए मरीज को रु. 40 खर्च करने पड़ते है। उन में से बहुत से किसान है और उनकी आय का स्तर इतना कम है कि वे इस खर्च को भी वहन नहीं कर सकते, तो अस्पताल के बिल को तो छोड़ ही दीजिये।''

पीडीजी विवेक तनखा RAHAT शिविर में पंजीकरण का निरीक्षण करते हुए।

यह मंडल का 11वां RAHAT शिविर है। चटर्जी ने ध्यान दिलाया कि 2010 में मंडला में हुए शिविर ने 58,000 लोगों की सेवा की थी वहीं 2016 में आयोजित शहडोल शिविर में 44,000 मरीजों का उपचार किया गया। वह कहते है, ''वे सभी हफ्ते भर के शिविर थे जबकि यह वाला एक दिवसीय शिविर था। इन चिकित्सीय शिविरों के पीछे पीडीजी विवेक तनखा का हाथ है।''

अस्सी वर्षीय बूढ़े देवगवा के चरण लाल यादव एक ईएनटी सर्जन के कमरे से बाहर आते वक्त एक दंतहीन मुस्कान देते है। वह प्रसन्न है कि डॉक्टरों ने उनकी आँखों एवं कानों की लंबे समय से हो रही पीड़ाओं का उपचार बताया है। वह कहते है, ''मेरी आँखों से लगातार पानी निकलता है और मुझे मेरे कानों में एक गूँज सुनाई देती रहती है। डॉक्टरों ने मुझे दवाइयाँ दी है और मुझे एक महीने बाद सरकारी अस्पताल में आकर उनसे मिलने के लिए कहा है।''

उन में से बहुत से किसान है और उनकी आय का स्तर इतना कम है कि वे इस खर्च को भी वहन नहीं कर सकते, तो अस्पताल के बिल को तो छोड़ ही दीजिये।

मोहित चटर्जी
रोटरी क्लब जबलपुर के अध्यक्ष

AIIMS और दिल्ली के मैक्स अस्पताल के 15 डॉक्टर, और जबलपुर सरकारी मेडिकल कॉलेज, शेल्बी, मन्नूलाल एवं ग्लोबल अस्पतालों के 65 डॉक्टरों ने अपनी सेवाएं दी।

अधिकतर लोग गठिया एवं दांत संबंधित विकारों से पीड़ित थे। चटर्जी कहते है, ''इस क्षेत्र के भू-जल में भारी मात्रा में फ्लोराइड तत्व मौजूद है और इसका गाँव वालों की सेहत पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।'' महिलाओं एवं बच्चों में कुपोषण भी काफी अधिक है। उन्होंने बताया, हालाँकि सरकार ने आंगनवाड़ियों में 14 डॉक्टरों की नियुक्ति की है, फिर भी उन में 12 ड्यूटी करने नहीं आते है और दो डॉक्टर कभी-कभार आकर, रजिस्टर में हस्ताक्षर करके चले जाते है।

चिकित्सीय सुविधाओं की कमी के कारण बच्चे घर पर जन्म लेते है और स्त्रीरोग चिकित्सकों ने बहुत सी ऐसी महिलाओं का उपचार किया जिन्हें गैर-चिकित्सीय सी-सेक्शन प्रसव के कारण समस्याएं हुई थी।

विशेष बसों ने लोगों को उनके गाँवों से शिविर स्थल तक पहुँचाया। चटर्जी कहते है, ''आरटीओ के साथ विशेष प्रबंध के कारण, हमने उन मरीज़ों को RAHAT कार्ड प्रदान किये है जिन्हें जबलपुर के अस्पतालों में आगे के उपचार की आवश्यकता है। उन्हें केवल बस कंडक्टर को कार्ड दिखाना है और मुफ्त में यात्रा करनी है। सभी पंजीकरण कर्ताओं को भोजन प्रदान किया गया और यह एक बड़ा आकर्षण था।'' रोटरी क्लब जबलपुर संस्कारधानी ने पंजीकरणों का ध्यान रखा और स्थानीय विधायक नीलेश अवस्थी ने संचालन एवं क्रियान्वयन में भी सहायता की।

लगभग 75 मरीजों को सर्जरियों की सलाह दी गई। क्लब के अध्यक्ष कहते है, ''हम आगे की कार्यवाही करेंगे और देखेंगे कि यह छह महीनों में पूर्ण हो जाए।'' ■

हमें अधिक मलाला और लेमाह की आवश्यकता है

रशीदा भगत

पिछले महीने न्यूयॉर्क में बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन के उद्घाटन 'गोलकीपर्स' समारोह में माइक्रोसॉफ्ट के संस्थापक बिल गेट्स ने कहा, ''हम में से कोई भी आगे नहीं बढ़ सकता यदि हम में से आधे लोगों को पीछे रखा जाए। इसलिए यदि आप एक स्वस्थ, बेहतर दुनिया चाहते है, तो आपको महिलाओं एवं लड़कियों को कार्य-सूची के केंद्र में रखने की आवश्यकता है।'' यूएस के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा के साथ-साथ कनाडियाई प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो भी वहाँ उपस्थित थे, लेकिन मंच स्पष्ट रूप से महिला कार्यकर्ताओं जैसे नोबेल शान्ति पुरस्कार विजेता मलाला युसुफ़ज़ई और लाइबेरियाई शान्ति कार्यकर्ता लेमाह लेमाह जीबोई का था।

ओबामा को मिलाकर वहाँ समारोह में तीन नोबेल शान्ति पुरस्कार विजेता थे।

इस अवसर - गोलकीपर्स समारोह - ने गेट्स फाउंडेशन की पहली वार्षिक रिपोर्ट के विमोचन को चिन्हित किया जिसने संयुक्त राष्ट्र संधारणीय विकास लक्ष्यों द्वारा की गयी प्रगति पर नज़र डाली।

रिपोर्ट ने दर्शाया कि संक्रामक बीमारियों एवं गरीबी, वो क्षेत्र जिन्होंने गेट्स संस्थान के ध्यान को पूरी तरह आकर्षित किया, के खिलाफ लड़ाई में तस्वीर इतनी भी भयानक नहीं है जितना कि सामाजिक मीडिया के चीखते हुए पोस्ट या चेतावानीपूर्ण मीडिया रिपोर्टें दिखाती है। इस प्रकार से ''गोलकीपर्स: आंकड़ों के पीछे की कहानियाँ'' शीर्षक वाली रिपोर्ट ने निष्कर्ष प्रस्तुत किया। इस बात की भी घोषणा की गई की इस प्रकार की रिपोर्ट को वर्ष 2030 तक प्रत्येक वर्ष निकाला जाएगा।

निष्कर्ष इशारा करते है कि जबकि शिशु मृत्यु दर, मातृ स्वास्थ्य, परिवार नियोजन, और टीकाकरण जैसे क्षेत्रों में प्रगति हुई है, वहीं वर्ष 2030 तक लैंगिक समानता को हासिल करने के उद्देश्य - एक लक्ष्य जिसे संयुक्त राष्ट्र के ही-फॉर-शी अभियान द्वारा साझा किया गया है, को ''एक अधिक जटिल पहुँच'' की आवश्यकता है।

मेलिंडा गेट्स ने कहा कि यदि उन्हें ध्यान केन्द्रित करने के लिए केवल एक संख्या को चुनना पड़े, तो वह संख्या प्रति वर्ष 5 वर्ष की आयु से पूर्व मरने वाले बच्चों की होगी। उस संख्या में बहुत कुछ अन्तर्निहित है। ''बाल मृत्यु दर संपूर्ण स्वास्थ्य का प्रतिनिधित्व करता है; यह प्रगति (या उसकी कमी) का भी अग्रणी सूचक है। और आप जब माताओं से बात करते है जिन्होंने एक बच्चे की मौत का अनुभव किया हो, तब आप समझते है कि उस संख्या का मानवों के लिए क्या मतलब होता है। बड़े होकर भविष्य बनाने के लिए बच्चों को जीवित रखने से अधिक आवश्यक और क्या है,'' उन्होंने पूछा।

और अब तक, यह ध्यान देने योग्य है कि यह संख्या नीचे आ रही है; 1990 में 11.2 मिलियन से 2016 में 5 मिलियन तक।

अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा, मेलिंडा गेट्स और माइक्रोसाफ्ट के संस्थापक बिल गेट्स नन्यू यॉर्क में गोलकीपर्स समारोह में।

रिपोर्ट ने कहा कि वाकई में प्रगति अनेक क्षेत्रों में की गई है। उदाहरण के लिए, पिछले 25 वर्षों में, एचआईवी से होने वाली मौतों में आश्चर्यजनक ढंग से गिरावट आई है - 1990 के दशक के उत्तरार्ध में प्रति 1,000 लोगों पर 0.60 मौत से 2016 में 0.25 मौत तक। लेकिन, रिपोर्ट में, बिल गेट्स ने इस चिंता को व्यक्त किया की निधीयन इस हद तक कम हो चुका है कि जनसंख्या में बढ़ोत्तरी आने वाले वर्षों में एचआईवी का पुनरुत्थान कर सकती है, और यह एक ''डरावनी संभावना है''।

राष्ट्रपति बराक ओबामा समारोह में उपस्थित थे और उन्होंने रिपब्लिकनों द्वारा उनके स्वास्थ्य सेवा सुधारों को निरस्त करने और अमेरिकी नागरिकों पर ''वास्तविक मानवीय पीड़ा'' थोपने पर अस्वीकृति व्यक्त की। कनाडियाई प्रधान मंत्री और स्व-घोषित स्त्रीवादी जस्टिन ट्रूडो, जिनकी ख्याति दुनिया भर में इसलिए बढ़ रही है क्योंकि एक कट्टर स्त्रीवादी होने के अतिरिक्त उन्हें एक उदार एवं अनेकवादी वैश्विक नेता के रूप में देखा जा रहा है, ने दर्शकों से उन ''रूढ़िवादी धारणाओं को तोड़ने'' का आग्रह किया ''जो महिलाओं को पीछे धकेलती है।''

लेकिन समारोह में सबसे अधिक सम्मोहक आवाज या शो स्टॉपर मलाला और लेमाह थी। सत्र जिसका शीर्षक था ''*स्टिल आई राइज़: दी पॉवर ऑफ़ विमेंस मूवमेंट्स* की अध्यक्षता मेलिंडा गेट्स ने की जिन्होंने ''महत्वपूर्ण स्थानों पर काम कर रही महिला नेतृत्वकर्ताओं'' में निवेश करने की आवश्यकता को रेखांकित किया, क्योंकि स्वास्थ्य एवं गरीबी से संबंधित सभी मुद्दों पर तरक्की हासिल करने के लिए लैंगिक समानता आवश्यक है। जहां मलाला ने पाकिस्तान में तालिबान का सामना किया और लड़कियों की शिक्षा के अधिकार का समर्थन करने एवं वकालत करने के दौरान अपने युवा शरीर पर गोलिया खाई, मुख्यतः चेहरे पर, वहीं लेमाह एक आधारिक कार्यकर्ता है जिन्हें 2003 में दूसरे लाइबेरियाई गृह-युद्ध को खत्म करने में मदद करने का श्रेय जाता है।

आप जब माताओं से बात करते है जिन्होंने एक बच्चे की मौत का अनुभव किया हो, तब आप समझते है कि उस संख्या का मानवों के लिए क्या मतलब होता है।

मेलिंडा गेट्स

लाईबेरियाई शांति कार्यकर्ता लेमाह जीबोई।

लेमाह ने तब दर्शकों को उत्तेजित किया जब उन्होंने एक स्वयंसेविका के बारे में बात की जिसने उसी लड़के सैनिक की देखभाल की जिसने उसके बच्चों को मारा था। ''यह अच्छाई के लिए नफरत के ऊपर प्रेम को रखने का एक उदाहरण है, और यह दर्शाता है कि क्यों लाइबेरिया में महिलाओं को शांति प्राप्त करने की प्रक्रिया में थोड़ी समझ एवं संवेदनशीलता को लाने की आवश्यकता है।''

बैठक को संबोधित करते हुए, मलाला ने पाकिस्तान में लड़कियों के स्कूल जाने के अधिकार के लिए उसकी लड़ाई के अनुभव साझा किये और अवलोकन किया, ''यदि एक शिक्षित लड़की दुनिया को बदल सकती है, तो 130 मिलियन क्या करेंगी? वे अर्थव्यवस्थाओं को आगे बढ़ा सकती है, हिंसक टकरावों के जोखिम को आधा कर सकती है, और सार्वजनिक स्वास्थ्य में वृद्धि कर सकती है। बारंबार, अध्ययनों ने यह दिखाया है कि लड़कियाँ सबसे गंभीर परेशानियों का उत्तर है।

उसने कहा, ''इस अवसर पर चर्चा किये जा रहे संधारणीय विकास लक्ष्यों में से किसी भी लक्ष्य को हासिल नहीं किया जा सकता जब तक कि हम लड़कियों को शिक्षित नहीं करेंगे। 130 मिलियन लड़कियों को स्कूल में लाने के लिए कोई सीधा मार्ग या रातोंरात होने वाला समाधान नहीं है। और ऐसा इसलिए है क्योंकि लड़कियों की शिक्षा में गरीबी, युद्ध, बाल विवाह जैसे अवरोध है। लेकिन मुझे विश्वास है कि हम इसे कर सकते है। मुझे विश्वास है कि मेरे जीवनकाल के दौरान हम प्रत्येक लड़की को स्कूल में देख सकते है, क्योंकि मुझे स्थानीय कार्यकर्ताओं एवं समर्थकों पर विश्वास है।''

मलाला यूसुफ़जई

मलाला और लेमाह दोनों ने इस आशा को व्यक्त किया कि दुनिया भर में उनकी तरह बहुत सी युवा महिलाएं है जो साहसिक प्रयासों एवं अच्छे कार्यों को कर रही है, लेकिन उन्हें पहचाने जाने, समर्थन किये जाने एवं प्रोत्साहित किये जाने की आवश्यकता है।

भारत में एसिड अटैक पीड़िताओं की सहायता करने वाली रिया शर्मा; मानव तस्करी से बचने वाली एक सेनेगली महिला मरियम जेमी जिन्होंने अफ्रीकी महिलाओं एवं लड़कियों को कोडिंग सिखाना ज़ारी रखा; और भूतपूर्व कोलम्बियाई गोरिल्लाओं को मुख्यधारा समाज से फिर से जोड़ने पर काम करने वाली लॉरा उलोआ के उदाहरण दिए गए।

इन सभी महिलाओं को गोलकीपर्स ग्लोबल गोल्स अवार्ड्स रात्रिभोज पर सम्मानित किया गया।■

बूडापेस्ट की झल्की

रशीदा भगत

बूडापेस्ट जैसे ऐतिहासिक शहर में सिर्फ एक दिन और दो रातें बिताना बहुत कम लगता है। इतना कुछ है वहाँ कि और ज़्यादा वक्त बिताने की लालसा तीव्र हो जाती है

हमने कभी भी विदेश में आकर्षक स्थान के लिए सामूहिक यात्रा (ग्रूप टुअर) नहीं की थी, इसलिए जब हमने कॉक्स एंड किंग्स से छह दिन और सात रातों के लिए पूर्वी यूरोप की यात्रा आक़र्षक रु 75,000 प्रति व्यक्ति बुक की तो हल्की घबराहट भी थी। लेकिन फ़िर हवाई टिकट, होटेल के आवास, सुबह के नाश्ते, रात के भोजन, और पर्यटन स्थलों के भ्रमण के साथ-साथ रु 5,500 के शेंगेन वीज़ा और विदेशी भ्रमण के इंश्योरेंस का इतना अच्छा सौदा (डील) मिलता भी कहाँ!

और जब इतनी अच्छी स्कीम आपके कंप्यूटर स्क्रीन पर कई दिनों तक खत्री (जिन्हें डॉग डेज़ भी कहा जाता है) यानी उन दिनों के विकल्प के रूप में उभरती रहे जब चेन्नई में मई के दौरान पारा आसमान छू रहा होता है, तो यह सौदा और भी आकर्षक नज़र आता है।

तो हालाँकि उसके कुछ नियत स्थान, जैसे वियेना और प्राग, हम पहले भी देख चुके थे, दो नये शहरों - स्लोवाकिया की राजधानी ब्रातिस्लावा और हंगरी की राजधानी बूडापेस्ट - को देखने की

संभावना हमारे लिए अच्छे प्रलोभन थे। तो बहुत कम अपेक्षा के साथ मई के पहले हफ्ते में हम मुंबई के लिए रवाना हुए जहाँ से बजेट एअरलाइन फ़्लाईदुबई हमें ब्रातिस्लावा ले जानेवाली थी। आयोजित ग्रूप टुअर पूरी तरह भाग्य का खेल होते हैं; यदि समूह में आपको ऐसे लोग मिल जाएं जो कुढ़ते रहते हैं, आदतन देर से आनेवाले होते हैं, बड़बड़ानेवाले होते हैं, किसी भी तरह से अपनी बात मनवानेवाले अति महत्वाकांक्षी या लड़ाकू होते हैं तो आपकी पूरी यात्रा बर्बाद हो सकती है।

हमारा पहला बोनस था गर्मी और उमस भरी मुंबई से अपेक्षाकृत ठंडे ब्रातिस्लावा पहुँचना। मौसम उत्तम था और ग्रूप, जो दरअस्ल मिला-जुला था, हँसमुख था। उसमें मुंबई, हैदराबाद, चेन्नई, कोच्चि, कोलकाता, अमदाबाद और सूरत से लोग थे। न कोई बिगड़ा, चीखनेवाला बच्चा, न अति महत्वाकांक्षी और अहंकारी लोग। हाँ, पैर फैलाकर बैठने और खड़े होनेवाले लोग ज़रूर थे लेकिन हमारा टुअर गाइड समीर उन्हें हमेशा इकट्ठा करके बहुत कम देरी में ही कोच को रवाना करवाने में माहिर था।

हंगरी की हरी और मनोहर राजधानी, बूडापेस्ट, डैन्यूब नदी को दो जिलों - बूडा और पेस्ट - में विभाजित करके बहुत खूबसूरत बन उठी है। अपने पहाड़ी क्षेत्रों के कारण बूडा दिखने में ज़्यादा मनमोहक है जबकि पेस्ट मुख्य रूप से समतल मैदान है। आप बूडा से पेस्ट और पेस्ट से बूडा चेन ब्रिज से, जो 19वीं सदी में निर्मित एक झूला पुल (सस्पेंशन ब्रिज) और शहर का एक महत्वपूर्ण प्रतीक है, आ जा सकते हैं। हमारे टुअर गाइड ने हमें बताया कि चेन ब्रिज डैन्यूब नदी के ऊपर से जानेवाला पहला स्थायी पुल है। उसके पहले लोगों को सबसे नज़दीक के पुल तक पहुँचने के लिए या तो नाव का सहारा लेना पड़ता था या फिर वियेना तक जाना पड़ता था।

आयोजित ग्रूप टुअर पूरी तरह भाग्य का खेल होते हैं; यदि समूह में आपको ऐसे लोग मिल जाएं जो कुढ़ते रहते हैं, अति महत्वाकांक्षी या लड़ाकू होते हैं तो आपकी पूरी यात्रा बर्बाद हो सकती है।

बूडा के ओल्ड टाउन (पुराने शहर) तक, जहाँ बूडापेस्ट हिस्टरी म्यूज़ियम स्थित है, जाने के लिए कासल हिल पर एक रज्जु-रेल (केबल कार) दौड़ती है। वह पर्यटकों के लिए रोमन साम्राज्य के समय से शहर का इतिहास दिखाती चलती है लेकिन जब आप शहर में हमारी तरह एक चक्रवाती टुअर पर हों, सिर्फ दो रात और एक दिन के लिए, तो वह सब देखना आपके लिए संभव नहीं हो सकता।

बुडा और (अग्रभूमि में) पेस्ट का शानदार दृश्य, साथ में बाईं ओर इसकी सुंदर संसद इमारत, नदी डैन्यूब द्वारा विभाजित।

शुक्र इस बात का था कि बूडापेस्ट का टुअर काफी पहले से शहर के ''विशाल मनोरम दर्शन'' के रूप में तय किया गया था। इसका मतलब था अपनी कोच में शहर में घूमना और फिर ढेर सारी तस्वीरों के साथ घर लौटना लेकिन शहर की संस्कृति, प्रकृति, उसकी विशेषताओं या अनोखेपन, और सबसे ज़्यादा, उसके भोजन की कोई भी खास जानकारी लिए बिना लौटना।

सेंट स्टीफेंस बैसिलिका

यह बूडापेस्ट के सबसे खूबसूरत प्रतीक चिह्नों में से एक है और यूरोप की प्रतिष्ठित चर्चों की तरह अपनी अद्भुत वास्तुकला, स्टेंड-ग्लास की कलाकृतियों, उत्कृष्ट फ्रेस्को (भित्ति-चित्र) और मोज़ेइक (जड़ाऊ काम) से आपको चकाचौंध कर देती है। इस गिरिजाघर की सजावट में अलग-अलग तरह के लगभग 150 कंचों का प्रयोग किया गया है। इससे देवत्व, शांति और निश्चलता की ऐसी आभा निकलती है कि आपको एक बेंच पर जाकर प्रार्थना करने को मजबूर कर देती है, फिर चाहे आप किसी भी आस्था के अनुयायी क्यों न हों।

शहर के पेस्ट क्षेत्र की ओर स्थित इस चर्च को बनाने में 50 साल लगे और यह 1906 में पूरी हुई। कहते हैं कि इसकी वास्तुकला में अनेक जगहों

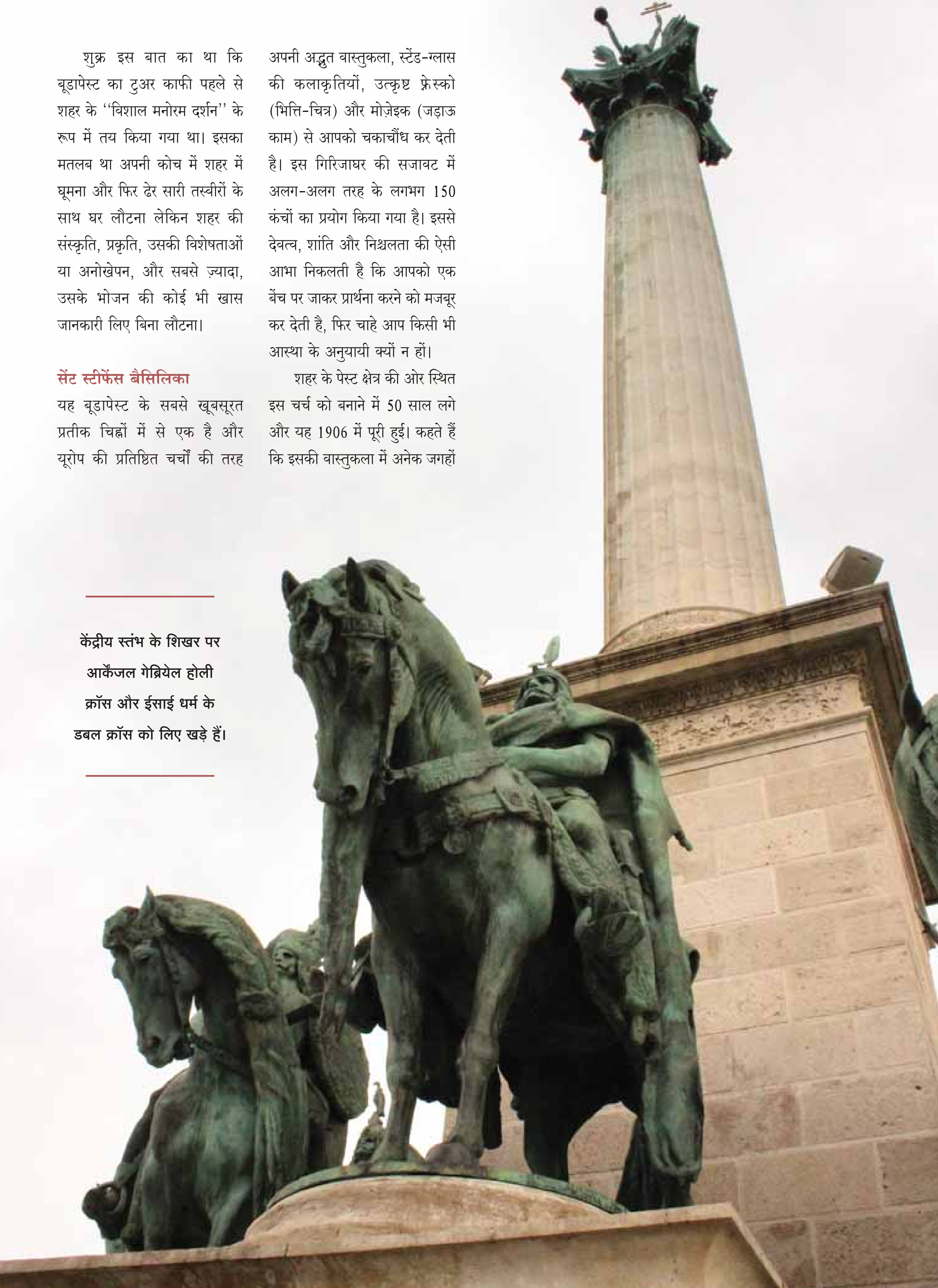

केंद्रीय स्तंभ के शिखर पर आर्केंजल गेब्रियेल होली क्रॉस और ईसाई धर्म के डबल क्रॉस को लिए खड़े हैं।

सेंट स्टीफेंस बैसिलिका की सजावट में अलग-अलग तरह के लगभग 150 कंचों का प्रयोग किया गया है।

की वास्तुकला का समावेश इतने लंबे समय में इसके बनने के कारण ही संभव हो पाया। इसका नाम हंगरी के प्रथम राजा, किंग स्टीफेन (975-1038) के नाम पर रखा गया है। आप कुछ फ़ीस भर कर इसकी मीनार के शिखर तक जा सकते हैं जहाँ से शहर का नज़ारा भव्य है।

हमारी कोच उसकी प्रभावशाली संसद के सामने से गुज़री और हमें दो आकर्षक स्थलों पर गुज़ारने के लिए वक्त दिया गया। एक था आलीशान और विशाल हीरोज़ स्क्वेयर और दूसरा था एक अनूठा स्पा जिसे देखकर हमने ठान लिया है कि उसकी सुविधाओं का अनुभव लेने के लिए हमें फुरसत में बूडापेस्ट दोबारा जाना ही पड़ेगा। बूडापेस्ट जैसे शानदार शहर की बारीकियों का अनुभव लेने के लिए एक पूरा दिन भी पर्याप्त नहीं पड़ता।

हीरोज़ स्क्वेयर

यूरोप अपने सक्वेयर (चौक) के लिए काफी जाना जाता है। यह निश्चित रूप से यूरोप के सबसे प्रभावशाली चौकों में से एक, और बूडापेस्ट का सबसे विशाल चौक है। इसे 1896 में हंगरी की हज़ारवीं वर्षगांठ पर बनाया गया था। हम मई की शुरूआत के एक सुगंधित दिन पर यहाँ हैं जब इस जगह में घूमने के लिए मौसम भी उत्तम है। अनेक विक्रेता अपना सामान बेचने की पुरजोर कोशिश कर रहे हैं। उनमें घर ले जाने के लिए महिलाओं के वस्त्र और कृत्रिम आभूषणों से लेकर कलाकृतियाँ

सेंट स्टीफेंस बैसिलिका

और शिल्पकृतियाँ तक हैं। म्यूज़ियम ऑफ फाइन आर्ट्स से सटे हुए इस स्क्वेयर के ठीक बीच में एक अद्भुत सहस्राब्दी स्मारक है। केंद्रीय स्तंभ के शिखर पर आर्केंजल गेब्रियेल होली क्रॉस और ईसाई धर्म के डबल क्रॉस को लिए खड़े हैं। मज्यॉर जनजाति के मुखियाओं और राजाओं की प्रतिमाएँ तथा अनेक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक आकृतियाँ इस स्मारक पर बनाई गई हैं। यहाँ तस्वीरें लेना तो लाजिमी है।

विकिपीडिया में जानकारी कुछ यूँ दर्ज हैः जब इस स्मारक का शुरू में निर्माण किया गया तब हंगरी ऑस्ट्रो-हंगेरियन (संयुक्त ऑस्ट्रिया और हंगरी) साम्राज्य का हिस्सा था और इसलिए स्तंभावली में बाईं तरफ़ के पाँच आखिरी स्थान उस समय शासन कर रहे हैब्सबर्ग वंश के पाँच सदस्यों की प्रतिमाओं के लिए सुरक्षित थे। लेकिन बाद में जब स्मारक को दूसरे विश्व युद्ध के बाद फिर से बनाया गया तब हैब्सबर्ग शासकों को हंगरी के स्वतंत्रता सेनानियों से बदल दिया गया। 1989 में लगभग 2,50,000 लोगों की एक विशाल भीड़ हंगरी के पूर्व प्रधान मंत्री इम्रे नेगी को दोबारा दफ़नाने के लिए स्क्वेयर पर जमा हुई थी। नेगी को 1958 में फाँसी की सज़ा दी गई थी।

चालबाज़

दुनिया के किसी भी और शहर की तरह आपको हंगरी की राजधानी में भी चालबाज़ों से सावधान रहना पड़ेगा। शहर के बूडा क्षेत्र में एक मनोरम स्थान तक ले जाते हुए हमारी गाइड ने हमें किसी भी शर्त में भाग लेने से मना किया था। उस स्थान से पेस्ट का शानदार नज़ारा दिखाई देता था, खासकर आलीशान संसद का। वहाँ एक गोलाकार अहाते में ठगों का एक समूह अपने काम में ज़ोर-शोर से लगा था। वे एक बेल्ट की कई परतों के अंदर एक कील रखने के लिए आपको आमंत्रित करते थे। आपको यह शर्त लगानी होती थी कि बेल्ट खोले जाने पर वह कील उस परत के अंदर होगी या बाहर। यदि आप जीते तो आपको, जितने यूरो की आपने शर्त लगाई थी, उससे तीन गुना ज़्यादा रकम मिलेगी।

दुनिया के किसी भी और शहर की तरह आपको हंगरी की राजधानी में भी चालबाज़ों से सावधान रहना पड़ेगा।

वह दरअस्ल हाथ की सफाई थी; जब उनके साथी 20 य 50 यूरो की शर्त लगाते तो वे हमेशा जीत जाते और उन्हें तिगुने पैसे मिलते लेकिन जब कोई पर्यटक बिना किसी संशय के शर्त लगाता तो वह पहला या दूसरा हाथ तो जीत जाता लेकिन जैसे-जैसे वह रकम बढ़ाता जाता, वह हारना शुरू कर देता। हमारे ग्रूप के भी कई लोग, खासकर मुंबई वाले, इस खेल की ओर आकर्षित हुए थे लेकिन उनकी किस्मत अच्छी थी कि उन्होंने अपने पर्स नही खोले।

थर्मल बाथ

मेरे जैसे पर्यटक के लिए, जिसके लिए रोज़ तैरना स्वर्ग का एक हिस्सा मिलने जैसा है, बूडापेस्ट यात्रा की सबसे सुनहरी याद एक सार्वजनिक स्नानघर, या स्पा, की है जिसके लिए बूडापेस्ट प्रसिद्ध है। हमें बॉडीरिलैक्स टेरपिआक (स्टूडिओ) नाम के एक स्पा में ले जाया गया। अंदर जाने के लिए एक बहुत लंबी

बूडापेस्ट की एक खासियत है कि वह 125 उष्ण जल-स्त्रोतों के जाल पर बैठा है और उसके ज़्यादातर निवासियों के लिए इन स्नानघरों में नियमित रूप से या सप्ताह में एक बार जाना लगभग एक रस्म सा है।

हंगेरियन गूलैश, अप्पल स्ट्रूडेल

यदि आपने हंगरी में विश्व-प्रसिद्ध गोमांस के गूलैश, जिसे वहाँ का राष्ट्रीय प्रतीक माना जाता है, का भरपूर स्वाद नहीं लिया तो आपका हंगरी का ट्रिप ही कैसा? दरअस्ल गूलैश माँस और सब्ज़ियों को मंदी आँच पर मिर्च और बाकी मसालों के साथ पकाकर बनाया जाता है। मध्यकालीन युग में शुरू हुआ यह भोजन पूरे मध्य यूरोप में लोकप्रिय है। मैंने वियेना और सॉल्सबर्ग में भी गोमांस का स्वादिष्ट गूलैश खाया है लेकिन उसे उसकी उत्पत्ति के स्थान पर खाने का मज़ा ही कुछ और था। माँस काफ़ी मुलायम, गूदेदार और रसीला था, और आश्चर्य की बात यह थी कि वह तीखा भी था। उसे खाते वक्त मुझे मेमने की एक डिश या रांग की याद आ गई जिसे हम बोहरी मुस्लिम ईद या शादी जैसे उत्सवों के वक्त बनाते हैं। उसमें अगर कोई चीज़ नहीं थी तो वह थी उबले अंडों की फाँकें और बिरिश्ता (तली प्याज़) जिसे डिश में ऊपर से परोसा गया हो।

ऊपर : आगे की ओर हंगेरियन गूलेश;

नीचे : अप्पल स्ट्रूडेल और आइस क्रीम

हंगेरियन गूलैश का एक रुचिकर इतिहास है जो नौवीं सदी से जुड़ा है जब चरवाहे इस तरह का भोजन (स्ट्यू) बनाते और खाते थे। उन दिनों माँस को मसालों की खुश्बू में डुबोकर धूप में सुखाया जाता था और भेड़ के पेट से बनाये गए थैलों में भर दिया जाता था। उसे भोजन बनाने के लिए उन्हें उसमें सिर्फ पानी मिलाना होता था।

बूडापेस्ट में आपको एप्पल स्ट्रूडेल (सेब का मालपुआ) भी ज़रूर खाना चाहिए। यह एक पेस्ट्री है जिसका संबंध विएना और ऑस्ट्रिया के बाकी हिस्सों से ज़्यादा है लेकिन इसकी उत्पत्ति ऑस्ट्रिया-हंगरी साम्राज्य के दौरान हुई थी। मूल रूप से यह सुगंधित पके सेबों से भरी परतोंवाली एक पेस्ट्री होती है। इसकी खासियत इस बात में छिपी होती है कि इसके आटे को किस तरह गूँथा जाता है

हंगेरियन गूलैश का एक रुचिकर इतिहास है जो नौवीं सदी से जुड़ा है जब चरवाहे इस तरह का भोजन (स्ट्यू) बनाते और खाते थे।

न ज़्यादा गाढ़ा, न ज़्यादा पतला। मैंने जो स्ट्रूडेल लिया उसमें भरा सेब बहुत मुलायम और सुगंधित था - बाहर से भी वह परतदार तो था ही, मुलायम भी था। वहाँ रेस्तराओं में भोजन काफी बड़ी मात्रा में परोसा जाता है। वह इतना स्वादिष्ट था कि आपको वह पूरा हिस्सा समाप्त करना ही था। उसे छोड़ने का मन ही नहीं था। और हाँ, उसके साथ आइसक्रीम का एक बड़ा टुकड़ा भी था। गुनाह करना ही है तो दिल से करो।

लाइन थी लेकिन हमारा टुअर ऑपरेटर हमें एक मिनट में सर्र से अंदर ले गया।

बूडापेस्ट की एक खासियत है कि वह 125 उष्ण जल-स्रोतों के जाल पर बैठा है और उसके ज़्यादातर निवासियों के लिए इन स्नानघरों में नियमित रूप से या सप्ताह में एक बार जाना लगभग एक रस्म सा है। पर्यटकों के लिए तो यह एक मुख्य आकर्षण है ही। प्रचुर मात्रा में उपलब्ध ये खूबसूरत स्नानघर, जो काफी सजाए हुए होते हैं और सलीके से चलाए जा रहे हैं, पानी के तालाब हैं। इनका तापमान कुनकुने से गरम तक संचालित किया जाता है, और माना जाता है कि इनमें उपचार करनेवाले और आराम पहुँचानेवाले खनिज (मिनरल) होते हैं।

तो हंगरी के ये स्नानघर, जो रोम साम्राज्य की विरासत और निश्चित रूप से उस पर तुर्की के कब्ज़े के बाद छूटे नशे का उन्माद हैं, पर्यटकों के लिए एक बड़ा आकर्षण हैं। माना जाता है कि जो रुमैटिक आर्थराइटिस (गठिया रोग), जोड़ों की अकड़न और त्वचा रोगों जैसे रोगों से परेशान हैं, उन्हें इन जल-स्रोतों में तैरने से बहुत लाभ हो सकता है।

इन स्नानघरों में से ज़्यादातर बहुत साफ़-सुथरे होते हैं और उनमें स्पा की विलासितापूर्ण सुविधाएं तथा आपको मसाज करने के लिए प्रशिक्षित मालिश करनेवाले भी उपलब्ध होते हैं। इनमें से कई में अनेक रोगों के उपचार के लिए स्टीम रूम, सॉना, डुबकी

हंगरी के ये स्नानघर, जो रोम साम्राज्य की विरासत और निश्चित रूप से उस पर तुर्की के कब्ज़े के बाद छूटे नशे का उन्माद हैं, पर्यटकों के लिए एक बड़ा आकर्षण हैं।

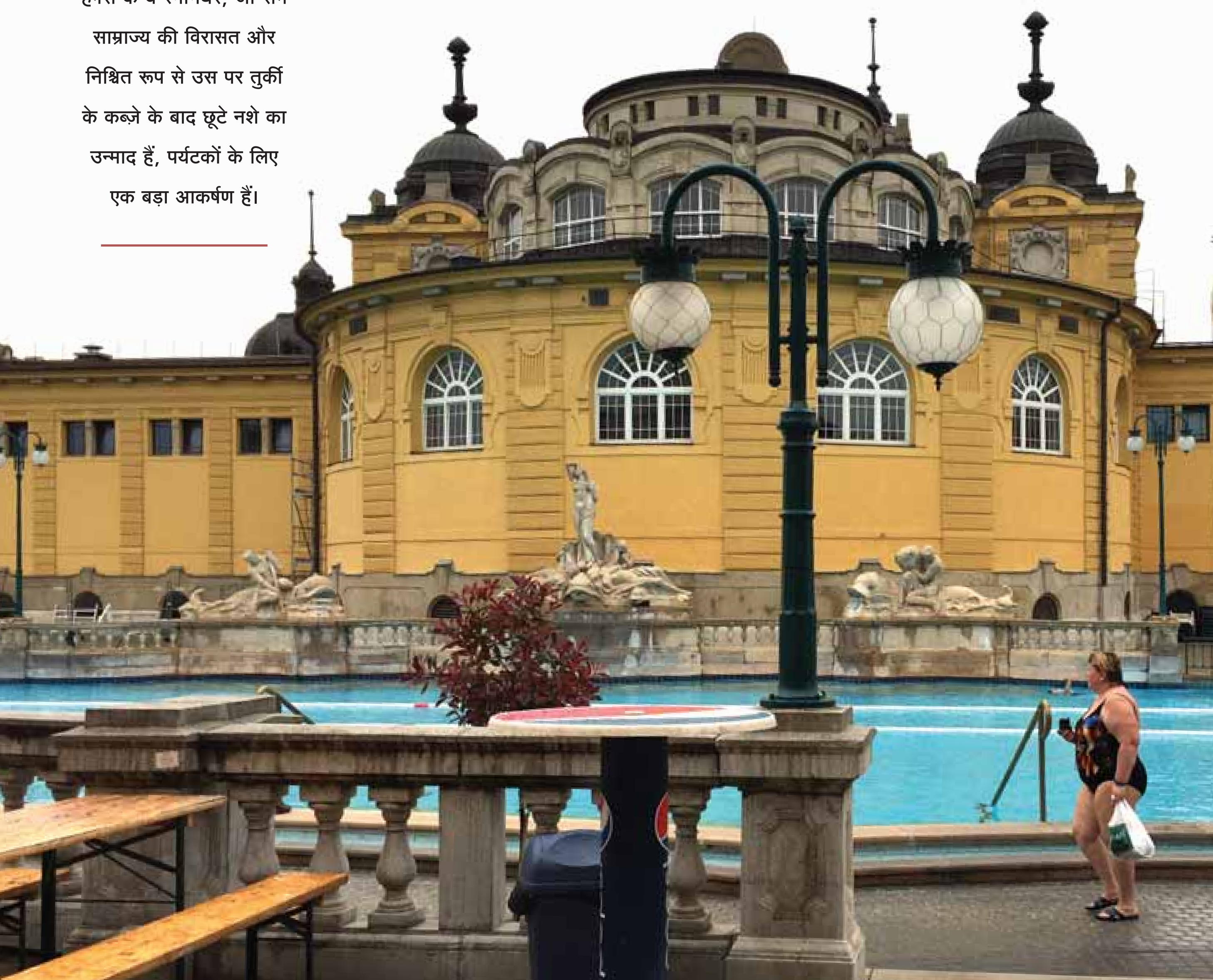

ऊपर : एक चुनाव खेल प्रगति में; सड़क के किनारे आकर्षक दावों से सावधान रहीए। आप अपनी शर्ट खो सकते हैं।

नीचे : एक ठेठ हंगरी टब।

मैं जिस भी जादुई जगह में गई हूँ उसने मुझे कम से कम एक ऐसा सम्मोहन का कारण दिया है जिसके लिए मैंने वहाँ लौटना चाहा है।

लगाने के लिए बेहद ठंडे तालाब (प्लंज पूल) और भँवर (वर्लपूल) डिज़ाइन किये जाते हैं।

हमारी स्थानीय (लोकल) गाइड सोफ़िया 55 की है लेकिन लगती है मुश्किल से 40 की। वह बताती है कि जब हमारी गाड़ी बूडापेस्ट में घूम रही थी तब वह ज़्यादातर समय खड़ी क्यों रही। हाल में भारत में हिमालय यात्रा के दौरान वह गिर गई थी जिससे उसकी पीठ पर गहरी चोट आई है। जब मैं बूडापेस्ट में घर लौटी तो मैं बहुत मुश्किल से बैठ या चल पाती थी। लेकिन मैं पिछले दो सप्ताह से इन थर्मल बाथ में, जहाँ पानी न सिर्फ कुनकुना है बल्कि उसमें उपचारवाले खनिज भी हैं, नियमित रूप से तैर रही हूँ और मैं हर रोज़ बेहतर महसूस कर रही हूँ। मेरी माँसपेशियाँ और अकड़े हुए जोड़ धीरे-धीरे ठीक हो रहे हैं। वह बताती है कि इन स्नानघरों में जोड़ों की अकड़ ढीली करना और दर्द तथा सूजन से निजात पाना तो निश्चित है।

हम तैरने के लिए तैयार नहीं हैं और न ही हमें अपनी कॉस्ट्यूम लाने के लिए कहा गया था, क्योंकि, समीर खिसियाते हुए कहता है, कि स्नानघर का अनुभव लेने के लिए समय ही नहीं है। लेकिन साफ़-सुथरा नीला पानी इतना लुभावना है कि फ़ुर्सत में बूडापेस्ट जानेवाले हर व्यक्ति को यह अनुभव लेना ही चाहिए।

मैं जिस भी जादुई जगह में गई हूँ उसने मुझे कम से कम एक ऐसा सम्मोहन का कारण दिया है जिसके लिए मैंने वहाँ लौटना चाहा है। यूनान (ग्रीस) में सैंटोरिनि में सूर्यास्त इतना भव्य था कि मैंने अपने जीवन में आज तक ऐसा सूर्यास्त नहीं देखा; इस्तांबुल में वह बॉस्फ़ोरस नदी का जादू था, और बूडापेस्ट में यह थर्मल पूल में फ़ुर्सत से जाना रहेगा। उनसे मैं विश्राम, उपचार, मसाज और काफ़ी कुछ का वायदा लेकर आई हूँ।

चित्र : रशीदा भगत और पेर्वीज़ भगत
कृष्णपप्रतीश एस द्वारा रूपरेखा

रोटरी कॉलोनी को मिला एक मंदिर

टीम रोटरी न्यूज़

मंदिर के अभिषेक में (दाएँ से) : *क्लब के अध्यक्ष एस एल मादेश्वरन पत्नी शान्ति, डीजीई ए निर्मल प्रकाश पत्नी प्रिय, डीजी धर्मेश पटेल पत्नी रंजना और पीडीजी पी वी पुरुषोत्तमन पत्नी अरुलजोती के साथ।*

वर्ष 2000 में सेलम के निकट पुदुर पलपट्टी गाँव में एक नई कॉलोनी का जन्म हुआ जब रोटरी ने कम लागत वाली आवास परियोजना के अंतर्गत 32 मकानों का निर्माण किया। यह एक छोटा-सा आदिवासी गाँव है और गाँव के लोग पास की पहाड़ी से जलाऊ लकड़ियाँ एवं शहद इकठ्ठा करने में व्यस्त थे।

एक मिलान अनुदान के अंतर्गत, घरों को रोटरी क्लब अत्तुर, मंडल 2982, द्वारा जापान के चार क्लबों - रोटरी क्लब सेन्दाइकामुरी, मंडल 2810, सप्पोरा वेस्ट होक्कैको और मासाओ मरिमोटो, मंडल 2510 और नाओज़ो मतसुदा, मंडल 2690 - के साथ साझेदारी में प्रायोजित किया गया था। बाद में वर्ष 2009 में, कॉलोनी में एक और घर जुड़ा जब जेनी हॉर्टन के नेतृत्व वाले चार-सदस्यीय ऑस्ट्रेलियाई दल ने एक पोलियो टीकाकरण कार्यक्रम के लिए गाँव का दौरा किया।

हाल ही में, पीडीजी पी. वी. पुरुषोत्तमन ने कुछ अन्य रोटेरियनों के साथ गाँव का दौरा किया और वह यह देखकर प्रसन्न थे कि घरों का अच्छी तरह रख-रखाव किया गया था और इससे अधिक महत्वपूर्ण, कॉलोनी स्वच्छ थी। ''इन 17 वर्षों में, उनका जीवन बेहतर हुआ है। पुरुष अब अनुबंध रोजगार के माध्यम से आजीविका अर्जित करते है और बच्चे नियमित रूप से स्कूल जा रहे है।''

पीडीजी सी सिवज्ञानसेल्वम 2009 में एक लाभार्थी को एस घर की चाबियाँ सौंपते हुए।

हालाँकि, निवासियों का एक अनुरोध था; नियमित पूजा के लिए वे एक गणेश मंदिर चाहते थे। इसका निर्माण रु 7 लाख की लागत से किया गया। देश भर से अनेक पूर्व गवर्नरों एवं रोटेरियनों द्वारा योगदान मिला, पीआरआईडी वाय. पी. दास, डीजी धर्मेश पटेल, डीजीई निर्मल प्रकाश और डीजीएन ए. के. नातेसन। इसके अलावा, रोटरी क्लब अत्तुर के प्रत्येक घर एवं सदस्य ने धन द्वारा सहायता की। गाँव के अंदर एवं इसके आसपास के लगभग 500 लोगों ने सितंबर में हुए मंदिर के विशाल प्रतिष्ठापन में हिस्सा लिया।

महिलाओं एवं युवाओं को सिलाई, कंप्यूटर संचालन, मोमबत्ती बनाने, कृषि और अन्य जरूरत-आधारित गतिविधियों में प्रशिक्षित करने के लिए कॉलोनी में एक व्यावसायिक केंद्र की स्थापना की जा रही है। पुरुषोत्तमन ने कहा, ''हम कृषि विभाग के साथ भी संपर्क में है ताकि ग्रामीणों को आधुनिक कृषि तकनीकों की ओर प्रवृत्त किया जा सके।'' ■

एक बार फिर नाइजीरिया के लिए चिकित्सीय मिशन

किरण ज़ेहरा

नाइजीरिया के ओगुन को गए मंडल 3020 के चिकित्सीय मिशन से लौटने के बाद, रोटेरियन संजय मुचेर्ला, एक दन्त चिकित्सक, ने जाना कि अफ्रीकी अस्पतालों में चिकित्सीय उपकरणों एवं प्रशिक्षण की बड़ी आवश्यकता है।

एक पूर्व गवर्नर और चिकित्सीय मिशन के अध्यक्ष डॉक्टर वराहालु बसव ने कहा, ''पीआरआईपी राजा साबू ना केवल मिशन के बारे में जानने के उत्सुक थे, बल्कि उन्होंने नाइजीरिया में मंडल 9110 से और दक्षिण कोरिया में मंडल 3650 से हमारे अंतर्राष्ट्रीय साझेदारों को पहचानने में हमारी मदद भी की। इस वैश्विक अनुदान को प्राप्त करने में हमारी मदद करने के लिए हम उनके और रोटरी फाउंडेशन के बहुत आभारी है।''

नाइजीरिया के स्वास्थ्य राज्य आयुक्त डॉक्टर बाबाटुंडे इपाये ने 20 मई को ओगुन में ओलाबिसी ओनाबंजो यूनिवर्सिटी टीचिंग हॉस्पिटल (OOUTH) में आठ दिवसीय स्वास्थ्य शिविर का उद्घाटन किया। विभिन्न बीमारियों एवं रोगों के लिए 400 से अधिक मरीजों की जांच हुई और 150 मरीजों को सर्जरी करवानी पड़ी। भारत के सात डॉक्टरों के दल ने शिविर का संचालन किया। उन्होंने OOUTH को रु. 19 लाख के लेप्रोस्कोपिक उपकरण और रु. 6 लाख के अन्य उपकरण भेंट किये।

ऊपर : इलाज के लिए आए हुए बच्चें।

नीचे : ओगुन चिकित्सा मिशन पर गये भारतीय डॉक्टरों की टीम।

एक तीन वर्षीय बच्चे को याद करते हुए जिसका नाल के हर्निया का ऑपरेशन हुआ था, डॉक्टर बसव ने कहा, ''डॉक्टर यह देखकर चकित थे कि वहाँ सर्जरी की कोई उपयुक्त सुविधाएं नहीं थी। एक टूटी हुई हड्डी नहीं जुड़ी थी, कुछ मरीज़ बड़े केलोइड से पीड़ित थे। विशेषरूप से चार से आठ वर्ष के बच्चे अनवतीर्ण अंडकोष, हर्निया से पीड़ित थे और कुल सर्जरियों में से एक-तिहाई सर्जरियाँ अधोमूत्रमार्गता की थी।'' शिविर उन लोगों के लिए वरदान था जो अस्पतालों के बड़े बिल का या इलाज के लिए विदेश यात्रा का खर्च नहीं उठा सकते थे।■

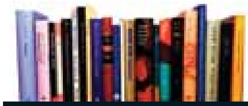

उपहार में पुस्तकें

संध्या राव

पुस्तकें मिलना बहुत अच्छा लगता है। दूसरों को भेंट में पुस्तकें देना तो और भी रोमांचकारी है।

पिछले दिनों मैं लंदन में रह रही अपनी बहन से फ़ोन पर बात कर रही थी कि अचानक उसने कहा, ''आपको याद है आप मेरे लिए शिमला से *विन्नी द पूह* लाई थीं?''

बस, बातचीत का रुख ही बदल गया और यादें ताज़ा होने लगीं। मैं 14 य 15 वर्ष की रही होऊंगी। वह एक स्कूल ट्रिप था और उसकी ज़्यादातर यादें धुंधली थीं। लेकिन मुझे यह ज़रूर याद है कि मैं शिमला के एक मॉल में ऊपर नीचे घूम रही थी। वहाँ एक घंटाघर था या क्या वह कहीं और था? मुझे बिल्कुल याद नहीं कि मैंने पुस्तकों की किसी दुकान का रुख किया होगा, पुस्तक खरीदना तो दूर की बात है। पैसे कहाँ से आए? उन दिनों पैसे होते किसके पास थे? पिकनिक पर गई किसी टीनेजर (किशोरी) के पास तो कतई नहीं।

''मुझे याद है,'' जुनजुन बोली। आप शिमला गईं थीं और आप वहाँ से मेरे लिये *विन्नी द पूह लाई* थीं। वह आठ या नौ वर्ष की रही होगी तब। हम हँस पड़ीं; निश्चित रूप से यह बड़े द्वारा छोटे को 'शिक्षित' करने का मामला था।

आप जानते हैं कि कैसे जब आपको कोई वस्तु चाहिये तो वह तब बिल्कुल नहीं मिलती? कागज़ का वह टुकड़ा, वह एक ब्लाउज़, वह एक टाई, और टेलिफ़ोन के पास रखे वे ढेर सारे पेन तो मुझे पुस्तक की वह कॉपी तो नहीं मिली लेकिन मुझे अपनी सहेली अदिति द्वारा भेंट की गई एक दूसरी पुस्तक ज़रूर मिल गई, डेल द्वारा 1982 में प्रकाशित (27वाँ संस्करण) और मुझे 1983 में उपहार में दी गई। जुनजुन की प्रति उससे बहुत पुरानी है।

इस वक्त आपको यह चेतावनी देना ज़रूरी है कि इस स्तंभ में आपकी मुलाकात दोस्तों और परिवार से होती रहेगी क्योंकि पुस्तकें यदि दोस्त और परिवार नहीं हैं तो क्या हैं?

खैर, पुस्तक याद आने का असर यह हुआ कि उसे ढूँढ़ा गया, और जब वह मिल गई तो उसे पढ़ा गया, ठीक उसी तरह जिस तरह द *साउंड ऑफ़ म्यूज़िक* में मरिया हिदायत देती हैं, बिल्कुल शुरुआत से। परिचय के पहले अनुच्छेद में पूह के बारे में बताया गया है। दूसरे पैराग्राफ़ में कहा गया

है: आप लंदन में चिड़ियाघर जाये बगैर ज़्यादा समय नहीं रह सकते। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो चिड़ियाघर की शुरुआत बिल्कुल शुरू से करते हैं, जिसे **वेइन** (मरिया की भाषा की तरह) कहा जाता है, और हर पिंजरे के सामने से बहुत जल्दी से निकलते हुए **वेआउट** तक पहुँच जाते हैं, लेकिन सबसे अच्छे लोग सीधे अपने उस चहेते जानवर के पास जा पहुँचते हैं जिसे वे सबसे ज़्यादा प्यार करते हैं, और फ़िर वहीं रुक जाते हैं। तो जब क्रिस्टोफ़र रॉबिन *(असल ज़िन्दगी में मिल्न का बेटा.. ए ए मिल्न शृंखला में पुस्तकें लिखा करते थे)* चिड़ियाघर जाता है, तो वह वहाँ जाता है जहाँ पोलार बियर हैं और वह बाएं से तीसरे रक्षक से कुछ फुसफुसाता है, और दरवाज़ों के ताले खुल जाते हैं, और हम अंधेरे रास्तों से होते हुए और संकरी सीढ़ियाँ चढ़ते हुए एक विशेष पिंजरे तक पहुँचते हैं, और पिंजरा खुला है, और कुछ भूरी और रोमदार सी चीज़ उससे बाहर फ़ुदकती है, और खुशी से 'ओह, बिअर' कहते हुए क्रिस्टोफ़र उसकी बाँहों में समा जाते हैं। अब, उस भालू का नाम विन्नी है, जिससे यह पता चलता है कि भालू के लिए यह कितना अच्छा नाम है, लेकिन मज़े की बात यह है कि हमें यह याद नहीं रहता कि विन्नी पूह के बाद बोला जाता है या पूह विन्नी के बाद। एक समय हमें याद था लेकिन हम भूल गये हैं।

और वह बाएं स दरवाज़ों के ताले खुल जाते हैं, और हम अंधेरे रास्तों से होते हुए और संकरी सीढ़ियाँ चढ़ते हुए एक विशेष पिंजरे तक पहुँचते हैं।

तो आप देखें, ऐसा लगता है कि भूलना ठीक है लेकिन जब आप यह याद करने की कोशिश करेंगे कि आप क्या भूल गये हैं तो आपको हमेशा, हमेशा, कोई दूसरी बात याद आ जाएगी। जैसे उदाहरण के लिये जब निर्देशक डैनी बॉएल (और उनकी टीम) ने *स्लमडॉग मिलिअनेयर* के लिये वो ढेर सारे ऑस्कर जीते, तो वे मंच पर टिग्गर की तरह कूद रहे थे सिर्फ़ इसलिए कि उन्होंने अपने बच्चों से वायदा किया था कि वे ऐसा करेंगे। जिन्हें याद नहीं उन्हें याद दिला दूँ कि टिग्गर क्रिस्टोफ़र रॉबिन, विन्नी द पूह, ईओर और उन सब अद्भुत पात्रों का दोस्त है जो *विन्नी द पूह* की दुनिया में रहते हैं।

यह एक संयोग है कि *स्लमडॉग मिलिअनेयर* विकास स्वरूप द्वारा लिखित पुस्तक क्यू एंड ए पर आधारित है। इस वक्त वे कैनेडा में भारत के उच्चायुक्त हैं। मुझे मेरे 50वें जन्मदिन पर तोहफ़े के रूप में क्यू एंड ए मिली थी। मेरे 12वें जन्मदिन पर मेरी कज़िन जो दरअस्ल मेरी आंटी हैं, ने मुझे मार्गरेट मिचेल की लिखी *गॉन विद द विंड* भेंट में दी थी। इस पर भी विवियेन ली और क्लार्क गेबल द्वारा अभिनीत उतनी ही लोकप्रिय फ़िल्म बनी थी। फ़िल्म के अंत में रेट बटलर स्कार्लेट ओऋहारा को इन शब्दों से ध्वस्त करके दरवाज़े से बाहर निकल जाते हैं कि ''सच पूछो तो प्रिय, मुझे इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता।'' यह पंक्ति फ़िल्मी दुनिया में काफ़ी प्रतिष्ठित दर्जा पा चुकी है लेकिन क्या इसे पुस्तक में भी जगह मिली है? यह तो देखना पड़ेगा।

मुझे पुस्तकों की, महान, ध्यान से चुनी हुई, और कई बार लोकप्रिय पुस्तकों की भी, कई प्रतियाँ खरीदकर विशेष लोगों के लिए उन पर हस्ताक्षर लेना बहुत पसंद है। जैरी पिंटो की *एम एंड द बिग हूम*, अल्ताफ़ टायरवाला की *नो गॉड इन साइट*, और अभिनव बिंद्रा तथा रोहित ब्रिजनाथ की *अ शॉट एट हिस्टरी* और कुछ और पुस्तकें इसी तरह कुछ घरों तक पहुँची हैं। यह बड़ा प्रेम है। और बड़ा प्रेम बेहद अजीब तरीकों में ज़ाहिर होता है।

उदाहरण के लिए, मैं शायद *अ शॉट एट हिस्टरी* को कभी न उठाती। हालांकि शूटिंग के उनके कौशल और ओलिंपिक में उनके स्वर्ण पदक के लिए मैं अभिनव बिन्द्रा की कद्र करती हूँ, लेकिन राइफ़ल-शूटिंग इतना रोमांचकारी विषय भी नहीं है। मुझे तब तक यह भी नहीं पता था कि उनकी बिन्द्रा फ़ाउंडेशन द्वारा समर्थित कोई पुस्तक भी है, जब तक मैं ओलिंपिक्स में भारतीयों पर बच्चों के लिए किये जा रहे एक पुस्तक के प्रॉजेक्ट से नहीं जुड़ी। तब भी उनकी पुस्तक पढ़ने का और कोई कारण नहीं था - सिवाय अंदर की वह कभी न तृप्त होनेवाली पिपासा के। तब से सभी के लिए मेरी सिफ़ारिशों की फ़ेहरिस्त में उसका शुमार है।

जन्मदिन पर उपहार देना हमेशा ही भरपूर आनंद की क्रिया रहा है। सवाल सिर्फ़ यह होता है कि कौन सी पुस्तक दी जाए, और कहीं वह पुस्तक उस व्यक्ति के पास पहले से ही तो नहीं है। लेकिन आजकल ज़्यादा नकद का मतलब है कि ज़्यादा लोग अपने लिए ज़्यादा वस्तुएं खरीद सकते हैं, पुस्तकें भी। उन दिनों, लगभग 20 साल पहले, ऐसा नहीं था। पुस्तक का चयन करना फ़ैसला लेनेवाली इतनी बड़ी प्रक्रिया नहीं थी। मेरे बेटे तेजस के दोस्तों के जन्मदिन पर उसके लिए तो बिल्कुल नहीं । वह तब भी पुस्तकें गटक जाता था, और आज भी ऐसा ही करता है, लेकिन एक छोटे लड़के के रूप में भी उसने जान लिया था कि सब ऐसे नहीं होते।

''अम्मा, पुस्तक नहीं चाहिये, वह नहीं पढ़ता/पढ़ती!'' कह कर वह रोता था और मैं कहती थी, ''लेकिन उसे पढ़नी चाहिये'' और वह मायूसी से अपने कंधे उचका देता था। आज जब मैं पीछे मुड़कर देखती हूँ तो मुझे महसूस होता है कि बेचारे को उस वक्त कितना बुरा लगता होगा जब वह बच्चा हर उपहार खोलकर खुशी से चिल्लाता होगा और उसकी साँस रुक जाती होगी और, संभव है कि पुस्तक पर नज़र पड़ते ही वह मुँह बनाता होगा। फ़िर भी मैं इस उम्मीद में पुस्तकों से ही जुड़ी रहूँगी कि एक दिन पुस्तकें अनिच्छुक लोगों को भी जीत लेंगी। हर बार जब ऐसा होता है, एक छोटा सा सितारा और ज़्यादा चमकता है।

स्तंभकार बच्चों की लेखिका एवं वरिष्ठ पत्रकार हैं।

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

आपके गवर्नरों से मिलें

रशीदा भगत और जयश्री

उनका परामर्श शुल्क रु 50 है

डॉक्टर ज़मीन हुसैन, सामान्य चिकित्सक, रोटरी क्लब सोनकच्छ, मंडल 3040

यह गवर्नर वैश्विक अनुदानों के प्रति जोशीले है और इन्होने मंडल अनुदान समिति के अध्यक्ष के रूप में आठ साल और लगातार दो वर्षों तक क्लब के अध्यक्ष के रूप में अपनी सेवा दी है। ज़मीन हुसैन 1988 में ग्वालियर के GRMC से एमबीबीएस पूर्ण करते ही रोटेरियन बने। वह कहते है, ''शुरू के दस वर्ष मैंने रोटरी का केवल साहचर्य के लिए आनंद लिया लेकिन आज मेरी पूरी ज़िंदगी इसके इर्द-गिर्द घूमती है। मैं सबकुछ रोटरी के कारण हूँ।''

अनुदान समिति के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने मंडल के लिए 22 मिलान अनुदानों को संपन्न किया। ''सभी अनुदान स्कूलों में फर्नीचर प्रदान करने के लिए थे; हमारी परियोजनाओं से 90 गाँवों के 1,000 स्कूल इतने अधिक लाभान्वित हुए है कि जब भी किसी स्कूल को किसी चीज़ की जरुरत होती है, तो प्रबंधन को विश्वास होता है कि 'रोटरी वाले' इसका ध्यान रख लेंगे।'' वह कहते है, इन मिलान अनुदान की सफलता के पीछे का रहस्य है अपने अंतर्राष्ट्रीय साझेदारों के साथ पारदर्शक रहना और सही जानकारी एवं तथ्यों के साथ ई-मेल का तुरंत उत्तर देना। ''जब हमारे मिलान साझेदार हमारे मंडल का दौरा करते है, हम उन्हें उन स्कूलों की सूची देते है जहाँ हमने परियोजनाओं को क्रियान्वित किया है और उन्हें उस जगह को चुनने देते है जिसका वे दौरा करना चाहते है। इससे उन्हें विश्वास हो जाता है कि हम अनुदान राशी में हेर-फेर नहीं करते।''

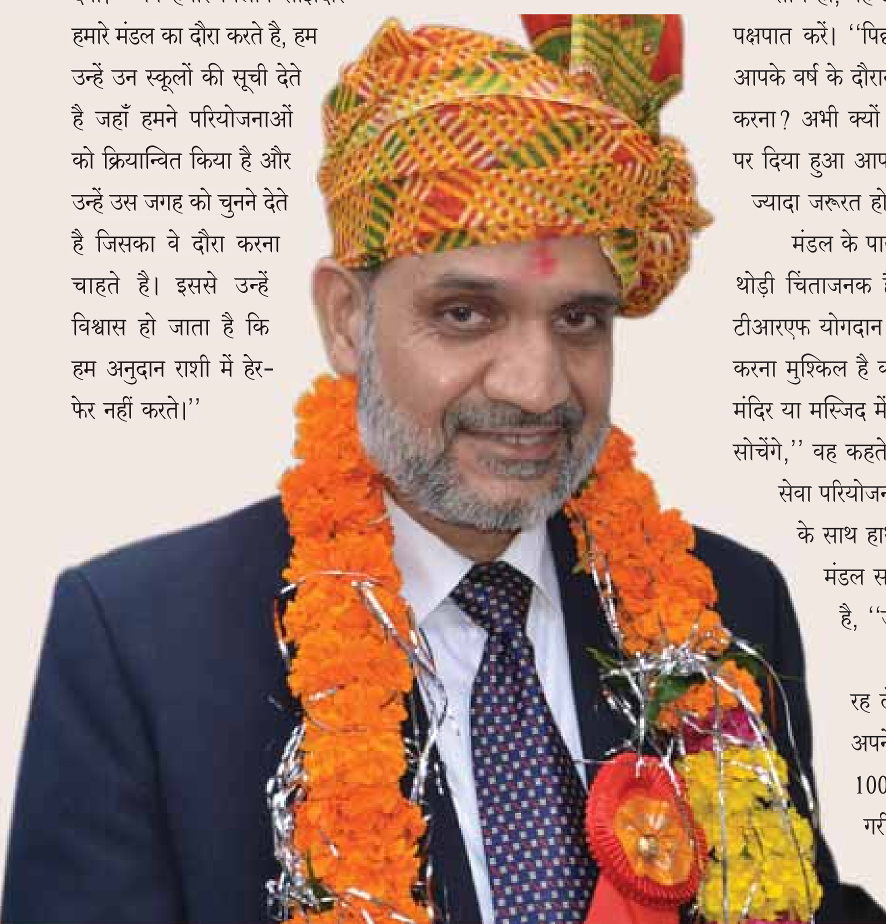

हुसैन इस बात पर दृढ़ विश्वास रखते है कि रोटेरियनों को सख्ती से रोटरी की नीतियों के हिसाब से चलना चाहिए। वह कहते है, ''सुधारों की शुरुआत ऊपर से होना चाहिए। जब नेतृत्वकर्ता इस बात का सुझाव देते है कि किसी भी प्रकार का चुनाव प्रचार या कोई अन्य कुप्रथाएं नहीं होना चाहिए, तो उन्हें भी इसका पालन करना चाहिए। दुर्भाग्यवश, रोटेरियन राजनेताओं से बड़े राजनेता है।'' लेकिन इन ''छोटे दोषों'' के बावजूद भी वह रोटरी से प्यार करते है और वह आश्वस्त है कि सब कुछ फिर से सही हो जाएगा।

सेवा परियोजनाएं एक वरदान है और यदि सही ढंग से पूर्ण की जाए, तो ये अधिक सदस्यों को आकर्षित कर सकती है। उन्होंने उनके क्लबों से निरर्थक खर्चों को कम करने और पैसे को परियोजनाओं की ओर प्रवाहित करने के लिए कहा है। ''बैनरों पर अध्यक्ष या गवर्नर की कोई भी तस्वीर नहीं छपी होनी चाहिए। अधिकांश बार यह होता है कि नेतृत्वकर्ताओं की तस्वीर मुख्य रूप से छपती है और रोटरी का चक्र एक कोने में छाप दिया जाता है।''

साथ ही, वह इस बात को भी नहीं मानते कि लोग नेतृत्वकर्ताओं के साथ पक्षपात करें। ''पिछले वर्ष जब एक रोटेरियन मेरे पास आया और कहा, मैं आपके वर्ष के दौरान इतना दान करूंगा,'' मैंने कहा, ''मेरे वर्ष का इंतज़ार क्यों करना? अभी क्यों नहीं? लोगों की तकलीफें इंतज़ार नहीं कर सकती। समय पर दिया हुआ आपका दान लोगों की उस वक्त मदद करेगा जब इसकी सबसे ज्यादा जरूरत होगी।''

मंडल के पास 2,100 रोटेरियन है। वह कहते है, ''सदस्यता की स्थिति थोड़ी चिंताजनक है लेकिन मैं इसमें 20 प्रतिशत का सुधार ले आऊंगा।'' टीआरएफ योगदान के लिए उनका लक्ष्य 300,000 डॉलर का है जिसे इकठ्ठा करना मुश्किल है क्योंकि बहुत से क्लब आदिवासी इलाकों में है और ''लोग मंदिर या मस्जिद में दान कर देंगे लेकिन संस्थान में दान करने के लिए दो बार सोचेंगे,'' वह कहते है।

सेवा परियोजनाओं को करने के लिए वह अपने दल को लायंस के सदस्यों के साथ हाथ मिलाने के लिए प्रोत्साहित कर रहे है और उन्होंने उनकी मंडल सभा में लायंस के डीजी को आमंत्रित किया है। हुसैन कहते है, ''उन्होंने भी साथ काम करने की रुचि ज़ाहिर की है।''

वह कभी अपने पिता के शब्दों को नहीं भूलें: ''कम खर्चे में रह लेना मगर पीड़ितों के लिए दान खुले दिल से करना।'' वह अपने मरीजों से केवल रु 50 शुल्क लेते है और प्रतिदिन लगभग 100 मरीजों का इलाज करते है। वह आगे कहते है, ''वे सभी बहुत गरीब है और बड़े चिकित्सीय खर्चों को वहन नहीं कर सकते।''

रशीदा भगत

प्रफुल्ल जे शर्मा

मुद्रण, रोटरी क्लब बोरीवल्ली, मंडल 3141

परियोजना की निरंतरता को सुनिश्चित करेंगे

उनकी पहली प्राथमिकता बेशक रोटरी की मूल विषय-वस्तु - स्वयं से बढ़कर सेवा - होना है। लेकिन इस मापदण्ड के भीतर, डीजी प्रफुल्ल शर्मा उनकी ऊर्जा को जल पर केन्द्रित करेंगे। ''मैं ग्रामीण इलाकों के जल संकट पर ध्यान केन्द्रित करना चाहता हूँ। बेशक, भारत के शहरी क्षेत्र भी पानी की कमी से जूझते है, लेकिन हम शहरवासी दूसरों की परवाह किए बिना अक्सर बहुत सारा पानी बर्बाद करते है। यदि हम बस थोड़ी अतिरिक्त सावधानी बरते और पानी को संरक्षित करना सीखें, तो ग्रामीण इलाकों के हमारे भाई एवं बहन, विशेषरूप से किसान, जो इतनी परेशानियों का सामना कर रहे है, लाभान्वित होंगे,'' वह गंभीरतापूर्वक कहते है।

इस वर्ष दूसरे स्थान पर शर्मा का ध्यान नवीकरणीय ऊर्जा पर है; एक बार फिर वह लापरवाही का संदेश फैलाना चाहते है जिसने अधिकतर शहरी भारत को पीड़ित कर रखा है। वह अफ़सोस करते है, ''हमारे राज्य में सबसे अधिक ऊर्जा मुंबई और अन्य बड़े शहरों में उपभोग की जाती है, और यहाँ पर भी, हम बिजली की कमी एवं बिजली की कटौती झेलने वाले क्षेत्रों के बारे में विचार किये बिना बहुत सारी ऊर्जा बर्बाद करते है।''

उनके ध्यानाकर्षण क्षेत्रों में तीसरा स्थान कौशल विकास का है। ''मुंबई जैसे मेट्रो शहर में भी हमें प्लम्बर, बिजली का काम करने वाले, ए.सी. सुधारने वाले, इत्यादि नहीं मिलते है। इसलिए हम कौशल विकास पर भी काम कर रहे है।''

एक सुखद संकल्प जो आप इस डीजी से सुनते है वह जादुई शब्द ''निरंतरता है।'' उनके मंडल में चली आ रही सभी परियोजनाओं को उनके द्वारा ज़ारी रखा गया है। ''मेरे पूर्वाधिकारी गोपाल मंधानिया ने बच्चों के दिल की सर्जरी और मधुमेह नियंत्रण एवं प्रबंधन की शुरूआत की थी। दोनों ही बढ़िया परियोजनाएं है और उन्हें ज़ारी रखा जा रहा है। मैंने फैसला लिया है कि सभी मौजूदा परियोजनाएं जो समुदाय को लाभांवित कर रही है को बिना किसी पक्षपात के ज़ारी रखा जाएगा। वास्तव में, आने वाले गवर्नर और डीजीएन ने भी मौजूदा परियोजनाओं को ज़ारी रखने का वचन दिया है, वह आगे कहते है।''

स्वास्थ्य सेवा और धरती का कायाकल्प

यह डीजी सदस्यता बढ़ाने पर उनकी ऊर्जा केन्द्रित कर रहे है, और इस वर्ष उनका लक्ष्य 15 प्रतिशत बढ़ोत्तरी करने का है, ''जिनमें से मैं सुनिश्चित करना चाहता हूँ कि 5 प्रतिशत, या एक तिहाई नए सदस्य 45 से कम उम्र के महिला एवं युवा हो।'' उनका दूसरा बड़ा ध्यानाकर्षण क्षेत्र स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र है, और समुदाय को उपलब्ध चिकित्सीय सेवाओं को बेहतर करने के उद्देश्य से उन्होंने HOPE - हॉस्पिटल प्रोजेक्ट एंड इक्विपमेंट - नाम का एक मोबाइल एप लाया है। यह एप क्लीनिक स्वास्थ्य सेवा केन्द्रों, सरकारी अस्पतालों, तालुक सामान्य अस्पतालों और मेडिकल कॉलेज के अस्पतालों को आधारभूत सुविधाएं प्रदान कर रहा है। यह केरल के मुख्यमंत्री की *आर्द्रम* (दया) परियोजना की भी सहायता करता है। डीजी सुरेश मैथ्यू कहते है, ''राज्य सरकार मौजूदा सार्वजनिक एवं अन्य स्वास्थ्य केन्द्रों में स्वास्थ्य सेवा सुविधाओं को बेहतर बनाने का प्रयास कर रही है, और हम इस पहल का समर्थन कर रहे है। HOPE के अंतर्गत, हम चादर से लेकर डायलिसिस मशीन तक विभिन्न स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान कर रहे है।''

उन्होंने किडनी फेडरेशन ऑफ़ इंडिया के साथ भी साझेदारी की है और इस साझेदारी के अंतर्गत, चिकित्सीय जांच एवं अन्य सुविधाओं से परिपूर्ण एक बस गाँवों में जाकर दीर्घकालिक गुर्दे की बीमारियों के बारे में जागरूकता फैला रही है एवं जांच कर रही है।

इसके अलावा, वह रोई अध्यक्ष इयान रिसले के दुनिया को हरा-भरा करने के प्रयोजन के लिए अपने मंडल का पूर्ण समर्थन प्रदान करना चाहते है। ''दुर्भाग्यवश, जबकि रोटरी की पर्यावरण बचाओ पहल के बारे में उच्च और उच्च-मध्यम वर्गों को पता है, निम्न वर्गों को इसके बारे में कुछ नहीं पता। क्या आप इस पर यकीन करेंगे कि मेरे मंडल में कुछ प्रतिशत लोग ऐसे है जो रोटरी को 'लॉटरी' कहते है! इसलिए केवल समुदाय में जागरूकता फैलाने एवं रोटरी की सार्वजानिक छवि को बढ़ाने के लिए हम एक पर्यावरण बचाओ पहल REAP - रोटरी एम्पावरमेंट ऑफ़ एग्रीकल्चरल प्रोडक्शन - के साथ सामने आए है।'' साथ ही, प्लेनेट ट्री नामक एक अन्य पर्यावरण बचाओ पहल के अंतर्गत, कुल 1.5 लाख पौधों को रोपा जा रहा है। उन्होंने 'सेफ साउंड' नाम की एक अन्य पर्यावरण पहल शुरू की है और इसके अंतर्गत मंडल के रोटेरियन ध्वनि प्रदूषण को रोकने या कम करने के ऊपर कार्य कर रहे है।

सुरेश मैथ्यू

खाद्य संसाधन और निर्यात

रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सेंट्रल, मंडल 3211

रशीदा भगत

उनका ध्यान, 'हैप्पी स्कूल' पर हैं

रोटरी से वह 1990 में एक अधिकृत सदस्य के रूप में ''दोस्त बनाने के लिए जुड़े और जल्द ही इसे व्यक्तिगत विकास के लिए अद्भुत पाया।'' पूर्वी कनाडा के लिए पाँच नौजवानों की अगुवाई कर रहे GSE दल के नेतृत्वकर्ता के रूप में वह अपने कार्य का ध्यान करते है। ''वह कहते है, वह एक शानदार अनुभव था, नए रिश्ते बनाना और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करना। उनकी पत्नी, विजया एम. एस., भी एक रोटेरियन है और लड़के, एक रोटरेक्टर, को रोटरी बंगलौर से जुड़ने का निमंत्रण मिला है।''

उनका ध्यान सरकारी स्कूलों में ई-शिक्षण सुविधाएं और थळपड तत्वों को प्रदान करने पर है। मंडल के सभी 80 क्लबों को एक-एक स्कूल दिया गया है जिसे उन्हें हैप्पी स्कूल में बदलना है। रोई अध्यक्ष के धरती को हरा-भरा करने के आह्वान से प्रभावित होकर, उनका लक्ष्य तीन लाख पौधों को रोपित करने का है। यह लक्ष्य पूर्ण करने योग्य है क्योंकि मंडल में 3,000 रोटेरियन है।

हालाँकि, प्रकाश उनके 350,000 डॉलर के टीआरएफ लक्ष्य को हासिल करने को लेकर चिंतित है। बहुत से क्लब ग्रामीण इलाकों में है और इसलिए ''रोटेरियन रु 30,000 देय राशी, मंडल बैठकों और सम्मेलन के लिए खर्च करते है। इस कारण बहुत कम ही टीआरएफ में दान देने के लिए उत्सुक है,'' वह समझाते है।

लेकिन वह सदस्यता वृद्धि को लेकर विश्वस्त है, 500 नए सदस्यों, अधिकतर युवा एवं महिलाओं को नियुक्त करने की योजना के साथ। 11 नए क्लबों को अधिकृत करने के उनके लक्ष्य में से उन्होंने चार नए क्लबों को अधिकृत कर दिया है।

जी एन प्रकाश

वाहनों की एक्सेसरीज़ के विक्रेता

रोटरी क्लब शिमोगा सेंट्रल, मंडल 3182

सुनील सराफ

होटल व्यवसायी, रोटरी क्लब तेज़पुर, मंडल 3240

वह कमजोर क्लबों का पुनरुत्थान करना चाहते है

सुनील सराफ, जो वर्ष 1988 से रोटेरियन है और 20 वर्ष की आयु से रोटरेक्टर थे, कहते है, ''मैंने कभी नहीं सोचा था मैं डीजी बनूँगा। 2014 में जब मैंने पहली बार मेरा नामांकन दर्ज किया तब मैं हार गया था।'' उनका कार्यकाल भाग-दौड़ भरा रहा है क्योंकि ''मैं दुनिया के सबसे बड़े भौगोलिक क्षेत्रों में से एक को कवर करता हूँ; मंडल में सात उत्तर-पूर्वी राज्य, सिक्किम और बंगाल का कुछ हिस्सा शामिल है। मुझे एक क्लब तक पहुँचने के लिए कम-से-कम 4-5 घंटे की यात्रा करनी पड़ती है और यातायात के सभी साधनों - रेल, सड़क और हवाई जहाज का प्रयोग करना पड़ता है। इसके बावजूद, मैं मेरे कार्यभार के हर मिनट का आनंद लेता हूँ।''

उनका मुख्य उद्देश्य ''कमजोर क्लब जो ICU में है'' में जान डालना है। बंगाल और असम में ऐसे 12-13 क्लब है। ''वे रोटरी के बारे में लगभग कुछ नहीं जानते। जब मैंने उनमें से कुछ का दौरा किया, तो सदस्य बहुत खुश हुए और वे सामुदायिक परियोजनाएं करने को लेकर उत्साहित थे।''

सराफ मौजूदा 3,000 सदस्यों में 600 नए सदस्यों को जोड़ना चाहते है; अब तक 150 नए रोटेरियन भर्ती किये जा चुके है। वह 12 नए रोटरी क्लबों को ऐसे इलाकों में स्थापित करने पर कार्य कर रहे है जहाँ अब तक रोटरी का प्रतिनिधित्व नहीं हुआ है। ''कूचबिहार, बगडोगरा, बोखाखट जैसे स्थान बढ़ते हुए नगर है; रोटरी को वहाँ होना चाहिए,'' कुछ क्षेत्रों के नाम बताते हुए वह कहते है।

उनके टीआरएफ योगदान का लक्ष्य 400,000 डॉलर है। उनकी जोरहट, सिलीगुड़ी, दुर्गापुर और माल्दा में डायलिसिस केंद्र स्थापित करने की, रायगंज में एक ब्लड बैंक स्थापित करने की एवं 58 रोटरी क्लबों की मदद से 58 सरकारी स्कूलों को उन्नत करने की योजना है। वह कहते है, उनके पास परियोजना के लिए 70,000 डॉलर का वैश्विक अनुदान है। ■

इंद्री गाँव के लिए रोटरी शौचालय

किरण ज़ेहरा

विद्या के पति से जब पूछते है कि स्वयं का एक शौचालय होने पर वह कैसा महसूस करते है, तो वह कहते है ''मैडम यह सब तो लेडीज़ लोग का मामला है... आप कृपया मेरी पत्नी से बात कीजिये।'' दूसरी ओर, विद्या काफी खुश प्रतीत हो रही है कि उसे ''कम पानी पीना या कम खाना और सबसे अधिक महत्वपूर्ण शौच करने के लिए अँधेरे का इंतज़ार नहीं करना होगा। धन्यवाद रोटरी,'' वह कहती है।

विद्या एवं इंद्री, दिल्ली से लगभग 65 किमी दूर स्थित हरियाणा का एक गाँव, की अन्य महिलाओं के लिए एक शौचालय का होना एक टीवी के होने से अधिक गौरवपूर्ण बात है। रोटरी शौचालय की एक अन्य लाभार्थी कहती है, ''अब खेतों में लोटा उठाकर नहीं जाना पड़ेगा।''

रोटरी क्लब दिल्ली मिडवेस्ट, मंडल 3011, ने सुलभ सैनिटेशन मिशन फाउंडेशन, रोटरी क्लब डेन्वेर, मंडल 5450, यूएसए और टीआरएफ के साथ साहचर्य में इंद्री में 20 शौचालयों का निर्माण किया है। वैश्विक अनुदान परियोजना समन्वयक अशोक जैन समझाते है कि सुलभ के साथ समझौते में ग्रामीणों को शिक्षित करना एवं व्यक्तिगत स्वच्छता पर जागरूकता पैदा करना शामिल है। गाँव के सामुदायिक केंद्र एवं स्कूल में भाषणों एवं प्रदर्शनों के माध्यम से यह काम समय-समय पर किया जाता है।

वह कहते है, ''व्यक्तिगत स्वच्छता जागरूकता जरूरी है क्योंकि, ग्रामीणों के लिए खुले में शौच करना एक आदत बन चुकी है और दुर्भाग्यवश उनमें से कुछ ऐसा करने में सुखद महसूस करते है।'' एक अन्य लाभार्थी ललिता कहती है, ''हम खेतों में जाने के कितने आदी हो चुके थे।'' परन्तु उसके 12 वर्षीय बेटे ने एक शौचालय के निर्माण की जिद की। उसके स्कूल में एक शौचालय है। ''हमारे पास शौचालय बनाने के लिए पर्याप्त पैसे नहीं थे। और हम हमेशा यही सोचते थे कि शौचालय की क्या ज़रुरत है?''

> हमारे पास शौचालय बनाने के लिए पर्याप्त पैसे नहीं थे। और हम हमेशा यही सोचते थे कि शौचालय की क्या ज़रुरत है?
>
> ललिता, एक लाभार्थी।

डीआरएफसी सुशील खुराना (बीच में) गाँव में एक शौचालय के उद्घाटन के बाद, लाभार्थीयों के साथ।

जैन कहते है, ''रातों रात कुछ भी नहीं होता है, ना ही जागरूकता फैलाना और ना ही शौचालय बनाना।'' 2015-16 में, जब वह क्लब के अध्यक्ष थे, वह शौचालय बनाना चाहते थे और भाग्यवश रोटरी क्लब डेन्वेर के सदस्य रोटेरियन वेद नंदा को क्लब की एक बैठक में अतिथि वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया। उन्होंने हमें उनकी क्लब के साथ सहभागिता में एक वैश्विक अनुदान परियोजना की योजना बनाने का सुझाव दिया। रोटेरियन विलियम कोर्स्टाद और वेद नंदा की मदद से वैश्विक अनुदान प्राप्त हुआ।

सुलभ के साथ स्थानीय साझेदारी की गयी और एक संयुक्त सर्वेक्षण के पश्चात् ''हमनें इंद्री का निश्चय किया, क्योंकि इसके पड़ोसी गाँवों के मुकाबले, इस गाँव की औसत आय कम थी।'' इस अनुदान के अंतर्गत 65 घरों में शौचालय बनाने का निश्चय किया गया, जिसमें से 20 शौचालयों का काम पूर्ण हो गया है और जुलाई में डीआरएफसी सुशील खुराना की उपस्थिति में इन्हें लोगों को सौंप दिया गया है।

जैन याद करते है कि कैसे उन्हें पता लगा कि उनमें से एक शौचालय का इस्तेमाल कूड़ेदान के रूप में किया जा रहा था। ''वह निराशाजनक था। फिर हमने ग्रामीणों से बात की और उनसे कठोरतापूर्वक ऐसा ना करने के लिए कहा।'' क्लब के सदस्य गाँव का दौरा करते रहते है ताकि निरीक्षण किया जा सके कि शौचालय उनका उद्देश्य पूरा कर रहे है या नहीं, कम से कम उस वक्त तक जब तक कि ग्रामीणों का रवैया उसके प्रति अनुकूल ना हो जायें।■

पोलियो को जड़ से मिटाने के लिए रोटरी ने दिये 49.5 मिलियन डॉलर

अबतक 2017 में केवल 11 पुख्ता पोलियो मामलों के साथ, दुनिया पोलियो को जड़ से समाप्त करने की कगार पर है। पोलियो, एक टीके से रोके जा सकने वाला रोग जिसने एक समय में प्रति वर्ष हज़ारों बच्चों को लकवाग्रस्त किया था।

इस ऐतिहासिक प्रगति का सम्मान करने के लिए, 24 अक्टूबर को दुनिया भर के रोटरी क्लबों ने रोटरी अंतर्राष्ट्रीय के पांचवे वार्षिक विश्व पोलियो दिवस उत्सव के साथ में कार्यक्रमों का आयोजन किया। इस वर्ष, समारोह की सह-मेजबानी रोटरी और बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन ने की और इसका आयोजन संस्थान के सीएटल स्थित मुख्यालय में हुआ। कार्यक्रम ने पोलियो को खत्म करने की वैश्विक लड़ाई पर एक अपडेट एवं अतिथि वक्ताओं, मशहूर व्यक्तियों, और सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों की श्रृंखला की पेशकश की। समारोह का endpolio.org/worldpolioday पर सीधा प्रसारण किया गया।

रोटरी अंतर्राष्ट्रीय पोलियोप्लस समिति, जो संगठन के पोलियो उन्मूलन प्रयासों का नेतृत्व करती है, के अध्यक्ष माइकल के. मैकगवर्न कहते है, ''पोलियो के उन्मूलन के लिए रोटरी और उसके साझेदार पहले से अधिक करीब है। हमारी सफलताओं का उत्सव मनाने, जन-जागरूकता फैलाने, और भलाई हेतु इस लकवाग्रस्त बीमारी को खत्म करने के लिए आवश्यक बातों पर चर्चा करने के लिए विश्व पोलियो दिवस एक आदर्श अवसर है।''

उन्मूलन के लिए बिना पूर्ण निधीयन और राजनीतिक प्रतिबद्धता के, बीमारी उन देशों में वापस आ सकती है जो अब पोलियो-मुक्त है और हर जगह सभी बच्चों को खतरे में डाल सकती है। टीकाकरण में सहायता करने और वैश्विक पोलियो उन्मूलन पहल के नेतृत्व में की जा रही निगरानी की गतिविधियों के लिए रोटरी अनुदानों को $ 49.5 मिलियन दे रहा है। कुछ धन तीन देशों में पोलियो को खत्म करने के प्रयासों में सहायता करेगा जहाँ पोलियो स्थानिक बना हुआ है: अफ़ग़ानिस्तान ($ 9.32 मिलियन), पाकिस्तान ($ 8.94 मिलियन), और नाइजीरिया ($ 7.71 मिलियन)। और अधिक निधीयन पोलियो की चपेट में आ सकने वाले छह देशों को पोलियो मुक्त बनाए रखने के प्रयासों में मदद करेगा: चाड ($ 2.37 मिलियन), कांगो लोकतान्त्रिक गणराज्य ($ 4.5 मिलियन), गिनी ($ 961,000), सोमालिया (1.62 मिलियन), दक्षिण सूडान ($ 3.77 मिलियन), और सूडान ($ 2.56 मिलियन)। अतिरिक्त $ 7.74 मिलियन अफ्रीका और पूर्वी भूमध्यसागरीय क्षेत्र में निगरानी की गतिविधियों के लिए जाएगा।

एकता के एक प्रदर्शन और पोलियो उन्मूलन के लिए जागरूकता फैलाने एवं धन जुटाने के लिए, दुनिया भर के रोटरी क्लब विश्व पोलियो दिवस के लिए लगभग 1,900 कार्यक्रमों को आयोजित करेंगे।

मैकगवर्न कहते है, ''पोलियो से सभी बच्चों को सुरक्षित करने के लिए, विश्व सरकारों और दानकर्ताओं को उनकी प्रतिबद्धताओं द्वारा अवश्य मदद करना चाहिए ताकि स्थानिक और खतरे में मौजूद पोलियो-मुक्त देशों में महत्वपूर्ण कार्यों का निधीयन और कठोर रोग निगरानी की सहायता की जा सके।'' अगले तीन वर्षों में रोटरी $ 150 मिलियन इकठ्ठा करने के लिए प्रतिबद्ध है, जिसे बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन द्वारा 1-के लिए-2 में मिलाया जाएगा, जिससे पोलियो उन्मूलन गतिविधियों के लिए $ 450 मिलियन आएंगे जिनमें टीकाकरण एवं निगरानी शामिल है।

रोटरी ने 1985 में उसका पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम पोलियोप्लस शुरू किया, और 1988 में विश्व स्वास्थ्य संगठन, यूनिसेफ, और यू.एस. सेंटर्स फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन के साथ वैश्विक पोलियो उन्मूलन पहल में एक साझेदार बना। बाद में, बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन भी एक साझेदार बना। इस पहल की शुरुआत से अब तक, पोलियो के मामलों में 99.9 प्रतिशत से अधिक की गिरावट आई है, 1988 में 350,000 मामलों से 2016 में 37 मामलों तक। कुल मिलाकर रोटरी ने $ 1.7 बिलियन - जिसमें गेट्स फाउंडेशन का मिलान धन शामिल है - से अधिक का एवं पोलियो से 122 देशों के 2.5 बिलियन से अधिक बच्चों को बचाने के लिए अनगिनत स्वयंसेवा घंटों का योगदान किया है।

© www.endpolio.org

पोलियो को खत्म करने के बारे में 5 बातें जो शायद आपको पता ना हो

पोलियो को खत्म करने का रास्ता लम्बा और मुश्किल रहा है, जिसका वर्ष 1985 से रोटरी ने नेतृत्व किया है। 1988 में 350,000 मामलों से इस वर्ष अब तक 10 मामलों तक पहुँचने के लिए हजारों लोगों का समय, पैसा, समर्पण और नवपरिवर्तन लगा है जो इस बीमारी को खत्म करने के लिए काम कर रहे है।

पोलियो को खत्म करने की लड़ाई के बारे में ये पाँच बाते शायद आपको पता ना हो:

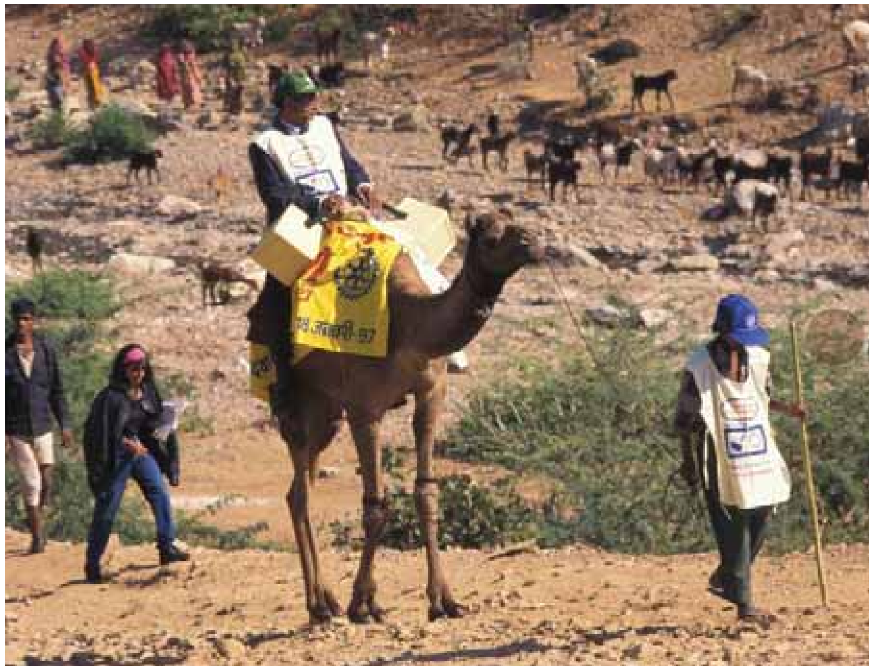

ऊंट पर सवार एक पोलियो वैक्सीनेटर।

1. सीरिया में आइसक्रीम फेक्ट्रियाँ आइस पैक जमाकर मदद कर रही है जिनका इस्तेमाल स्वास्थ्य कार्यकर्ता टीकाकरण अभियान के दौरान पोलियो के टीके को ठंडा रखने के लिए करते है।

2. बीमारी को खत्म करने की हमारी लड़ाई में सितारें राजदूत बन गए। उनमें शामिल है WWE कुश्ती सुपरस्टार जॉन सीना, अदाकारा क्रिस्टन बेल, एक्शन फिल्म सितारा जैकी चेन, गोल्फ दिग्गज जैक निकलॉस, ग्रैमी पुरस्कार विजेता गायक एंजलिक किद्जो और जिगी मारले, नोबेल शांति पुरस्कार विजेता डेस्मंड टूटू, मानव विज्ञानी डॉक्टर जेन गूडाल, बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन के सह-संस्थापक बिल गेट्स, और दुनिया के प्रख्यात वायलिनवादक एवं पोलियो से बचने वाले इत्ज्हक पर्लमैन।

3. स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं एवं रोटरी स्वयंसेवकों ने पर्वतों की चढ़ाई की, रेगिस्तानों को पार किया और दूरगामी द्वीपों तक नाव से गए, अपनी जान की बाजी लगाकर इस बीमारी के खिलाफ बच्चों का टीकाकरण करने के लिए। उन यात्राओं को करने के लिए रोटरी ने 1,500 मोटरसाइकिलें और 6,700 अन्य वाहनों, और तो और 17 नावों के लिए पैसा दिया। दूरस्थ इलाकों में बच्चों का टीकाकरण करने के लिए टीकाकरण करने वालों ने हाथी, गधे और ऊंट की पीठ तक पर बैठकर यात्रा की।

4. पाकिस्तान में, पोलियो कार्यक्रम स्थानीय महिला टीकाकरणकर्ताओं और निरीक्षणकर्ताओं को काम में लगाने पर ज़ोर देता है। 21,000 से अधिक टीकाकरणकर्ता, जिनमें से 83 प्रतिशत महिलाएं है, देश के इतिहास में सर्वाधिक टीकाकरण कवरेज दर हासिल कर रहे है।

5. रोटरी और उसके साझेदारों के कारण, 16 मिलियन लोग जिन्हें शायद लकवा मार गया होता आज चल रहे है। सब मिलाकर, 1988 से अब तक 2.5 बिलियन बच्चों का टीकाकरण किया जा चुका है।

पाकिस्तान में, 21,000 से अधिक टीकाकरणकर्ता, जिनमें से 83 प्रतिशत महिलाएं है, देश के इतिहास में सर्वाधिक टीकाकरण कवरेज दर हासिल कर रहे है।

© www.endpolio.org

टेक्सटाइल ट्रैल

रंगीन लिबास बनाम मद्रास

सबिता राधाकृष्णा

हममें से कितने जानते हैं कि भारत में कपड़ों और ब्रिटिश साम्राज्य का इतिहास कुछ गुंथा हुआ सा है? भारतीय कपड़े इतिहास में क्रांतिकारी परिवर्तन लाए है। गांधीजी ने (अंग्रेज़ों की) आज्ञा का उल्लंघन करते हुए विदेशी कपड़ों की होली जलाई थी, उन्हें उन संभ्रांत भारतीयों से इकट्ठा करके जो अंग्रेज़ों की हाँ में हाँ मिलाना चाहते थे। इसने अंग्रेज़ों की तिजोरियाँ खाली कर दीं और यह उपनिवेशीय शासन के अंत की शुरूआत का एक प्रतीक भी बन गया ।

वह हथकरघा (उद्योग) ही था जिसके कारण फ्रैंसिस डे ने मद्रास को अंग्रेज़ों की नई बसापत के लिए चुना। वे इस बात से प्रभावित थे कि सिर्फ़ मद्रास चित्रों, और लाँगक्लॉथ एवं मॉरिस के लिये बड़ा भंडारघर था। वे दरअस्ल हाथ से किये गए छींटोंवाले ब्लॉक प्रिंट का वर्णन कर रहे थे और मॉरिस के मायने थे नीला कपड़ा। कॉरोमंडल तट की एक यात्रा से लौटने के बाद स्थानीय नाईक दामरला वेंकटाद्रि ने उन्हें वहाँ घुमाया। डे ने व्यापारियों, चित्रकारों और जुलाहों से मुलाकात की और अनेक प्रकार के कपड़ों का निरीक्षण किया। उन्हें जिस बात ने सबसे ज़्यादा प्रभावित किया वह थी उन कपड़ों की कीमत, क्योंकि वहाँ कपड़ा अर्मागाँव से, जो पुलिकाट की उत्तर दिशा में 35 मील दूर था, 15 प्रतिशत सस्ता था।

ईस्ट इंडिया कंपनी पूर्वीय तट पर एक फ़ैक्ट्री शुरू करना चाहती थी, और उसने इसके लिए अर्मागाँव को चुना था। चूँकि छपे सूती कपड़े का, जिसकी माँग बहुत ज़्यादा थी, उत्पादन स्थानीय ही था और उसकी क़ालिटी भी अच्छी नहीं थी, उस बंदरगाह को व्यापार के लिए इस्तेमाल नहीं किया जा सकता था। एक नई बस्ती खोजना ज़रूरी हो चला था। मद्रासपट्टनम में सूती कपड़े की कीमत में अच्छे फ़र्क और व्यापार के उत्कृष्ट अवसर देखते हुए फ्रैंसिस डे ने अपनी नई बसापत चुनी - मद्रासपट्टनम। बाकी सब इतिहास में दर्ज़ है क्योंकि औपनिवेशिक भारत में मद्रास एक महत्वपूर्ण पोत बन कर उभरा। मद्रास को मसालों या सोने के लिए नहीं बल्कि कपड़े के लिए स्थापित किया गया था।

मद्रास की कपास का अफ़्रीका और मध्य पूर्वीय देशों में निर्यात किया जाता था जहाँ उसे पगड़ी बनाने के लिए प्रयोग में लाया जाता था। सोलहवीं सदी में यह कपड़ा और मुलायम बनाया गया और हाथ से छपे हुए ब्लॉक प्रिंट की शुरूआत हुई। फ़िर 1800 से चारखानेदार प्रिंट का फ़ैशन आ गया।

सबिता राधाकृष्णा

इस हद तक कि 18वीं और 19वीं सदी में पश्चिम अफ़्रीका, गोल्ड कोस्ट और घाना की दुल्हनें अपने गाउन मद्रास चेक के कपड़े से ही बनवाना पसंद करती थीं।

मद्रास के चेक

भारतीय बाज़ार में विविध प्रकार के हथकरघा कपड़ों की आई बाढ़ में से व्यापार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है मद्रास चेक जिसे मद्रास हैंडकर्चीफ़, जॉर्ज क्लॉथ, गिनी क्लॉथ और ब्लीडिंग मद्रास भी कहा जाता है। 60x40 काउंट के हथकरघा में बुना हुआ यह चटकीला रंगीला कपड़ा मूलतः एक चारखानेदार कपड़ा है जिसमें पट्टियों और ठोस चौकोर के आकारों में फ़ेरबदल किया जाता है। पट्टियाँ और चौकोर आकार आम तौर पर लाल, नीले और सफ़ेद रंग के होते हैं। अंग्रेज़ व्यापारियों ने इस आठ मीटर लंबे और 36 इंच की चौड़ाई वाले कपड़े के थान (बोल्ट) के लिए, जिसे तीन चौकोर रुमालों में काटा जा सकता था, एक नाम गढ़ा - आरएमएचके (जो अंग्रेज़ी के शब्दों रियल मैड्रास हैंडकर्चीफ़ का आदिवर्णिक यानी छोटा रूप है)। यह माना जाता है कि यह नाम एक सोची समझी चाल थी जिससे निर्यातक लंदन में घुसते वक्त कपड़ों के गट्ठों पर लगनेवाले कर से बच निकलते थे।

स्कॉटिश रेजिमेंटों (स्कॉटलैंड के सैन्य दलों) ने 1800 में दक्षिण भारत पर कब्ज़ा कर लिया, और किंवदंती है कि चारखानेदार आकार स्कॉटलैंड के ऊनी चारखानेदार डिज़ाइन, और 1822 में चौथे किंग जॉर्ज की स्कॉटलैंड में हुई यात्रा से शुरू हुए ऊनी कपड़ों के जुनून से प्रेरित था।

वास्तविक दस्तावेज़ों के अभाव में इस बारे में और भी धारणाएं हैं। वस्त्र विद्वान जसलीन धमीजा का कहना है कि चारखानेदार सूती कपड़े आंध्र प्रदेश के दक्षिण और मद्रास में अंग्रेज़ों के भारत आने के सैंकड़ों साल पहले से मौजूद थे। वे 16वीं सदी के पुर्तगाली दस्तावेज़ों का हवाला देती हैं जो हज यात्रियों में चेकवाले स्कार्फ़ या रुमाल की लोकप्रियता बयान करते हैं, और दावा करती हैं कि इन रुमालों की शुरूआत मसूलिपटनम में हुई जहाँ वे फ़ारसियों और अरबों द्वारा दोबारा मक्का ले जाने से पहले देवों के चेहरे पोंछने के लिए बुने जाते थे। ये चेक उस समय इतने प्रचलन में थे कि इन्होंने हमारी काँचीपुरम *पट्टू* (रेशमवाली) के मुख्य डिज़ाइन को प्रभावित किया होगा!

ब्लीडिंग मैड्रास नाम क्यों? क्योंकि आप जितनी बार इस कपड़े को धोते हैं उतनी ही बार इसका रंग छूटता है और कपड़ा हर बार बिना

सबिता राधाकृष्णा

मद्रास चेक सर को ढांकने के लिए अफ़्रीकी महिलाओं द्वारा इस्तेमाल किया जाता था।

धुँधला हुए या फ़ीका लगे एक नया अवतार ले लेता है । आम तौर पर धागों को गहरे नीले और हल्दी के (पीले) रंगों में रंगा जाता था। और मूल नीला रंग पीले के साथ मिलकर उसे हरा बना देता था जो पानी में भिगोये जाने पर कपड़े पर फ़ैल कर नये, हल्के और ठोस रंग बना देता था।

15वीं सदी के दौरान व्यापार के अन्य मार्गों द्वारा चारखानेदार कपड़ा पश्चिम अफ़्रीका पहुँचा जहाँ मद्रास को मुख्य रूप से सिर्फ़ पगड़ियाँ बनाने के काम में लाया जाता था और बाद में नाइजर डेल्टा की कालाबारी जाति में उसे प्रतीक चिन्ह के रूप में उपयोग में लाया जाने लगा। डिज़ाइन विद्वान सैंड्रा ली कहती हैं कि मद्रास चैक बहुत पहले, 1400 में ही पुर्तगाली समुद्री व्यापार मार्गों से वहाँ आ चुका था। 18वीं सदी से 19वीं सदी तक पहुँचते- पहुँचते यह कपड़ा एटलांटिक महासागर के पार दासों के व्यापार में एक मूल्यवान वस्तु बन चुका था।

मैड्रास हैंडकर्चीफ़

मैड्रास हैंडकर्चीफ़ को लंदन में निर्यात किया जाता था जहाँ उसकी नीलामी उन व्यापारियों के बीच की जाती थी जो इसे पश्चिम अफ़्रीका में दासों के आदान-प्रदान में एक वस्तु के रूप इस्तेमाल करते थे। फ़िर आरएमएचके कैरिबियन और दक्षिण अमेरिका पहुँचा जहाँ इसका इस्तेमाल अश्वेत महिलाओं द्वारा सिर पर बाँधने के स्कार्फ़ के रूप में किया जाता था।

नाइजीरिया की इजो प्रजाति का एक छोटा समूह, कालाबारी, 400 सालों से आरएमएचके का व्यापार कर रहा है। एक रुचिपूर्ण बात यह है कि वह समाज रोज़मर्रा और वैधिक जीवन में भारतीय वस्त्रों से जुड़ा रहा है।

मद्रास के कपड़े की कालाबारी जीवन में एक विशेष

भूमिका रही है और यह एक व्यक्ति के गर्भ से कब्र तक के सफ़र का प्रतीक है। कालाबारी इस कपड़े को इंजिरी कहते हैं। यह जीवन की रीति-रस्मों का हिस्सा है। इस हद तक कि 18वीं और 19वीं सदी में पश्चिम अफ़्रीका, गोल्ड कोस्ट और घाना की दुल्हनें अपने गाउन मद्रास चेक के कपड़े से ही बनवाना पसंद करती थीं।

कालाबारियों की अन्त्येष्टि क्रिया में भी मद्रास चेक के कपड़े की एक अहम भूमिका है, और एडि डेइस नामक क्रिया में भी, जब कमरे की दीवारों और छत को आलीशान तरीके से सजाया जाता है । इन

कपड़ों को संजो कर रखा जाता है और जब किसी को इनकी ज़रूरत पड़ती है तो उसे उधार भी दिया जाता है। किसी परिवार की हैसियत इन कपड़ों की संख्या, किस्म और उम्र से निर्धारित की जाती है।

यदि समकालीन प्रयोग की तरफ़ आएं तो संपन्न दुनिया के असामान्य वस्तुओं से प्यार और उत्कृष्ट मार्केटिंग के चलते मद्रास चेक के कपड़े दक्षिण अमेरिका में, जहाँ दासों के अस्तित्व को पूरी तरह से नकार दिया गया था, संभ्रांत होने का द्योतक हो गए । जापान, स्विट्ज़रलैंड, इंग्लैंड और फ़्रांस में मशीन से नकली चारखानेदार कपड़े भी बनाए जाने लगे।

मद्रास चेक के कपड़ों की लोकप्रियता 1960 के दशक में परवान चढ़ी और नाइजीरिया के बाज़ार में, जो काफ़ी मज़बूत था, रियल मैड्रास हैंडकर्चीफ़ के नाम से हथकरघा के चेक आयात किये जाते रहे। 1970 के दशक में राजनीतिक अस्थिरता के चलते अनेक उत्पादों पर प्रतिबंध लगा दिया गया और आरएमकेएच के आयात का बाज़ार ध्वस्त हो गया।

मद्रास को मसालों या सोने के लिए नहीं बल्कि कपड़े के लिए स्थापित किया गया था।

ब्लीडिंग मैड्रास को लीला समूह के संस्थापक कैप्टन सीपी नायर ने लोकप्रिय बनाया। उन्होंने अमेरिका के एक निर्यातक को चेन्नई में दक्षिण अफ़्रीका के लिए बुना गया एक कपड़ा दिखाया जो प्राकृतिक रंगों से बनाया गया था और हर धुलाई के बाद रंग छोड़ता था तथा अपना प्रकार बदल लेता था। निर्यातक ने 10,000 गज का ऑर्डर दे दिया और उस कपड़े से बने स्टाइलिश परिधान न्यू यॉर्क स्थित ब्रुक्स ब्रदर्स में बिके।

जब कपड़े ने वाकई रंग छोड़ना शुरू किया तो उस निर्यातक ने कैप्टन नायर को मुकदमा ठोकने की धमकी दे दी लेकिन कैप्टन नायर ने कहा कि उन्होंने तो उसे पहले ही आगाह कर दिया था। जब *सेवेंटीन* पत्रिका की संपादिका ने ब्लीडिंग मैड्रास पर एक लेख छापा तो पहला ऑर्डर दस लाख गज का आया। उस कपड़े को पूरे चेन्नई और बाद में आंध्र प्रदेश में बुना गया।

हथकरघा के मद्रास के बाज़ार को पुनर्जीवित करने का मतलब है इस कपड़े के सांस्कृतिक इतिहास को लौटाना और उसे उस स्थान में फ़िर से शुरू करना जहाँ उसका जन्म हुआ था, साड़ी या लुंगी जैसे दूसरे रूप में नहीं बल्कि एक फ़ैशन के कपड़े के रूप में जिससे विश्व के विलासितावाले (लक्ज़री) बाज़ार में उसे उसका आला दर्जे का स्थान नसीब हो।

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

मानव संसाधन विकास मंत्रालय एवं पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय के साथ रोटरी की साझेदारी

शेखर मेहता

स्कूल के शौचालयों में सफाई और स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए रोटरी भारत साक्षरता मिशन ने भारत सरकार के सितंबर में आयोजित हुए दो प्रतिष्ठित कार्यक्रमों - स्वच्छता 1.0- स्वच्छ भारत हैकथॉन और मेरा स्वच्छ विद्यालय - के साथ साझेदारी की है।

हालाँकि हमारे हैप्पी स्कूल कार्यक्रम का एक मुख्य अंग लड़के और लड़कियों के लिए अलग-अलग शौचालयों का निर्माण करना है, हम में से कितने लोग यह सुनिश्चित करते है कि ये शौचालय साफ रहे? गंदे और अस्वास्थ्यकर शौचालय अनेक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं पैदा करते है, जिनके कारण आखिरकार बच्चे स्कूल छोड़ देते है। इसलिए बाल विकास और हैप्पी स्कूल कार्यक्रम के पीछे का हमारा सर्वोत्कृष्ट विचार हार जाता है। सरकारी कार्यक्रमों के साथ जुड़ाव आगे T-E-A-C-H कार्यक्रम को मजबूती प्रदान करेगा।

स्वच्छथॉन, जिसका RILM ज्ञान साझेदार था, के पीछे उद्देश्य उन अहम् मुद्दों का समाधान ढूंढना है जिनका सामना स्कूलों एवं समुदायों द्वारा किया जाता है। इस अभियान, जिसमें हमारी साझेदारी थी, का मुख्य लक्ष्य विभिन्न कॉलेजों/स्कूलों/संगठनों/आईआईटी, स्टार्टअप एवं अन्य संस्थानों तक पहुँचकर उनसे स्कूलों के शौचालयों के संचालन एवं प्रबंधन को बेहतर बनाने के रोमांचक, अभिनव, अनोखे और साध्य उपायों को जुटाना; पहाड़ी, सूखे, बाढ़-ग्रस्त और सुदूरवर्ती इलाकों के लिए चिरस्थायी, पर्यावरण अनुकूल और वहन करने योग्य शौचालय तकनीक को खोजना; शौचालय के उपयोग का निरीक्षण करने के लिए तकनीकी समाधानों को ढूँढना और शौचालय के उपयोग, स्वच्छता, मासिक धर्म स्वच्छता और मल पदार्थ के शीघ्र अपघटन के लिए व्यवहारिक परिवर्तन को लाना था।

स्कूल के छात्र स्वच्छथॉन में भाग लेते हुए।

10 दिवसीय अभियान के दौरान, 3,054 आवेदन प्राप्त हुए, जिनमें से 428 पंजीकृत हुए और 8 सितंबर अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस के दिन विजेताओं की घोषणा एवं पुरस्कार वितरित किये गए। RILM जूरी का हिस्सा था।

स्कूलों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाने एवं परस्पर गतिविधियों द्वारा व्यावहारिक परिवर्तन लाने के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय के साथ RILM जुड़ा है। रोटेरियनों, इनर व्हील के सदस्यों, रोटरेक्टरों, इंटरैक्टरों और RILM के साझेदार संगठनों ने अभियान में सक्रिय रूप से दिलचस्पी ली। वे भारत के विभिन्न स्कूलों में गए और 1-15 सितंबर के दौरान उनसे निम्नलिखित गतिविधियों में से एक या अधिक में भाग लेने के लिए कहा। निबंध

प्रतियोगिता, चित्रकला/पोस्टर अभियान, नारा बनाना इत्यादि आयोजित किये गए।

अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस का उत्सव

अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवास पर RILM ने साक्षरता के अभिप्राय से पूरे देश को एकीकृत किया, जिसमें रोटेरियनों और इनर व्हील सदस्यों ने T-E-A-C-H के अंतर्गत विभिन्न गतिविधियों का बीड़ा उठाया जिसका उद्देश्य पूर्ण साक्षरता और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा है।

गतिविधियों में शामिल थी - मेरा स्वच्छ विद्यालय अभियान के अंतर्गत कोई भी गतिविधि, उत्कृष्ट शिक्षकों को राष्ट्र निर्माता पुरस्कार देना या कोई अन्य T-E-A-C-H की गतिविधि। रोटेरियनों और इनर व्हील सदस्यों ने उत्कृष्ट शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया एवं उनका अभिनन्दन किया, ई-शिक्षण केन्द्र स्थापित किये, वयस्क लोगों को पढ़ाया एवं वयस्क साक्षरता केन्द्रों की शुरुआत की, या स्कूलों को हैप्पी स्कूलों में तब्दील किया।

RILM ने राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के साथ दिल्ली स्थित एनआईओएस के दफ्तर में एक समझौता हस्ताक्षरित किया है ताकि 15 वर्ष से ऊपर के ऐसे अनपढ़ लोगों का बुनियादी साक्षरता कार्यक्रम (बीएलपी) मूल्यांकन किया जा सके जिन्होंने RILM के वयस्क साक्षरता कार्यक्रम को अपनाया है। एक साल में दो बार परीक्षा आयोजित होंगी, मार्च और अगस्त में।

वयस्क साक्षरता कार्यक्रम को कार्यांवित करने वाले रोटरी और इनर व्हील क्लबों को निर्धारित परीक्षा से 2 महीने पहले वयस्क सीखने वालों का रु. 120 प्रति व्यक्ति की दर पर पंजीयन करना होगा। वर्तमान में RILM एनआईओएस के साथ मिलकर सीखने वालों के लिए एक पंजीकरण प्रक्रिया तैयार कर रहा है।

मार्च 2018 से, रोटरी और इनर व्हील क्लब स्वाभिमान केन्द्रों पर बीएलपी मूल्यांकन संचालित कर पाएंगे और RILM एनआईओएस के साथ सीधे समायोजन कर उनका मूल्यांकन करेगा। यह साझेदारी ऐसे वक्त हुई है जब देश भर में रोटेरियनों और इनर व्हील सदस्यों ने वयस्क साक्षरता कार्यक्रम को अपूर्व जोश के साथ अपने हाथों में लिया है। यह साझेदारी हमें 28 करोड़ निरक्षर वयस्कों तक पहुँचने, उन्हें साक्षर बनाने और भारत को पूर्ण साक्षरता हासिल करने के एक कदम करीब ले जाती है।

शिक्षक प्रशिक्षण

महाराष्ट्र में सरकारी स्कूल के शिक्षकों को शिक्षक प्रशिक्षण देने के लिए इंडियन करियर एजुकेशन एंड डेवलपमेंट काउंसिल (आईसीईडीसी) और ग्लोबल एजुकेशन सलूशन्स (जीईएस) के साथ एक समझौता हस्ताक्षरित किया गया है। प्रशिक्षण मापदंडों में शामिल है:

- आत्म अनुशासन को विकसित करने, तनाव को संभालने, अभिप्रेरण को बरकरार रखने, उद्देश्य की भावना को जगाने, उनके कार्यों की जवाबदेही लेने में विद्यार्थियों की मदद करके और उनके साथियों को सही रास्ते पर चलने में विद्यार्थियों की मदद करके कक्षा के व्यवहार को संभालने की जीवन की सीख तकनीके।
- विभेदित शिक्षण तकनीकों का प्रयोग, ताकि एक कक्षा के अंदर सभी बच्चे उनकी विभिन्न काबिलियतों के बावजूद भी प्रभावपूर्ण ढंग से लाभ ले सके और सीख सके, और सफल होने के समान अवसर प्राप्त कर सके।
- सरल पाठ योजना पद्धति द्वारा आधुनिक जीवन एवं कार्य कौशल प्रदान करना, संपूर्ण पाठ्यक्रम में सही रुख एवं मूल्यों को विकसित करना ताकि पढ़ाई को प्रासंगिक, आकर्षक और मजेदार बनाया जा सके।

इनर व्हील सदस्य द्वारा प्रौढ़ शिक्षार्थियों को प्रशिक्षित किया जा रहा है।

स्वच्छथॉन के पीछे उद्देश्य उन अहम मुद्दों का समाधान ढूंढना हैं जिनका सामना स्कूलों एवं समुदायों द्वारा किया जा रहा है।

रोई मंडल 3131 में 13-18 सितंबर तक, 250 से अधिक शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया। प्रशिक्षण में शामिल होने वाले क्लब थे रोटरी क्लब पुणे स्पोर्ट्स क्लब, रोटरी क्लब पुणे गाँधी भवन और रोटरी क्लब पुणे वेस्ट एंड।

प्रतिदिन 40 शिक्षकों के एक दल को प्रशिक्षित किया गया। प्रदान किये गए प्रशिक्षण से शिक्षक अत्यधिक प्रसन्न थे। पहले दो दिनों के दौरान, 88 प्रधानाध्यापक प्रशिक्षण में सम्मिलित हुए। शिक्षकों को इसमें शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए वे उनके स्कूलों में वापस गए।

एक शिक्षक ने कहा, ''प्रशिक्षण उत्कृष्ट था और इसने हमें बहुत प्रेरित किया। हमारे आभार को व्यक्त करना मुश्किल है।''

प्रशिक्षण के बाद, शिक्षकों को नियमित परामर्श दिया जाएगा जिसके बाद शिक्षकों का प्रमाणन होगा।

लेखक पूर्व रोई निदेशक है।

एल गुनाशेकरण द्वारा रुपांकन

सब कुछ एक मुस्कान के लिए

टीम रोटरी न्यूज़

चाहे वह आपकी मनचाही नौकरी का पहला दिन हो, या निदेशक मंडल के समक्ष आपका पहला प्रस्तुतीकरण या फिर वैश्विक सीईओ द्वारा आपका पहला पुरस्कार प्राप्ति समारोह हो - आपकी मुस्कुराहट सबसे महत्वपूर्ण विशेषता होती है जिसपर लोग ध्यान देते है। जो लोग ब्रेसेस पहनने से डरते है और जिन्हें कम से कम 12 महीने या उससे अधिक समय के लिए इसे रखने की जरुरत पड़ती हो, उनके लिए अब क्लियर एलाईनर के रूप में एक अन्य विकल्प मौजूद है, जो लचीले थर्मोप्लास्टिक पदार्थ से बना है और जैव अनुकूल है।

क्लियर एलाईनर की प्रभावकारिता को बताते हुए, डॉ. आशीष गुप्ता, पंचकुला, पंजाब से एक दन्त संशोधन चिकित्सक कहते है, ''दांतों की पंक्ति को सीधा करना ना केवल आपको एक सुन्दर मुस्कान देगा, बल्कि आपके होंठ और गालों के आसपास पड़ने वाली झुर्रियों को कम भी करेगा, जिससे आप युवा प्रतीत होंगे।'' वह कहते है, ''केवल एक साधारण से उपचार से यह संभव है - क्लियर एलाईनर, जो लगभग अदृश्य, आरामदायक और ब्रेसेस की तुलना में हटाने योग्य विकल्प है, आपको एक आकर्षक मुस्कान देने में मदद करता है।'' आज उनकी दन्त संशोधन की डाक्टरी में कम से कम 50 प्रतिशत लोग क्लियर एलाईनर की मांग कर रहे है।

इन्हें अमेरीका में कई कंपनियों द्वारा बनाया जा रहा है और ब्रांड के आधार पर, कीमत रु. 1.5 लाख से रु. 4.5 लाख के बीच होती है। वह कहते है कि विश्व भर में अनुमानित 4 मिलियन से अधिक लोगों द्वारा इसका उपयोग किया जा चुका है। अब यह भारत में भी बनाए जा रहे है, परन्तु उनकी डाक्टरी में, वह केवल एफडीए द्वारा स्वीकृत अंतर्राष्ट्रीय ब्रांडों का ही उपयोग करते है।

डॉ. गुप्ता कहते है कि आज, उन्नत तकनीक की मदद से, क्लियर एलाईनर अधिक सूक्ष्मता के साथ दांत सीधे करने संबंधित अनेक समस्याओं को सुलझाने में सक्षम है। संकर्षण और गैर संकर्षण दोनों पद्धतियों का उपयोग कर इन्हें झुके हुए और आगे की ओर निकले हुए दांतों, एक दूसरे पर चढ़े हुए दांत, गंभीर रूप से टेढ़े मेढ़े दांतों, ऊपरी दांतों का निचले दांतों से आगे होना, या निचले दांतों का ऊपरी दांतों से आगे होने को ठीक करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

हालाँकि, दन्त चिकित्सकों और दन्त संशोधनकर्ताओं का एक बड़ा हिस्सा इस मत से सहमत नहीं है, और मानते है कि अच्छे पुराने दांतों के ब्रेसेस की तुलना में क्लियर एलाईनर उतना प्रभावशाली नहीं है और परंपरागत ब्रेसेस की तरह अच्छा परिणाम नहीं देते है।

डॉ. गुप्ता कहते है कि बहुत अधिक लोग यह नहीं जानते है कि ''आगे की ओर निकले हुए दांत आपको उम्रदराज दिखाते है और इन्हें ठीक करके, आप आपके गालों और निचले होठों के आसपास होने वाली झुर्रियों को भी रोक सकते है।'' उन्हें विश्वास है कि क्लियर एलाईनर ऐसे जटिल आगे की ओर निकले हुए दांतों के मामलों को भी सुलझा सकता है।

विश्व भर में प्रसिद्द यह संशोधक विकल्प अब भारत में भी उपलब्ध है। अदृश्य, हटाए जा सकने योग्य, और उपयोग करने, साफ़ करने और देखरेख में आसान इन एलाईनरों को तदनुकूल डिज़ाइन किया जाता है और प्रत्येक मरीज के लिए व्यक्तिगत तौर पर बनाया जाता है। समय के साथ, ट्रे धीरे-धीरे आपके दांतों को दंत संशोधक द्वारा निर्धारित दिशा में लाती है।

वह आगे कहते है, ''कोई परहेज या दांत साफ़ करने की दिनचर्या में कोई परिवर्तन नहीं होता है। डॉक्टर गुप्ता कहते है कि इस उपचार की सबसे अच्छी बात यह है कि मरीज को दो या तीन महीनों तक हमारे पास आने की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि हम उन्हें निर्मित किये हुए एलाईनर देते है जिन्हें वे स्वयं दो या तीन हफ़्तों में निर्देशानुसार बदल सकते है।''

आदर्श रूप से, ऐसे एलाईनरों को एक दिन में कम से कम 20-22 घंटों के लिए पहना चाहिए, और मरीज को भोजन करते वक्त इन्हें निकालना होता है।■

उड़ान इंटरट्रैक्टर्स को एक-साथ लाता है

टीम रोटरी न्यूज़

मंडल 3141 के इंटरट्रैक्टर्स ने विले पार्ले के भाईदास ऑडिटोरियम में अपने 13 वें मंडल सम्मेलन 'उड़ान' का उद्घाटन करते हुए आनंदपूर्ण समय व्यतीत किया। रोटरी क्लब मुंबई जुहू द्वारा आयोजित कार्यक्रम की सह-मेजबानी राजहंस विद्यालय के इंटरैक्ट क्लब और मानेकजी कूपर स्कूल द्वारा की गई थी। इस कार्यक्रम में 29 इंटरैक्ट क्लब के विद्यालय के 800 से अधिक छात्रों ने भाग लिया।

जल संरक्षण और अंग दान - प्रतियोगिता और सांस्कृतिक कार्यक्रम का मुख्य विषय था। लगभग 210 प्रतिभागियों के साथ, राजहंस के इंटरैक्ट क्लब को अधिकतम भागीदारी के लिए पुरस्कार प्रदान किया गया, जबकि रोटरी क्लब बॉम्बे वेस्ट को सबसे अधिक संख्या में इंटरएक्टर्स - 4 इंटरैक्ट क्लबों के 71 बच्चों को सम्मानित किया गया।

सम्मेलन का उद्घाटन डीजी प्रफुल्ल शर्मा ने किया। वाइस डीजी लता सुब्रायडू ने पुरस्कार वितरण किया।

वाइस डीजी लता सुब्रायडु, विजेताओं के साथ।

माचिस है इनका शौक

राजीव खत्री

हम में से अधिकांश डाक टिकट संग्रहकर्ता की रूचि रखने वाले ''फिलेटेलिस्ट'', सिक्के और मुद्रा एकत्रित करने वाला न्यूमिसमैरिस्ट और पोस्ट कार्ड संग्रहक डेल्टियोलॉजिस्ट से मिल चुके हैं, ठीक, मैं फिल्यूमेनिस्ट हूँ। फिल्यूमैनी का अर्थ माचिस के लेबल इकट्ठा करने का शौक। इसकी लोकप्रियता 'टिकट' और 'सिक्के संग्रहण' से आधी भी नहीं है। मेरे पास विभिन्न थीमों पर आधारित 8000 से अधिक माचिस लेबल का संग्रह है।

लाइटर के आगमन से पहले माचिस का बॉक्स हरेक गृहस्थी का महत्वपूर्ण हिस्सा थी। हालांकि, आज भी माचिस ग्रामीण रसोइयों, पूजा घरों और सिगरेट या बीड़ी जलाने के लिए एक आदमी की जेब की आज भी शान बनी हुई है।

हस्तनिर्मित माचिस बॉक्सों का उत्पादन वर्ष 1923 में तमिलनाडु के शिवाकाशी में शुरू हुआ, उसके बाद 1924 में सत्तूर में, और बाद में 1932 में कोविल पट्टी में आरंभ हुआ। भारत में सर्वप्रथम माचिस बॉक्स 1912 में जापानी व्यापारियों द्वारा कलकता में बनाये गये। लेकिन आज शिवाकाशी सम्पूर्ण भारत में सबसे बड़ा माचिस उत्पादक है।

माचिस बॉक्स लोकप्रिय कला की अभिव्यक्ति है और या वे ऐतिहासिक घटनाओं का स्मरण कराते हैं। 'पंजा' और 'जनता' लेबल कांग्रेस और जनता पार्टी की भावना से जुड़े हैं। ताजमहल लेबल आगरा के इस ऐतिहासिक स्मारक को दिमाग में लेकर आता है।

पक्षी और जानवर भी इन माचिस की शोभा बढ़ाते हैं। राजशाही तस्वीरें, स्वतंत्रता सेनानियों के चित्र और सुप्रसिद्ध चित्रकार राजा रवि वर्मा के चित्रों की प्रतिकृतियाँ भी इन लेबल पर छपी हुई हैं।

प्रथम विश्वयुद्ध के अंतिम दौर में जापान, स्वीडन और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में छापे गये लेबल भारत में माचिस के बॉक्सों पर चिपकाये गये।

मैंने एक स्कूली विद्यार्थी के रूप में माचिसों को इकट्ठा करना शुरू किया था, और आज भी 30 वर्ष से यह जारी है। मेरे इस शौक ने मेरे परिवारजनों को कई बार परेशान और नाराज किया है, क्योंकि मैं कचरे के मैदानों या घरों से निकले कूड़े-करकट के ढेरों में इस उम्मीद के साथ खोदता-ढूंढ़ता रहता कि कोई माचिस का लेबल मिल जाए जो मेरे शानदार संग्रह में जुड़ जाए।

बहुत बाद में, मेरे घरवालों को यह अहसास हुआ कि दुनिया में माचिस का संग्रह करने वाले फिल्यूमेनिस्ट बहुत सारे है, जो इस शौक के पीछे पागल हैं, और इसलिए वे सब लोग जो कचरे के ढ़ेर में माचिस ढूंढ़ने की मेरी आदत से घृणा करते थे वे, आज जब भी उन्हें कोई रूचिकर लेबल मिलता है, उसे मुझे देकर मेरी सहायता करते हैं।

इस रूचि के प्रति बच्चों और बड़ों को आकृष्ट करने के लिए मैं शीघ्र ही एक प्रदर्शनी लगाने जा रहा हूँ। बेहतर जागरूकता के चलते वह दिन दूर नहीं है, जब और अधिक 'फिल्यूमेनिस्ट' सामने आयेंगे। आइये इस जनजाति को पनपने दें।

लेखक रोटरी क्लब इलाहाबाद दक्षिण (मंडल 3120), के पूर्व अध्यक्ष हैं।

कहानी चाऊ मुखौटे की

जी. सिंह

अनिल सूत्रधार (92 वर्ष) इस बात को बहुत ही गर्व से याद करते हैं कि उनकी कलाकारी उन्हें उन स्थानों तक ले गई, जिनके बारे में उन्होंने ख्वाब में भी नहीं सोचा था। जीवन के 90 से भी अधिक बसंत देख चुके वयोवृद्ध, जिनके काँपते पैरों को छड़ी के सहारे की जरूरत है, ने अपने घर के बाहर एक साइन बोर्ड लगा रखा है, जिस पर उन देशों के नाम लिखे हैं जिनकी वे यात्रा कर चुके हैं और वर्ष भी, जिनमें वे वहाँ गए।

कोलकाता से 300 किलोमीटर दूर पुरूलिया के चारिड़ा ग्राम में रहने वाले सूत्रधार चाऊ मुखौटा निर्माता और नृत्य कलाकार हैं। चाऊ मुखौटा बनाने वाले संभवतया वे सबसे पुराने पारंगत व अनुभवी कलाकार हैं। चाऊ एक कलाबाजी वाली मार्शल आर्ट पर आधारित नृत्य कला है, जिसमें भाग लेने वाले कलाकार मुखौटा और चमकदार वेशभूषा धारण करते हैं। वृद्धावस्था के चलते सूत्रधार ने कई वर्ष पहले नृत्य करना छोड़ दिया था, लेकिन अपने गाँव में चाऊ-मुखौटे बनाना जारी रखा है।

सही मायने में चारिड़ा को 'कारीगरों का गाँव' कहा जा सकता है, क्योंकि वहाँ करीब 250-300 परिवार मुखौटे बनाकर अपनी आजीविका कमाते हैं।

अनिल सूत्रधार एक मुखौटे पर काम करते हुए।

चारिड़ा ग्राम दुनिया में एकमात्र ऐसा विशिष्ट गाँव है, जहाँ चाऊ-मुखौटे का निर्माण होता है। मुखौटे बनाने के इस कार्य की शुरूआत अब से 150 वर्ष पहले बाघमुण्डी के राजा मदन मोहन सिंह देव के शासन के दौरान हुई।

''पहले कलाकार राजा के महलों में इसका प्रदर्शन करते थे, लेकिन बाद में धीरे-धीरे यह कला आसपास के गाँवों में फैल गई।'' उन्होंने आगे बताया कि इस सदी के प्रारंभिक दशकों तक इस नृत्य-कला को बाघमुंडी राजाओं का संरक्षण प्राप्त था, लेकिन अनुत्पादक भूमि और कम मानसून के कारण वे भी इसे मुश्किल से आवश्यक सहयोग दे पाते थे। इस कारण कलाकारों को अपने जीवन-यापन के लिए मजबूरन दूसरे इलाकों में जाना पड़ा।

सही मायने में चारिड़ा को ''कारीगरों का गाँव'' कहा जा सकता है, क्योंकि वहाँ करीब 250-300 परिवार मुखौटे बनाकर अपनी आजीविका कमाते हैं। इन मुखौटों को बेचने वाली अनेक दुकानों ने गाँव को घेर रखा है। इनमें से कुछ कारीगर अपने घरों से भी मुखौटें बेचते हैं। दिलचस्प बात ये है कि इन सब कारीगरों का उपनाम ''सूत्रधार'' हैं।

प्रक्रिया

कारीगरों में से एक राजू, चाऊ मुखौटे को अंतिम रूप देने में व्यस्त है। मुखौटों का बड़ा आदेश होने के कारण उसके

विदेशी बाजार में इन मुखौटों की भारी मांग है, लेकिन निर्यात के लिए उचित चैनल की कमी हमारी वहाँ तक पहुँच में सबसे बड़ी बाधा है।

पास बहुत कम समय है लेकिन वह पूरी प्रक्रिया को विस्तार से समझाने के लिए सहमति देते हुए बताता है ''सबसे पहले मुखौटे का एक मॉडल (साँचा) मिट्टी से बनाया जाता है और उसे सीधा धूप में सुखने के लिए रखा जाता है। उसे बाद इसे राख के पाउडर से ढ़का जाता है इसके बाद लगातार शहतूत के पौधे के गोंद को मुलायम कागज की लुगदी में मिलाकर उस साँचे के उपर परत दर परत लेप किया जाता है। इस तरह प्रारंभिक स्तर पर रफ फाउण्डेशन तैयार करके इसके बाद बहुत ही कुशलतापूर्वक मिट्टी की पतली परत से मुख्य मुखौटे को तराशा जाता है। पूरे साँचे को एक बार फिर धूप में रखा जाता है। इसके बाद उसे अंतिम सफाई देने के लिए मिट्टी से लथपथ मलमल के कपड़े में लपेटा जाता है। उसके बाद लकड़ी से बनी एक लेपनी से उस पर पॉलिस की जाती है, उसके बाद जिंक ऑक्साईड का लेप करके मुखौटे पर रंग किया जाता है और उसे पात्र-चरित्र के अनुसार सजाया जाता है।'' उसने आगे बताया ''सामान्य रूप से यह मुखौटे पौराणिक पात्रों से प्रेरित होते हैं लेकिन बदलते समय के चलते इनमें कुछ बदलाव भी हो जाते हैं।''

उसका कहना है कि वैसे तो वे मुखौटे बनाने का काम वर्ष पर्यन्त चलता रहता है, लेकिन इसका मुख्य सीजन मार्च से मई और नवम्बर से जनवरी के बीच 6 महीने उस समय ज्यादा रहता है जब विभिन्न गांवों में नृत्यों का आयोजन होता है।

कारीगरों को इस बात का मलाल है कि मुखौटा बनाना राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय स्तर पर अच्छा व्यापार हो सकता है, लेकिन बुनियादी सुविधाओं की कमी इसमें सबसे बड़ी बाधा है। तीन दशक से इस कला में कार्यरत फाल्गुनी सूत्रधार ने बताया ''हमारे गाँव में पर्यटकों को आकर्षित जोरदार संभावना है, लेकिन

ऊपर : फाल्गुनी सूत्रधार, एक कारीगर चाउ मुखौटे को अंतिम रूप देते हुए।
***बाएँ** : गाँव की एक दुकान पर चाउ मुखौटों का प्रदर्शन।*

ठहरने की सुविधा नहीं होना सबसे बड़ी कमी है। आगन्तुक शौचालयों और खानपान की सुविधाओं के लिए परेशान होते हैं। सरकार हस्तशिल्प वस्तुओं को बेचने के लिए ''विश्वा बंगला'' स्टॉलों की योजना तो लेकर आई है, लेकिन इसमें खरीदने की दर बहुत कम है और सामान्य तौर पर सारे कारीगर इसमें शामिल नहीं होते।''

एक और 25 वर्षीय कारीगर राजू मोदक का कहना था कि अगर इसके उत्थान की तरफ ध्यान दे तो यह व्यापार बहुत लाभदायक हो सकता है। उन्होंने कहा ''बैंक हमें ऋण देने में मदद नहीं करते क्योंकि अधिकांश कारीगर बकायादार है। यह कला अद्वितीय है और इसे दुनिया के दूसरे हिस्सों में ले जाया जा सकता है। विदेशी बाजार में इन मुखौटों की भारी मांग है, लेकिन निर्यात के लिए उचित चैनल की कमी हमारी वहाँ तक पहुँच में सबसे बड़ी बाधा है। हमारे गाँव में राज्य के पर्यटन में योगदान देने के लिए अपार अवसर है क्योंकि हमारा गाँव प्रमुख पर्यटन स्थल अयोध्या पहाड़ियों की तलहटी में है।''

नाम न छापने का अनुरोध करते हुए एक सरकारी अधिकारी ने बताया ''राज्य सरकार इनके उत्पादों को प्रदर्शित एवं प्रचारित करने के लिए विभिन्न मेलों और अन्य प्लेटफार्म का आयोजन कर सहायता करती है। हम विभिन्न कलाकारों-कारीगरों को एक छत के नीचे लाने के लिए चारिड़ा में एक क्लस्टर बनाने की योजना बना रहे हैं। पिछले कुछ सालों में निश्चित रूप से इनके मार्केट में बढ़ोतरी हुई है और उनके लाभ के लिए बहुत जल्द ही कुछ और कदम उठाये जायेंगे।

जैसे ही वहाँ भारी वर्षा का संकेत देते हुए घने बादल मंडराने लगे दिमाग में यह विचार कौंधा कि यदि संबन्धित अधिकारी गंभीर प्रयास करें तो इस गाँव में अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज में चमकने की विपुल संभावनायें है।

एन कृष्णामूर्ति द्वारा रूपरेखा

वाबी साबी

शीला नाम्बियार

वाबी साबी एक जापानी विचारधारा है जो कि एक साधारण दर्शन को व्यक्त करती है - कुछ भी पूर्ण नहीं है, कुछ भी स्थायी नहीं एवं कुछ भी समाप्त नहीं होता है, लेकिन .... आप इससे समझौता कर लीजिए।

यह बात स्वास्थ्य, वजन, तन्दुरूस्ती एवं कुशलता की दृष्टि से काफी प्रासंगिक है। इसका आशय यह लगता है कि आप अपने शरीर में होने वाले विकारों, मोटापे, स्वास्थ्य में गिरावट एवं रोगों को बढ़ती उम्र का तकाजा मानकर अपने मन को शांति दे दें। चूंकि पूर्ण कुछ भी नहीं है, तो पूर्णता के लिए क्यों प्रयास किए जाएँ? और जब स्थायी कुछ भी नहीं तो तन्दुरूस्त रहने एवं स्वास्थ्य में सुधार के लिए निरन्तर प्रयास करते रहने में भला क्या तुक है?

किंतु मैं विचारधारा को थोड़े अलग अर्थों में लेती हूँ। मेरे अनुसार यह विचारधारा सही कारणों के लिए एवं सही तरीकों का प्रयोग करते हुए स्वयं का ख्याल रखने के महत्व को रेखांकित करती है।

कुछ भी पूर्ण नहीं है

जीवन में परिस्थितियाँ आदर्श नहीं मिलती। आपको उन्हीं परिस्थितियों में अपने लिए सर्वोत्तम संभावनाएँ तलाशनी होती है।

कभी-कभी हो सकता है कि आपके पास व्यायाम करने के लिए समय न हो। आप यात्रा कर रहे हो, या आपके बच्चे बीमार हों। आप तनावग्रस्त हो एवं एक निश्चित समय सीमा में काम को पूरा करने का दबाव आप पर हो।

घर पर ही 20 मिनट का व्यायाम भी कम महत्वपूर्ण नहीं बजाय इसके कि आप समय की कमी का रोना रोते रहें और कोई व्यायाम न करें। ट्रेड मील पर तेजी से दौड़ना या यात्रा के दौरान अपने होटल के स्वीमिंगपूल में तैरना अपनी कभी नहीं खत्म होने वाली यात्रा एवं उससे आपके स्वास्थ्य को होने वाली बाधाओं पर खीझते रहने की तुलना में कहीं बेहतर हैं।

आपको 'लंच' एवं 'डिनर' में शामिल होने के लिए बाध्य किया जा सकता है। इस तरह के लंच एवं डिनर में शामिल होने से आपकी आहार चर्या प्रभावित हो सकती हैं। किन्तु मेनू की सभी चीजों को थोड़ा-थोड़ा चखकर अपराधी भाव से जीने की तुलना में यह रणनीति बनाएँ कि समझदारी पूर्वक कैसे खाया जाए। अपने भोजन के विकल्पों पर खूब विचार करें एवं प्रत्येक भोजन के समय क्या खाया जाए इस सम्बन्ध में अपने विवेक का परिचय दें। इन चीजों को हम अच्छे स्वास्थ्य के मार्ग पर चलने के लिए परिस्थितियों से तालमेल बिठाने की प्रणाली कह सकते हैं।

मीडिया द्वारा कुछ इस तरह का माहौल पैदा किया गया है हमें ऐसा लगता है कि शारीरिक रूप से पूरी तरह से परिपूर्ण होना जरूरी है। किन्तु किसी मैगज़ीन के कवर पृष्ठ के मॉडल की तरह हर कोई नहीं बन सकता। यहाँ तक कि वह मॉडल भी किसी दूसरे की तरह दिखने का प्रयास करना व्यर्थ है। समाज में प्रचालित नियमों का पालन भी कर लें तो भी जरूरी नहीं कि हम स्वस्थ शरीर को प्राप्त कर लेंगे। बल्कि हमेशा ये कि आपको अंत में चिंता एवं हताशा ही हाथ लगेगी।

बार-बार अपने वजन को देखते रहने, कैलोरीज़ को गिनते रहने, मशीन की तरह से व्यायाम करते, वजन कम करने के बारे में लगातार बात करने और वजन घटा नहीं पाने के बारे में हर समय चिंता करने की तुलना में बेहतर है स्वस्थ जीवन जीने के लिए अच्छी आदतें विकसित करने के लिए समय खर्च करना।

कुछ भी समाप्त नहीं

मनुष्य शरीर हमेशा कार्यशील रहता है। जब हम व्यायाम शुरू करते हैं तो प्रायः हमारे यह ही सामान्य लक्ष्य होते हैं जैसे 10 किलो वजन कम करना, किसी पोशाक में फिट हो जाना, मैराथन दौड़ना या हिमालय की चढ़ाई कर पाना।

ये लक्ष्य प्राप्त हो जाने पर हम आगे क्या करेंगे? बेहतर होगा कि हम फिटनेस को अपने दैनिक जीवन में शामिल करें। स्वयं को बेहतर बनाने के लिए हमें अपनी दिनचर्या को बदलना होगा। व्यायाम करने के तरीके अपनाएँ।

अधिकांशतः हमें जल्दी रहती है किसी प्रक्रिया को पूर्ण रूप से करने एवं उसे समाप्त करने की। ऐसे में हम भूल जाते है कि प्रक्रिया स्वयं यात्रा का एक हिस्सा है और वह अंतिम बिन्दु (गंतव्य) से अधिक प्रासंगिक एवं महत्वपूर्ण है। यात्रा 'अब' (वर्तमान) है, तो गंतव्य भविष्य है। हमें हमेशा वजन घटाने, मंजिल तक शीघ्रातिशीघ्र पहुँचने की जल्दी रहती है। हम वजन जल्दी घटाने के तरीके ढूँढ़ने की कोशिश में शरीर की कार्यप्रणाली को पूरी तरह से भुला देते हैं।

हम यह नहीं समझ पाते हैं कि हम मनुष्य हैं न कि तैयार उत्पाद पूर्ण या स्थायी। यदि हम सावधानीपूर्वक जीवन जीते हैं, तो हमारे शरीर हमेशा बदलते रहते हैं, विकसित होते रहते हैं और प्रगति करते रहते हैं।

फिटनेस एक यात्रा है, गंतव्य नहीं। वनज घटाने की तलाश में और बेहतर दिखने के प्रयास में हम असली लक्ष्य से भटक जाते हैं।

यदि लोग अपने शारीरिक गठन पर जितना ध्यान देते हैं, उसका आधा भी अपने

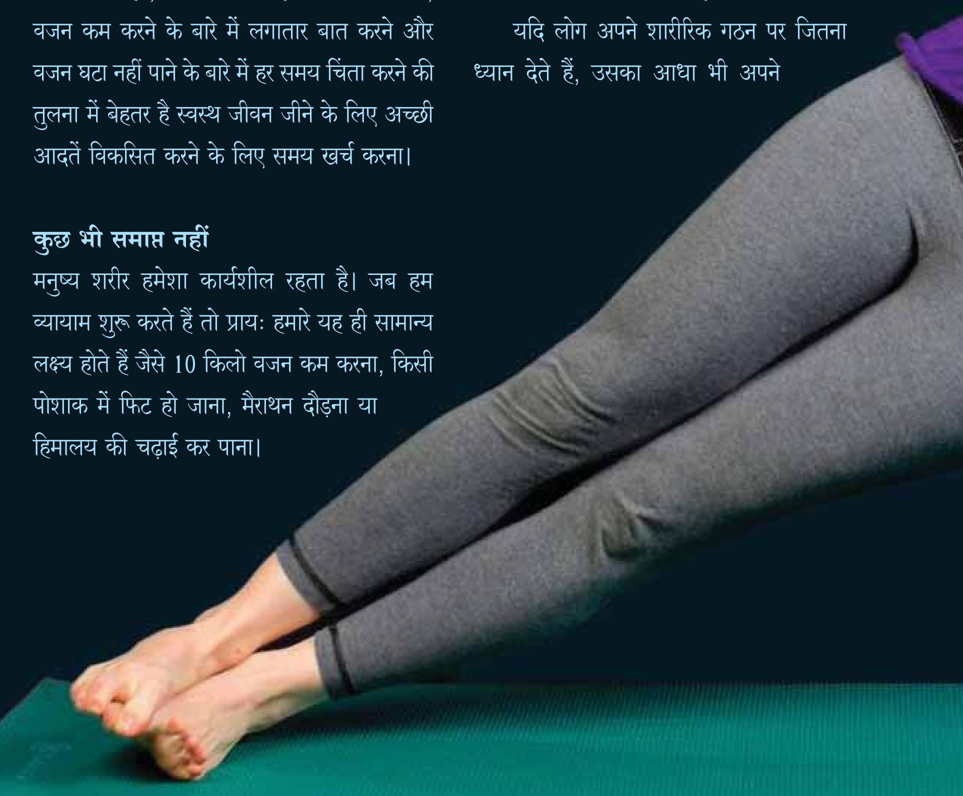

स्वास्थ्य और फिटनेस पर दें तो उनहें इस उद्देश्य में अधिक सफलता मिलेगी। जो लोग बाधाओं और टेढ़े-मेढ़े रास्तों के बावजूद मार्ग पर चलना जारी रखते है। उसमें यही अन्तर होता है कि उन्हें भरोसा होता है कि वे ऐसा कर सकते है।

कुछ भी स्थायी नहीं

जीवन बदलता रहता है। हम भी बदलते हैं। कुछ भी स्थायी नहीं है।

हम बूढ़े होते हैं। यह सामान्य शारीरिक प्रक्रिया है। फिर भी जवानी ही पूजी जाती है। यह जानने के बाद भी कि जवानी अस्थायी है, हम जवानी को अपने दाँतों और नाखूनों से पकड़े रखना चाहते हैं। चेहरे की झुर्रिया कम करने के लिए प्रयुक्त ट्रीटमेंट, बोटॉक्स, लेजर, फेसलिफ्ट और पेट कम करने के लिए आने वाले ग्राहकों की संख्या में हो रही असाधारण बढ़ोतरी इस बात का प्रमाण है कि हम युवा एवं सुन्दर बने रहने की बेपनाह याह रखते हैं।

गरिमापूर्ण तरीके से बुढ़ापे की ओर अग्रसर होना एक कला है। आयु बढ़ने के साथ बौद्धिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से विकास करना ज्यादा उचित है। समय के प्रवाह के साथ बहना चाहिए न कि उसके विपरीत। बुढ़ापे में शक्ति, दमखम बनाए रखने और लचीलेपन में सुधार के प्रयास करने चाहिए।

कुछ भी स्थायी नहीं होता है। यहाँ तक कि अच्छा स्वास्थ्य, सुदृढ़ शरीर, आश्चर्यजनक बुद्धि या श्रेष्ठ शारीरिक क्षमता भी स्थायी नहीं है यदि आप उसे बनाए रखने के लिए मेहनत नहीं करते हैं।

श्रेष्ठ एथलीट्स भी यह जानते है कि उम्र बढ़ने के साथ उनके कौशल में गिरावट आती है। जैसे-जैसे हम बूढ़े होते हैं हमारे शरीर में भी कई तरह के बदलाव दिखाई देते हैं और हमें आवश्यकता इस बात की है कि हम उने तरीकों को समझें जिनसे हम इस आयु में भी अपने आपको बेहतर बना सकें। हो सकता है कि जवानी के बाद के वर्षों में हम मैराथन दौड़ में हिस्सा लेने के लायक न रहें (हालांकि कुछ ऐसे में भी हिस्सा लेते हैं) किन्तु हम उस योग्य तो अपने शरीर को मजबूत बनाये रख सकें और स्वयं को रोगों से मुक्त रख सकें। हमें चाहिए कि हम जीवन शैली की खराब आदतों के कारण खुद को मोटापे या खराब सेहत का शिकार नहीं होने दें।

- शरीर को उसकी विशिष्टता एवं वह क्या-क्या करने में समर्थ है के लिए महत्व दें।
- शरीर की आवाज़ सुनकर उसे वह दें जो उसे चाहिए।
- उसे इस बात के लिए दण्ड देना बन्द करें कि वह वैसा नहीं दिखता जैसा आप चाहते हैं।
- व्यायाम को मौज मस्ती और अपने शरीर की क्षमताओं का आनन्द उठाने के लिए प्रयोग करें।
- थकाकर चूर कर देने वाले टेऱनिंग सत्र के परिणाम देखकर रोमांचित महसूस करें।

तब फिटनेस जीवन का एक रास्ता बन जाता है। वह सिर्फ लक्ष्य प्राप्ति का साधन नहीं रह जाता और यह चीज अपने आप में एक उपहार है।

जो रवैया हमारे मन के भीतर शांति का आभास पैदा कर सकता है वह यह है कि हमें इस बात से समझौता कर लेना चाहिए कि अपूर्णता को स्वीकार करने, मन एवं जीवन में सुधार लाने के लिए प्रेरित एवं उत्साहित रहना है।

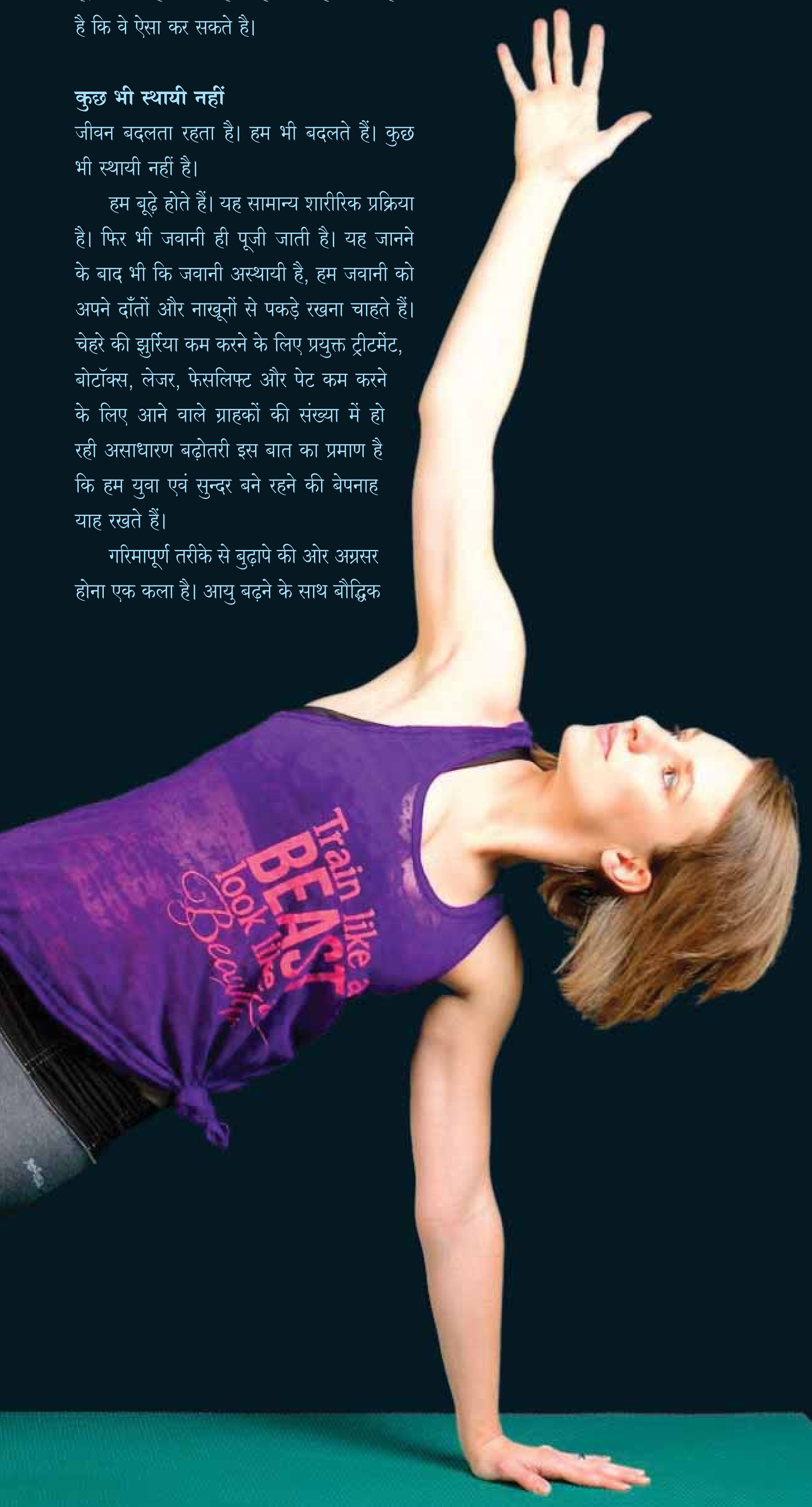

लेखिका स्त्री रोग विशेषज्ञ और फिटनेस एवं जीवनशैली सलाहकार भी है। इन्होंने दो किताबें भी प्रकाशित की है, 'गैट साइज वाइज' एवं 'गेन टू लूज।'
www.drsheela.nambiar.com

अंग दान के संबंध में जागरूकता बढ़ाना

टीम रोटरी न्यूज़

हाल ही में, रोटरी क्लब श्री गंगानगर के अध्यक्ष डॉ संदीप चौहान के नेतृत्व में, श्री गंगानगर, राजस्थान मंडल 3090, के रोटरी क्लबों द्वारा एक विशाल, अंग दान जागरूकता रैली का आयोजन किया गया था। इस कार्यक्रम में स्कूल के छात्रों और अन्य नागरिकों ने भाग लिया, जिसमें अनेक क्लबों के अध्यक्ष, सचिव और डीजी बाग सिंह पन्नु भी शामिल हुए थे।

लगभग 1,500 उत्साही स्कूल और कॉलेज के छात्रों और प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों के शिक्षकों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया, जिसमें से कुछ लोगों ने अंग दान के संबंध में जागरूकता बढाने के लिए आकर्षक नारे वाले विभिन्न अंगों के रूप में ड्रेस पहन कर भाग लिया था।

यह रंगीन रैली जो लगभग 4 किमी लंबी थी, शहर में एक प्रतिष्ठित कार्यक्रम बन गई। डॉ संदीप चौहान ने अंग दान के अवधारणाओं और प्रक्रियाओं को समझाया और कहा कि एक मस्तिष्क-मृत मरीज नौ व्यक्तियों का जीवन बचा सकता है और 50 जीवित व्यक्तियों की सहायता कर सकता है। अंग दान करने उनके भावपूर्ण अपील ने अनेक युवाओं, मध्यम आयु वर्ग के और वरिष्ठ नागरिकों को स्वेच्छा से अपने अंगों को दान करने की प्रतिज्ञा करने के लिए प्रेरित किया।

डीजी बाग सिंह पन्नू, अंग दान पर छात्रों के बीच जागरूकता पैदा करते हैं।

डीजी पन्नु ने घोषणा कि वह और उनका परिवार उस दिन अंग दान करने की प्रतिज्ञा करेगा। इस महान कार्यक्रम के लिए रोटरी क्लब श्री गंगानगर की प्रशंसा करते हुए और डॉ चौहान को बधाई देते हुए उन्होंने कहा कि यह रैली शहर में किए गए आयोजनों में सर्वश्रेष्ठ थी।■

सम्मेलन

विशिष्ट पडो़सी

रंडी डुज़िन

यदि आप 23 से 27 जून तक टोरंटो में 2018 रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन में भाग लेने की योजना बना रहे हैं, तो आप शहर के रंगीन पडोस का अनुभव करना चाहेंगे। एक अतिव्यस्त कार्यक्रम के लिए, यहाँ कुछ प्रमुख विकल्पों का उल्लेख किया गया हैं।

मेट्रो टोरंटो कन्वेंशन सेंटर (एमटीसीसी) के उत्तर-पश्चिम में एक मील से भी कम दूरी पर, आपको क्वीन वेस्ट, एक जीवंत इलाका देखने को मिलेगा, जिसमें दर्जनों बुटीक और रेस्तरां हैं। क्रॉस बाथर्स्ट स्ट्रीट को पार कर वेस्ट क्वीन वेस्ट में पहुँचें, और दर्जनों कला दीर्घाओं और लाइव संगीत के साथ बार को देखने का लुफ्त उठाएं।

समीप के चाइना टाउन में, सड़क़ों पर आपको सस्ती घरेलू सामग्रियों, फलों और सब्जियों की

खरीदारी करते हुए लोगों की भीड़ मिल जाएगी। यहाँ रेस्टोरेंट एक बडा आकर्षण है, खासकर अगर आप डिम सम और पकौडी पसंद करते हैं।

चाइनाटाउन से उत्तर-पश्चिम दिशा में कुछ ही मिनटों की यात्रा करने पर आप सदियों पुरानी केंसिंग्टन मार्केट में पहुँच जाएंगे, जिसमें पुराने कपडों की दुकानों, ग्रॉसर, भोजनालय और अन्य दुकानें हैं।

सम्मेलन स्थल से थोड़ी दूर स्थित डिस्टिलरी जिला तक आप एक कैब की सवारी कर पहुँच सकते है, जहाँ 19 वीं सदी के मद्यशाला के विरासत भवनों में अनेक कैफे, रेस्तरां और कई दुकानें हैं। यह क्षेत्र केवल पैदल यात्रियों के लिए है, जो उत्तरी अमेरिका में विक्टोरियन-युग की औद्योगिक वास्तुकला का सबसे विशाल और सर्वश्रेष्ठ संग्रह के लिए प्रसिद्ध है।

© The Rotarian

टोरंटो में आयोजित होने वाले रोटरी सम्मेलन के लिए riconvention.org पर पंजीकरण करें।

Rotary

Arch Klumph Society 2016–17 inductees from India

Narayan and Sunanda Nayak
RC Bhubaneswar Metro

Navdeep and Amita Chawla
RC Faridabad Central

Parag and Punam Sheth
RC Bharuch Narmada Nagari

Ravi and Rajyalakshmi Vadlamani
RC Guntur and RC Guntur Aadarsh

Subhash and Babita Jain
RC Ghaziabad Central

Suresh and (Late) Usha Jain
RC Delhi South East

Vikram Kadiri and Vijayanthi Reddy
RC Delhi Hyderabad Deccan

Rotary

Rotary at a glance

Rotarians : 12,23,461

Clubs : 35,749

Districts : 539

Rotaractors : 2,44,352*

Clubs : 10,624*

Interactors : 5,14,602*

Clubs : 22,374*

RCC members: 2,27,861*

RCC : 9,907*

* As on October 1, 2017

Membership Summary

As on October 1, 2017

RI Zone	RI District	Rotary Clubs	No of Rotarians	Women Rotarians	Rotaract	Interact	RCC
5	2981	112	4,602	214	59	225	173
5	2982	66	2,990	93	59	112	43
5	3000	125	5,291	424	289	643	195
4	3011	73	3,186	604	51	103	24
4	3012	87	3,597	732	66	125	55
5	3020	102	4,460	214	112	462	351
4	3030	94	5,058	615	73	305	164
4	3040	97	2,177	235	52	112	135
4	3053	77	2,959	468	16	37	93
4	3054	128	6,041	923	90	296	471
4	3060	97	3,988	410	60	119	129
4	3070	107	2,999	247	67	153	54
4	3080	78	3,363	222	69	214	106
4	3090	78	2,053	80	32	37	122
4	3100*	74	1,682	77	10	76	146
6	3110	115	3,923	279	51	50	104
6	3120	75	3,263	344	36	54	50
4	3131	134	5,415	1,051	97	271	78
4	3132	110	4,472	492	62	193	138
4	3141	91	5,386	1,127	114	256	86
4	3142	77	2,839	398	62	190	69
5	3150	100	3,668	348	92	229	108
5	3160	69	2,386	111	21	45	81
5	3170	128	5,468	373	57	304	160
5	3181	72	3,093	214	30	168	104
5	3182	79	3,219	240	27	275	90
5	3190	132	5,218	599	137	345	50
5	3201	139	5,211	301	94	125	46
5	3202	132	4,917	246	97	426	44
5	3211	137	4,396	254	12	87	123
5	3212	95	3,796	204	108	267	126
5	3231	68	2,820	94	55	189	235
5	3232	98	3,911	522	131	300	82
6	3240	88	3,038	345	59	146	151
6	3250	97	3,822	702	41	205	176
6	3261	70	2,505	221	16	104	42
6	3262	97	3,329	387	42	68	75
6	3291	150	3,933	763	69	130	585
India Total		**3,748**	**1,44,474**	**15,173**	**2,615**	**7,446**	**5,064**
5	3220	73	1,942	240	80	203	77
6	3271	80	1,525	245	46	16	13
6	3272	155	2,900	448	39	37	36
6	3281	203	5,741	774	227	84	186
6	3282	137	3,851	302	133	38	40
6	3292	116	4,463	671	120	106	108
S Asia Total		**4,512**	**1,64,896**	**17,853**	**3,260**	**7,930**	**5,524**

**Non-districted.*

Source: RI South Asia Office

रोटरी क्लब नमक्कल पोल्ट्री टाउन - मंडल 2982

शहर में नेत्र दान के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए आयोजित एक रैली में कॉलेज के 750 से अधिक छात्र सम्मिलित हुए। इनर व्हील और लायंस क्लब के सदस्य भी शामिल हुए।

रोटरी क्लब थुरैयुर पेरूमलमलाई - मंडल 3000

नेहरु मेमोरियल कॉलेज में त्रिची के फ्रंटलाइन हॉस्पिटल के साहचर्य में एक चिकित्सीय शिविर का आयोजन किया गया। विभिन्न बीमारियों के लिए 200 से अधिक लोगों की जांच एवं उपचार किया गया। क्लब ने एक स्वच्छता एवं डेंगू जागरूकता रैली भी निकाली जिसमें 400 एनसीसी विद्यार्थी सम्मिलित हुए।

रोटरी क्लब ग्रेटर फैज़ाबाद - मंडल 3120

क्लब ने डीजी रणजीत सिंह और क्लब अध्यक्ष मनीष अग्रवाल की उपथिति में सलारपुर स्थित उसके गोद लिए गए सरकारी स्कूल को वाटर फ़िल्टर दान किये ताकि शिक्षकों एवं छात्रों को स्वच्छ पीने योग्य पानी प्रदान किया जा सके।

रोटरी क्लब नासिक स्मार्ट सिटी - मंडल 3030

त्रयम्बकेश्वर के ज़िला परिषद् प्राथमिक स्कूल में 100 आदिवासी छात्रों को स्कूल की यूनिफार्म, जूते एवं मोज़े बांटें गए। क्लब के एक सदस्य जयंत जोगलेकर ने शहर के निकट एक आदिवासी क्षेत्र में स्थित कन्या छात्रालय की कन्या छात्रों के लिए 150 ट्रैकसूटों को प्रायोजित किया।

विधियाँ

रोटरी क्लब पूना डाउनटाउन - मंडल 3131

14 ग्रामीण स्कूलों में शौचालय खण्ड, पीने योग्य पानी और हाथों की धुलाई की सुविधाओं को प्रदान करने की क्लब की वैश्विक अनुदान परियोजना को टीआरएफ के अनुसंधान दल के सदस्यों, अमांडा रीड और जेसिका बटलर, द्वारा चुना गया ताकि समस्त भारत के पूर्व गवर्नरों एवं क्लब अध्यक्षों द्वारा निर्मित टीआरएफ के तकनीकी सलाहकारों के कैडर को प्रशिक्षित किया जा सके।

जालना सेंट्रल का रोटरेक्ट क्लब - मंडल 3132

रोटरेक्टरों ने स्कूली बच्चों के लिए एक शतरंज प्रतियोगिता आयोजित की। इसमें 500 से ज्यादा बच्चों ने भाग लिया। जीतने वालों को इनाम दिए गए और सभी प्रतिभागियों को भागीदारी प्रमाणपत्र वितरित किये गए।

रोटरी क्लब निज़ामाबाद - मंडल 3150

सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों को उनकी पढ़ाई में प्रोत्साहित करने के लिए उन्हें किताबें बांटी गई। रोटेरियनों ने विद्यार्थियों को उनकी शिक्षा ज़ारी रखने के महत्व पर संबोधित किया जो उन्हें एक अच्छे भविष्य के लिए एक मजबूत नीव प्रदान करेगी।

रोटरी क्लब भालकी फोर्ट - मंडल 3160

सद्गुरू विद्यालय के स्कूली बच्चों के साथ एक साक्षरता रैली निकाली गयी जो सशक्तिकरण के एक उपकरण के रूप में शिक्षा का संदेश प्रसारित करने के लिए शहर के मुख्य मार्गों से गुज़रे।

रोटरी क्लब बॉम्बे एयरपोर्ट - मंडल 3141

पाँच लाख की लागत वाले चार बेबी वार्मर सायन स्थित एल. टी. म्युनिसिपल जनरल हॉस्पिटल और मेडिकल कॉलेज की नवजात शिशु संबंधी इकाई को दान किये गए। डी जी प्रफुल शर्मा ने उपकरण हॉस्पिटल को समर्पित किये।

रोटरी क्लब हुबली - मंडल 3170

दो वर्षों तक रु. 40,000 प्रति माह की लागत से क्लब दो बैटरी-संचालित फेरी कार्ट का संचालन एवं प्रबंधन करेगा। रेलवे स्टेशन पर यह अनूठी सेवा बुजुर्ग एवं अपंग यात्रियों की सहायता करेगी। सेंट्रल रेलवेज़ के साथ सेवा का उत्तरदायित्व लेने के लिए एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया गया था।

रोटरी क्लब नित्ते - मंडल 3182

रु. 1 लाख की 4,000 से अधिक किताबों को शहर एवं उडुपी ज़िले के करकला तालुक के आसपास के गाँवों के आठ सरकारी स्कूलों के 700 स्कूली बच्चों में बांटा गया।

रोटरी क्लब पर्ल सिटी टूटीकूरिन - मंडल 3212

वी. ओ चिंदम्बरम कॉलेज से कैंसर पर जागरूकता फैलाने के लिए एक मैराथन दौड़ को हरी झंडी दिखाई गई। 4.5 किमी लंबी दौड़ में 500 से अधिक स्कूल/कॉलेज के विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया।

रोटरी क्लब गुड्डीयत्तम - मंडल 3231

गुदीयत्तम में एक रक्तक्षीणता की पहचान करने का शिविर आयोजित किया गया जिसने मोहल्ले की 165 महिलाओं को फायदा पहुंचाया। बीमारी को ठीक करने के लिए जरूरतमंदों को विटामिन की गोलियां एवं आयरन(लौह) पूरक प्रदान किये गए।

रोटरी क्लब तिरुपुर निट सिटी - मंडल 3202

तिरुपुर स्थित साईं कृपा स्पेशल स्कूल में क्लब ने न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी के सहयोग से शारीरिक रूप से अपंग लोगों को चिकित्सीय बीमा रक्षा प्रदान किये।

विधियाँ

रोई मंडल - 3232

विश्व साक्षरता दिवस को चिन्हित करने के लिए, मंडल ने, उसकी परियोजना INDICA- के माध्यम से, 27 शिक्षकों को सम्मानित किया जो विशेष बच्चों को शिक्षा प्रदान करते है। परियोजना प्रमुख मिथली मुरलीधरन और मुख्य अतिथि डीजीई बाबू पेरम ने शिक्षकों की निःशक्त बच्चों के जीवन में एक सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए उनका समय देने के लिए प्रशंसा की।

रोटरी क्लब सिलिगुड़ी सेंट्रल - मंडल 3240

शहर के विभिन्न स्कूलों में एक WinS कार्यक्रम आयोजित किया गया। रोटेरियनों ने बच्चों को सर्वश्रेष्ठ स्वच्छता आदतों पर शिक्षित किया और उन्हें तरल हाथों की धुलाई के सैशे एवं हाथों की धुलाई प्रक्रिया को समझाने वाली विवरणिका बांटी।

रोटरी क्लब पाटलीपुत्र - मंडल 3250

दीघा स्थित मूक-बधिर बच्चों के स्कूल, उमंग बाल विकास, को कुर्सियां, मेज, प्रोजेक्टर और ई-शिक्षण के लिए एक स्क्रीन प्रदान की गयी। यह परियोजना केंद्र के 150 विद्यार्थियों को लाभान्वित करेगी।

रोटरी क्लब जबलपुर - मंडल 3261

शिक्षक दिवस को चिन्हित करने के लिए क्लब द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में, सरकारी स्कूलों के सात शिक्षकों को उनके पेशे में उत्कृष्ट सेवा के लिए राष्ट्र निर्माण पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सभी रोटेरियन शिक्षकों का भी इस अवसर पर अभिनन्दन किया गया।

रोटरी क्लब पुरुलिया - मंडल 3291

क्लब ने पुरुलिया सेंट्रल के रोटरेक्ट क्लब के साथ शहर के सैनिक स्कूल में एक अंतर-स्कूली फुटबॉल प्रतियोगिता का संचालन किया। 16 स्कूलों ने हिस्सा लिया।

वी मुत्तुकुमारण द्वारा संकलित
एल गुनाशेकरण द्वारा रुपांकन

1,000 स्कूलों के लिए टाटा टेक-टीआरएफ की साझेदारी

टीम रोटरी न्यूज़

टाटा टेक्नोलॉजीज, एक वैश्विक आईटी समूह, ने निर्धन बच्चों को मदद करने के उद्देश्य से रोटरी फाउंडेशन के साथ एक एमओयू पर हस्ताक्षर किया हैं। इसने बच्चों को प्रोत्साहित करने और तकनीक की सहायता से उन्हें सीखने में मदद करने की आवश्यकता की पहचान की है। 'स्कूल और शिक्षण उत्कृष्टता कार्यक्रम' या STEP, के नाम से लोकप्रिय इस परियोजना का निर्माण वंचित छात्रों को सहयोग कराने के उद्देश्य से किया गया है ताकि शिक्षण सहायता के रूप में तकनीक का उपयोग कर छात्र प्रतिधारण में सुधार किया जा सके और उनके समग्र शैक्षणिक प्रदर्शन को बेहतर बनाया जा सके।

बाएँ से : टाटा टेक्नोलॉजीज़ के ग्लोबल सीईओ वॉरन हैरिस, अध्यक्ष एस रामदोरइ, पीडीजी रावी धोत्रे और डीआरएफसी दीपक शिखरपुर।

टाटा टेक्नोलॉजीज़ का मुख्य उद्देश्य अपनी STEP पहल का विस्तार राष्ट्रीय स्तर पर करना है ताकि सभी के लिए बुनियादी शिक्षा और साक्षरता के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। टीआरएफ. के साथ साझेदारी में इसका उद्देश्य संपूर्ण भारत में 1,000 से अधिक स्कूलों तक इस कार्यक्रम तक पहुंचना है। टाटा टेक्नोलॉजीज के हिंजवडी मुख्यालय में इसके अध्यक्ष एस रामदोरई, वैश्विक सीईओ वॉरेन हैरिस, पीडीजी रावी धोत्रे और मंडल फाउंडेशन के अध्यक्ष दीपक शिखरपुर ने सहयोग के एक अनुबंध पर हस्ताक्षर किए।■

आदिवासी छात्रों के लिए एक विश्वविद्यालय

जयश्री

अच्युता सामंथा, छात्रों के साथ।

कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज KISS, भुवनेश्वर को हाल ही में एचआरडी मंत्रालय ने विश्वविद्यालय का दर्जा दिया गया, जिसके बाद यह संसार में अपनी तरह का पहला विशेष आदिवासी विश्वविद्यालय बन गया है। संयुक्त राष्ट्र के आर्थिक और सामाजिक परिषद द्वारा इसे विशेष सलाहकार का दर्जा भी प्रदान किया गया है।

इस संस्था की स्थापना वर्ष 1993 में प्रोफेसर अच्युता सामंथा ने पड़ोस के आदिवासी क्षेत्रों के सिर्फ 125 बच्चों के साथ की थी, जहाँ समय बीतने के साथ वर्तमान समय में 27,000 छात्र अध्ययनरत है। यह संस्था सभी आदिवासी छात्रों को किन्डरगॉटन से स्नातक स्तर की पढाई के लिए समग्र आवासीय शिक्षा उपलब्ध कराने के साथ-साथ व्यावसायिक कौशल प्रशिक्षण और स्वास्थ्य सुविधाएं नि: शुल्क उपलब्ध कराती हैं। अगले दशक में ओडिशा और अन्य राज्यों के 30 जिलों में 200,000 निर्धन आदिवासी बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के लिए इसकी अनेक शाखाएं स्थापित करने की योजना हैं।

रोटरी समाचार ने अपने अक्टूबर 2014 के अंक में संस्थान के बारे में लिखा था।

(https://rotarynewsonline.org/their-smiles-tell-the-story/).■

संक्षेप में

कृपया कोई भी गोरा नहीं

एक सिलिकॉन वैली के सीईओ, ईलीन कैरी, जो एक सॉफ्टवेयर कंपनी संचालित करती है और एक गोरी महिला है, ने कहा कि उन्होंने अपने बालों को रंगा, तथा ढीले कपडे.पहने और कांटेक्ट लेंस के स्थान पर चश्मा लगाना शुरू किया ''ताकि वे 'वयोवृद्ध दिखाई दे सके और कार्यस्थल पर उन्हें गंभीरता से लिया जाएं।'' उन्होंने बीबीसी समाचार से कहा कि उन्होंने अपने बालों को ''एक वेंचर कैपिटल में एक महिला द्वारा दी गई सलाह'' पर रंगना शुरूकिया, जिसने कहा कि श्यामल रंग के महिला सीईओ को निवेशकों द्वारा अधिक गंभीरता से लिया जाता है। कई महिलाओं ने ट्विटर पर कहा कि इस प्रकार का दबाव ''नया नहीं है''।

हरित बिलबोर्ड

वायु प्रदूषण के परिवेश के स्तर में वृद्धि होने के साथ मणिपल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के एक वैमानिकी इंजीनियरिंग छात्र ध्रुवी सूरी ने अपने बैच के साथियों, रहिल नायक और प्रियंशी सोमानी के साथ मिलकर वायु-शोधक युक्त एक बिलबोर्ड की कल्पना की है। हरित बोर्ड किसी भी अन्य बिलबोर्ड के समान दिखाई देता है लेकिन यह एक आंतरिक शुद्धि प्रणाली से लैस है जो एक विशाल पंखे के माध्यम से हवा को अंदर की ओर खींचती है, उसमें से कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करती है और स्वच्छ हवा को मुक्त करती हैं। फंसे हुए कार्बन डाईऑक्साइड को दाबानुकूलित किया जाता है और उसे पेलेट्स में परिवर्तित कर दिया जाता है, जिसका उपयोग अंततः इस गैस का इस्तेमाल करने वाले ग्रीनहाउस में किया जाता हैं। एक 15x21 फीट के बिलबोर्ड की लागत रु. 10 लाख है और वायु शोधक को किसी भी आकार के बिलबोर्ड में फिट करने के लिए अनुकूलित किया जा सकता है।

एक अत्यंत मजेदार प्रतिक्रिया

जब विशाल डेयरी कंपनी अमूल ने भारतीय रेलवे को एक व्यापार प्रस्ताव के साथ ट्वीट किया जिसके अनुसार, ''@RailMinIndia अमूल, भारत भर में अमुल बटर के परिवहन के लिए प्रशीतित पार्सल वैन का उपयोग करने में रुचि रखती है। कृपया सलाह देने का कष्ट करें'', इसके प्रतिक्रिया में भारतीय रेलवे ने ट्वीट के साथ उत्तर दिया, ''आईआर को संपूर्ण भारत के स्वाद को प्रत्येज भारतीय तक पहुँचा कर अत्यंत खुशी होगी।'' डेयरी ब्रांड की टैगलाइन का उपयोग करते हुए दिए गए उत्तर को ट्वीप्स द्वारा बहुत ही सराहा गया। कुछ वर्ष पूर्व जल्दी ख़राब हो जाने वाले सामग्रियों के परिवहन के लिए रेलवे ने प्रशीतित वैन शुरू किया था। प्रस्ताव को आगे बढ़ाने के लिए अहमदाबाद डिवीजन के वरिष्ठ डिवीजनल मैनेजर अमुल के अधिकारियों से मुलाकात करेंगे।

अंतिम पत्र

टाइटैनिक पर सवार अलेक्जेंडर ऑस्कर हॉलवर्सन द्वारा लिखित पत्र को इंग्लैंड में एक नीलामी के दौरान 166,000 अमेरिकी डॉलर में बेचा गया। हॉलवर्सन, जो अभिशप्त जहाज पर सवार थे, ने अपनी माँ को टाइटैनिक छपे हुए अलंकृत पेपर पर पत्र लिखा था, जिसमें उन्होंने जहाज, भोजन और संगीत के प्रभावों का वर्णन करते हुए कुछ प्रसिद्ध व्यक्तित्वों के सानिध्य का उल्लेख किया था। उन्होंने एक अमेरिकी फाइनेंसर जॉन जैकब एस्टर का भी उल्लेख किया था, जो उस समय दुनिया के सबसे अमीर लोगों में से एक थे। जहाज के हिमशैल से दुर्भाग्यपूर्ण टक्कर से एक दिन पहले दिनांक 13 अप्रैल 1912 को लिखे गए एक पत्र में उन्होंने लिखा ''अगर सब ठीक रहा तो हम बुधवार की सुबह में न्यू यॉर्क पहुंचेंगे।''

सिंगापुर की सड़कों पर कोई नया वाहन नहीं

सीमित भूमि क्षेत्र के कारण सिंगापुर ने फरवरी 2018 से अपनी सड़क़ों पर नई कारों और मोटरसाइकिलों को परिचालन बंद करने का निर्णय लिया है। यहाँ की सड़क़ों पर 600,000 से अधिक परिचालित होने वाले कारों के साथ, सरकार धीरे-धीरे वाहन की वृद्धि दर 0.25 प्रतिशत से घटाकर शून्य प्रतिशत कर रही है। इस नीति की समीक्षा 2020 में की जाएगी। कुल भूमि क्षेत्र के 12 प्रतिशत पर सड़क़ों के निर्माण के साथ, सिंगापुर अपने वाहनों की संख्या को सख्ती से नियंत्रित करता है, दस वर्षों तक कार का मालिक बने रहने के लिए कार मालिकों द्वारा परमिट, जिसे 'एंटाइटेलमेंट का प्रमाण पत्र' कहते है, खरीदना अनिवार्य बनाता है। हालांकि, शहर-राज्य अपनी सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए भारी निवेश भी कर रहा है।

जयश्री द्वारा संकलित, एस कृष्णप्रथीश द्वारा रूपरेखा

LBW

कोलाहल में बड़बड़ाहट

टीसीए श्रीनिवासा राघवन

जब कोई राजनेता अर्थशास्त्र की बात करता है तो अर्थशास्त्री क्या करते हैं? वे मुँह दबाकर हँसते हैं और फ़िर संरक्षण देने के लहजे में मूर्खों और अज्ञानियों के बारे में कहानियाँ बताकर प्रतिक्रिया देते हैं।

और जब कोई अर्थशास्त्री कोई राजनीतिक बात करने के लिए इकॉनोमेट्रिक्स का इस्तेमाल करता है तब राजनेता क्या करते हैं? वे यहाँ वहाँ कूदने लगते हैं इस बात से बचने के लिए कि एनडीटीवी उनके पीछे न पड़ जाए क्योंकि कोई राजनेता यह सुनना नहीं चाहता कि वह गरीबों की उम्मीदों पर खरा उतरने में नाकाम रहा है।

जब आर्थिक मंत्रालयों के नौकरशाहों को राजनेताओं और अर्थाशास्त्रियों दोनों से निपटना पड़ता है तब वे क्या करते हैं? वे दोनों को नज़रअंदाज़ करते हैं क्योंकि उन दोनों में से कोई भी नीतियों के प्रबंधन में उनकी मदद नहीं करता। अकेले में वे आपको बताते हैं कि दोनों ही उपद्रवी हैं।

जब सोशियल मीडिया इन तीन लोगों की प्रतिक्रियाओं को देखता है जिन्हें वह दुनिया की सभी मुश्किलों का मुख्य कारण मानता है तो वह क्या करता है? वह गेंद के साथ एक पिल्ले की तरह बर्ताव करता है, कुछ घंटों के लिये एक विषय पर जुनून की हद तक प्रतिक्रिया करता है और फ़िर किसी और बात के पीछे खिसक लेता है।

क्योंकि यहाँ का मुख्य सिद्धांत है कि यहाँ सिर्फ़ एक तथ्य है और वह मेरा तथ्य है और उसके अलावा कोई तथ्य नहीं है।

अंत में जब पत्रकारों और स्तंभकारों को इन चारों का सामना करना पड़ता है तो वे क्या करते हैं? वे अपने मूड के मुताबिक कभी अर्थाशास्त्रियों तो कभी राजनेताओं और कभी नौकरशाहों की तरह लिखते हैं। और कुछ, मेरे जैसे, ट्विंकल खन्ना की तरह लिखते हैं। लेकिन मेरे मुकाबले वे ज़्यादा तीखा और मज़ेदार लिखती हैं।

अर्थशास्त्र में नैतिक बहस का स्वभाव यही है - भारत में तो निश्चित तौर पर, और हिम्मत करके कह सकता हूँ कि संभवतः दूसरे देशों में भी। पक्ष और विपक्ष की निरर्थक और बेतुकी बातों की उत्पत्ति से किसी की बुद्धि में कोई लाभ नहीं होता है।

यदि आप कहेंगे कि सूरज पूरब में उगता है तो इस बात की काफी संभावना है कि आपको जवाब मिलेगा लेकिन चाँद भी पूरब में निकलता है, तो?

बहस के तीन नियम

इसीलिए पिछले कुछ वर्षों से, मैंने, आइसैक न्यूटन की तरह अर्थशास्त्र पर सार्वजनिक बहस के लिए तीन कानून लिखे हैं। अब तक कोई भी उन्हें चुनौती नहीं दे पाया है, असत्य साबित करना तो दूर की बात है। इसका मतलब है कि स्थानीय रूप से और अंतरलौकिक रूप से ये वैध हैं।

टीसीए का पहला कानून

यह कहता है कि ''जानकारी (डेटा) के हर अंश के लिये उतनी ही बराबरी की और विपरीत आंशिक जानकारी होती है। इसे यूँ भी कह सकते हैं कि मेरी जानकारी तुम्हारी जानकारी से बेहतर है। इससे हर किसी को अपनी जानकारी या उसकी व्याख्या चलाने की स्वतंत्रता मिल जाती है। हर किसी को चुनौती दी जा सकती है, या दी जाती है, क्योंकि यहाँ का मुख्य सिद्धांत है कि ''यहाँ सिर्फ़ एक तथ्य है और वह मेरा तथ्य है और उसके अलावा कोई तथ्य नहीं है।''

टीसीए का दूसरा कानून

यह कहता है कि हर राय मान्य है तो फ़िर, परिभाषा के अनुसार, हर राय को अमान्य भी होना चहिए। इसे लैटिन भाषा में *''इप्सी दिक्सित''* भी कहा जा सकता है यानी ''क्योंकि मैं ऐसा कह रहा हूँ।'' यह कानून अर्थाशास्त्रियों, राजनेताओं और नौकरशाहों के अहंकार को एक छोटे कैप्स्यूल में देने जैसा है। वे मानते हैं कि कोई राय सिर्फ़ इसलिये मान्य है कि वह उनकी राय है। इसे आप हर रात टीवी चैनलों पर देख सकते हैं।

टीसीए का तीसरा कानून

यह कानून कहता है कि ''सहमत होने का मतलब हार मानना है।'' इसके चलते हर अर्थशास्त्री, राजनेता और नौकरशाह हर वाक्य को या तो 'लेकिन' से शुरू करता है या फिर 'नहीं, लेकिन' से। कभी इसे अपने पड़ोस के दोस्ताना लहजेवाले अर्थशास्त्री, राजनेता या नौकरशाह के साथ आजमा कर देखिये। ''यदि आप कहेंगे कि सूरज पूरब में उगता है तो इस बात की काफी संभावना है कि आपको जवाब मिलेगा लेकिन चाँद भी पूरब में निकलता है, तो?''

तीन सीखें

यदि आप मेरी ऊपर लिखी बातों से सहमत हैं तो आप तीन सीख ले सकते हैं। पहली, अर्थशास्त्र पर बहस में अपना वक्त जाया न करें। दूसरी, हर हफ़्ते अपनी शॉपिंग का खर्च चेक करें। और तीसरी, हर रोज़ बिना नागा (टीवी पर) एक अच्छी फिल्म ज़रूर देखें।

अर्थशास्त्र का यही सार है। बाकी सब मिथ्या है।■

और एक नए फ़लसफ़े ने जन्म लिया

मैं इस अद्भुत कॉफ़ी विक्रेता से मिला, जिसने स्लोवाकिया की राजधानी ब्राटिस्लावा में एक फुटकर दुकान के बाहर अपना ठेला खड़ा किया था। मुंबई से देर रात्रि की फ्लाइट लेकर, और भारत के पर्यटकों से भरी एक बस में बैठने पर, जो भी वह बेच रहा था वह बहुत सुखद था! बेशक... उसके सन्देश की तरह।

लेख और चित्र : परवेज़ भगत

Regn. No. TN/CCN/359/2015-2017 Licensed to post without prepayment No.TN/PMG(CCR)/WPP-421/2015-2017
Registered with Registrar of News Papers for India TNHIN/2001/5271 Rotary Samachar Published on 1st of every month
Total number of pages in this monthly issue, including cover, 84. Price: Rs 35

PIONEER IN GIRLS' EDUCATION IN INDIA

Over 200
UG / PG / M.Phil. / Ph.D. &
Professional Courses

Student support through
'Earn while you
Learn' scheme

Civil service preparation
alongwith graduation.

MEMBERSHIPS & ACADEMIC COLLABORATIONS

KOREA TAIWAN USA ACCA NEN

Categorized 'A' by MHRD
Accredited by NAAC

THE IIS UNIVERSITY

(deemed to be university u/s 3 of UGC Act 1956)
(Approved by UGC u/s 12B of UGC Act 1956)

Gurukul Marg, SFS, Mansarovar, Jaipur-302 020 (India)
P : +91 141 2397906, 2397907, 2400160
M : +91 70733, 70733 53331
E : admissions@iisuniv.ac.in